विश्व के
विचित्र जीव-जंतु

लेखक
ए एच हाशमी



पुस्तक महल®
खारी बावली, दिल्ली 110006

प्रकाशक

पुस्तक महल दिल्ली-110006

सहयोगी संस्थान

हिन्द पुस्तक भण्डार दिल्ली-110006

बिक्री केन्द्र

1 6686 खारी बावली दिल्ली-110006 -- - - -- -फोन 239314

2 गली केदार नाथ चावड़ी बाजार दिल्ली-110006 ---फोन 265403 268292

3 - - 10 B नेता जी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002-- -- -फोन 268293

प्रशासनिक कार्यालय

F 2 16 अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली-110002

फोन 276539 272783 272784

चित्रांकन

ए. एच. हाशमी

नसीम खाना

मूल्य

नायलॉन ग्री माउन्ट संस्करण 24/

प्रथम संस्करण अगस्त 1985

दूसरा संस्करण अगस्त 1986

फोटो कम्पोजिंग विवेक फोटो कम्पोजिंग सर्विसेस, 16 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002

PRINTED AT SHIVANI ENTERPRISES SHAHDARA, DELHI 32

भूमिका

जहा विश्व म मबस बडा आर भारी जन्त व्हल ह वही बहत ही सूक्ष्म जीव प्राटाजान्स (protozoans) भी हैं जिन्ह बिना मूक्ष्मदशी क नही दखा जा सकता। प्राटाजान्स आर विशाल व्हल क बीच जीव-जन्तुआ की लाखा-लाख विभिन्न जातिया ह जिनम कुछक ता बहुत ही विचित्र ह।

सुन्दरता, नवीनता आर विचित्रता की आर आकष्ट हाना मानव जाति का विशिष्ट गुण ह। मनुष्य की शुरू स ही जानवरा म दिलचस्पी रही हे। वज्ञानिक ढग स जानवरा का अध्ययन करन वाल विशषज्ञा क साथ-साथ सामान्य व्यक्ति भी इनकी विभिन्न प्रकार की गतिविधिया जानन क लिए उत्सक हा जात हैं। बच्चा का विशष रूप स एस जानवर बहुत अच्छ लगत हैं जा किसी हद तक विचित्र ह।

लागा म जानवरा क प्रति दिलचस्पी का अनमान इस बात स लगाया जा सकता ह कि अनुमानित रूप स पूर विश्व मे लगभग 500 चिडियाघर हैं जिन्ह दखन हर वष लगभग 33 कराड लाग आते हैं। विश्व का सबस बडा चिडियाघर आर शरणस्थल नामीबिया (अफ्रीका) का इताशा रिजव (Etosha reserve) ह जिसका क्षेत्रफल 99 525 वग किमी ह। फ्लारिडा की मरीनलैंड समद्री जीवशाला की सतहा पर ता मूग की चट्टाना और ध्वस्त जहाज का वातावरण प्रस्तत कर इन्ह समद्र जसा रूप दन की काशिश की गइ ह। शिकागा इलिनॉय (स रा अ) का जॉन जी शेड एक्वरियम विश्व की सबस बडी जल जीवशाला ह। इसम 350 जातिया क 5500 नमून प्रदर्शित हैं। हम आपका इन प्रसिद्ध चिडियाघरा आर एक्वरियमा की सर ता करा नही सकत लकिन कुछक विचित्र जानवरा क बार मे अवश्य बताएग जिनक लिए य प्रसिद्ध ह।

हम आज जिस यग म रह रहे हैं उस मानव यग कहा जाता ह। मानव न पथ्वी क इतिहास म बिल्कुल दूसरी ही भूमिका अदा की ह। उसन अपनी बुद्धि स पथ्वी पर अपनी जरूरता क अनसार साधन बना लिए। पथ्वी क इतिहास म जा बड बड परिवतन हए ह उनका बहुत कुछ अन्दाजा वज्ञानिका न लगा लिया ह आर उसक प्रमाण प्रस्तुत किए हैं। जीवाश्म द्वारा वज्ञानिका न विलप्त जीव जन्तआ का पता लगाया उनम कुछक बड विचित्र थ जिनका उल्लेख हमन इस पुस्तक म भी किया ह।

लाखा वष पूव विलुप्त हुए जीव-जन्तआ का ता हमन दखा नही। उनक विलुप्त हान क जा भी कारण रह हो लकिन कुछ एस जीव जन्त जो कुछ शताब्दिया पूव तक जीवित थ आज नही हैं। उनका विलुप्त करन का मनुष्य स्वय जिम्मदार ह। विशाल पक्षी माआ लगभग 600 वष पव विलप्त हा गया। 17वी शताब्दी के अत म डाडा नामक पक्षी भी समाप्त हुआ। सन् 1844 म ग्रट आक नामक पक्षी का भी अन्त हा गया। इसका मख्य कारण था—अधाधुध शिकार का शाक। आजकल व्हेल का अस्तित्व भी खतर म ह।

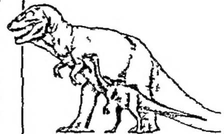
आज जिन विचित्र जानवरा का हम दख रह ह उनम स कछ की सख्या हर वष कम हाती जा रही ह। यदि व एक बार विलुप्त हा गए ता फिर कभी पदा न हा सकग। जीव जन्तु ता मनष्य क बिना रह सकत हैं लकिन मनुष्य इनक बिना नही रह सकता। यदि यही हालत रही ता यह निश्चत ह कि सार विश्व का अस्तित्व ही खतरे म पड जाएगा इसलिए इनक सरक्षण की बहुत आवश्यकता ह। बढती हुइ जनसख्या आर औद्यागीकरण क कारण वना का समाप्त किया जा रहा ह। प्रदूषण इतना बढ चका ह कि जानवरा क जीवन क लिए गभीर सकट पदा हा गया ह। प्रत्यक वष लाखा समुद्री पक्षी आर मछलिया अत्यत दखद मत्य का प्राप्त हात हैं।

हम आशा ह कि विश्व क विचित्र जीव जन्तुआ क सबध म आश्चयजनक रहस्या का पढ कर आप दग रह जाएगे। इस पस्तक म पाठका का मनारजन क साथ साथ अभतपव ज्ञानवधन भी हागा। इस पस्तक का प्रामाणिक बनान क लिए परी काशिश की गइ ह फिर भी पस्तक क स्तर का आर भी ऊचा उठान क लिए पाठका क सुझावा का हार्दिक स्वागत ह।

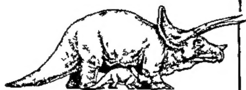
—ए एच हाशमी

अनुक्रम









जन्तु-जगत (Animal kingdom)

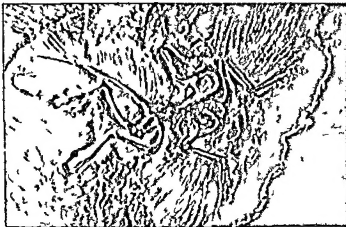
वैसे तो ममस्त जीवधारियो मे मनुष्य ही सबसे बुद्धिमान आर विचित्रतम प्राणी है लकिन जन्तु-जगत मे भी कुछ कम विचित्रता नही ह प्रस्तुत पुस्तक म जिन विचित्र जीव-जन्तुआ का उल्लख किया गया ह, उनके बार मे पढन से पहल जन्तु-जगत की प्रारंभिक जानकारी ता आवश्यक रूप स हानी ही चाहिए इस जानकारी का उद्देश्य आपका उन सार तथ्यो से अवगत कराना ह जिनका इस पुस्तक मे वर्णन किया गया ह

जीव-विज्ञान (biology) विज्ञान की वह शाखा है, जिसके अन्तगत जीवधारिया के बार मे अध्ययन किया जाता हे अध्ययन की सुविधा क लिए इसका दा भागो मे विभक्त किया गया ह—जन्तु-विज्ञान (zoology) आर वनस्पति-विज्ञान (botany) जन्तु-विज्ञान क अन्तगत जन्तुआ का अध्ययन किया जाता ह सभी जन्तु आर मनुष्य भी इमी शाखा क अन्तर्गत आते ह विश्व म दस लाख से भी अधिक जाति के जन्तुआ की खोज हो चुकी ह, जिनम लगभग 95 प्रतिशत बिना हड्डी वाले तथा 5 प्रतिशत हड्डी वाले जन्तु हें वनस्पति-विज्ञान के अतगत विभिन्न प्रकार के पेड-पाधा का अध्ययन किया जाता ह लगभग साढे तीन लाख से अधिक जाति की वनस्पतिया की खाज भी हा चुकी ह

विकास (evolution) सरल जीवा के जटिल रूप म परिवर्तित होने की क्रिया का विकास कहते ह पृथ्वी पर रहने वाले जीव बदलते रह ह करोडो वष पूर्व पृथ्वी के सभी पाध आर जीव-जन्तु समुद्र मे ही रहते थे इसके बाद जमीन पर रहन वाले पेड-पाधा आर जीव-जन्तुओ का विकास हआ

आनुवंशिकी (genetics) प्रत्येक प्राणी क लक्षण उनके बच्चो मे स्थानान्तरित हात रहत ह इसीलिए सतान भी गुणो म अपने माता-पिता के समान हाती ह आनुवंशिकी क अन्तगत पतक गणा क पीढी-दर पीढी स्थानान्तरित हान तथा इमस सबंधित नियमो का अध्ययन किया जाता ह

जीवाश्म (fossils) अधिकाश पाधे आर जीव युगा पहल पृथ्वी पर पाए जाते थ एक समय था जब समुद्र तटा पर एक किस्म के ट्राइलाबाइट (trilobites) पाय जाते थ आर एक जमाना एसा भी था,जब दत्याकार डाइनोसॉरा का राज्य था इनका समाप्त हुए लाखो वर्ष बीत गए इनका ज्ञान हमे इसलिए हुआ क्योकि हम इनके जीवाश्म या फॉसिल मिले ह जीवाश्म प्राचीन पेड-पाधा आर जीव-जन्तुआ की चट्टाना मे मिली निशानिया का कहत ह अधिकतर जीवाश्म पानी क अन्दर बनन वाली चट्टाना म पाए जात ह इन चटटाना म बलआ पत्थर, चूना पत्थर आर शेल (shales) प्रमुख ह





जीवाश्म से ही सबसे पहले प॰ आरकियाप्टेरियस का ज्ञान हुआ

जन्तुओ का वर्गीकरण (classification of animals) जन्तु-जगत का उनकी समानताओ और विषमताओ के आधार पर अलग-अलग समूहो मे बाट दिया गया है जन्तुओ की इस विभाजन प्रणाली का वर्गीकरण कहते हैं वर्गीकरण की आधुनिक प्रणाली के अनुसार प्रत्येक जन्तु का नाम दो शब्दो मे होता है नाम का पहला शब्द उस जन्तु का वश (genus) तथा दूसरा उसकी जाति (species) जाहिर करता है—जैसे रानाटिग्रीना (ranatigrina) राना जन्तु का वश तथा टिग्रीना उसकी जाति को जाहिर करता है

जिन जन्तुआ की रचना स्वभाव व्यवहार आदि आपस मे समान हाते है वे एक ही जाति के कहलाते है अलग-अलग जाति के वे जन्तु, जो कुछ लक्षणो म आपस म समानता रखते है एक ही वश की सतान हो सकते हैं इस प्रकार कई वश जो आपस मे मिलते-जुलते है, गण (order) बनाते है समान लक्षणो वाले कई गण मिलकर वर्ग (class) तथा समान वर्ग आपस म मिलकर समुदाय (phylum) का निर्माण करते हैं

जन्तु-जगत को नाटोकॉर्ड (notochord) के आधार पर दो उपजगतो (sub kingdom) मे बाटा गया है—नॉनकॉर्डटा (nonchordata) जिसमे नोटोकॉर्ड नही पाया जाता तथा कॉर्डेटा (chordata) जिसमे नाटोकॉर्ड पाया जाता है

प्रोटोजोआ (protozoa) इस समुदाय (phylum) के जन्तु दुनिया के प्रथम जन्तु माने जाते हैं ये रचना म सरल तथा एककोशिकीय (unicellular) होते हैं इनके जीवन की सभी क्रियाये एक ही कोशिका द्वारा सम्पन्न हाती हैं इनको केवल सूक्ष्मदर्शी की सहायता से देखा जाता है इनम अमीबा (amoeba) यूग्लीना (euglena) पेरामीशियम (paramecium), आदि आते हैं

पोरीफेरा (porifera) इस समुदाय के जन्तुआ के शरीर म छोट-छोट छिद्र हाते हैं इन जन्तुआ का शरीर बेलनाकार तथा पौधो की तरह शाखादार हाता है ये प्राय समुद्रा तथा झीलो म पत्थरो से चिपके हुए मिलते हैं इनको स्पज (sponges) भी कहते है बहुकोशिकीय हान पर भी इनके शरीर म ऊतको तथा अगो का निर्माण नही होता ल्यूकोसोलीनिया (leucosolenia), स्नान-स्पज आदि इसके उदाहरण हैं

सीलनट्रेटा (coelenterata) इस समुदाय के जन्तु समुद्रो, झीलो तथा तालाबो म पाए जाते हैं इनका आकार लम्बा, गोल या शाखान्वित होता है इनके शरीर के अदर एक बडी गुहा होती है , जिसे सिलेण्ट्रान कहते है यह गुहा मुख के द्वारा शरीर के बाहर खुलती है ये जन्तु मुख के द्वारा ही शिकार करते है तथा इसी द्वार से मल को भी बाहर निकालते हैं इनमे मुख द्वार के चारो ओर लम्बी-लम्बी स्पर्शकाये (tentacles) होती है प्रत्येक स्पर्शक म अनेक गोल तथा कटकयुक्त दंशिकाए (nematocysts) पाई जाती है इन्ही के द्वारा ये अपनी रक्षा तथा छोटे-छोटे जन्तुआ का शिकार भी करते है यह द्विस्तरीय (diploblastic) जन्तु है सीलनट्रेटा समुदाय मे हाइड्रा (hydra), जलीफिश (jellyfish) तथा मूगा (coral) आदि आते है

आर्थ्रोपोडा (arthropoda) जन्तुओ का यह सबसे बडा समुदाय है इन जन्तुओं का शरीर खण्डयुक्त (segmented) तथा टागे जोडदार होती है इन जन्तुओ का शरीर क्यूटिकिल आवरण (बाह्य ककाल) से ढका होता है नेत्र सयुक्त (compound) होते हैं, यानी प्रत्येक आख मे लेसो की सख्या अनिश्चित होती है नर व मादा अलग-अलग होते है इस समुदाय मे कनखजूरा, मक्खी, मकडी, बिच्छू, चीटी आदि जन्तु आते हैं

मोलस्का (mollusca) इस समुदाय के जन्तुओ का शरीर बहुत कोमल होता है सिर और पाद (foot) को छोडकर जन्तु का सारा शरीर मण्टल (mantal) से घिरा रहता है यह मेण्टल अपने चारो ओर कैल्शियमयुक्त कठोर आवरण का निर्माण करता है, जिसे कवच (shell) कहते है यह कोमल शरीर की रक्षा करता है इस समुदाय के जन्तुआ का खून प्राय रगहीन या फिर लाल, नीला या हरा हाता है श्वसन गिलस या वायुकोषा (air sac) द्वारा हाता है अधिकाशत ये एक लिगी होते हैं इस समुदाय म सीपी, घोघा शख ऑक्टोपस आदि आते हैं

इकाइनोडर्मेटा (echinodermata) इस समुदाय के सभी जन्तु समुद्र मे पाए जाते है इनकी त्वचा म कैल्शियम कार्बोनेट के बने काटे हाते हैं

श्वसन गिल्स द्वारा होता है जन्तुओं में चलने के लिए छोटी-छोटी थैलियां (ट्यूब फीट) होती हैं श्वसन एवं उत्सर्जन के लिए कोई विशेष अंग नहीं होते ये जन्तु एकलिंगी होते हैं इस समुदाय में नाग मछली समुद्री अर्चिन्स, ब्रिटिल स्टार आदि आते हैं

कॉर्डेटा (chordata) नानकॉर्डेटा के जन्तुओं के अतिरिक्त जन्तु-जगत के शेष प्राणी समुदाय कॉर्डेटा में रखे गये हैं इस समुदाय के उच्च श्रेणी के जन्तुओं में नोटोकॉर्ड की जगह कशेरुकदण्ड का निर्माण हो जाता है ऐसे जन्तुओं को कशेरुकी (vertebrates) कहते हैं

वर्टीब्रेटा (vertibrata) इन जन्तुओं में नोटोकॉर्ड के स्थान पर कशेरुकदण्ड का निर्माण हो जाता है इन का मस्तिष्क ब्रेन-बॉक्स में सुरक्षित रहता है नलिकाकार (hollow) केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र आजीवन रहता है वर्टीब्रेटा में विकसित कार्डेट्स आते हैं वर्टीब्रेटा को दो महावर्गों (super class) में बांटा गया है—मत्स्य या पिसीज और टेट्रापोडा

मत्स्य या पिसीज (pisces) इस वर्ग में विभिन्न प्रकार की मछलियां आती हैं इनमें तैरने के लिए पंख (fin) होते हैं श्वसन गिल्स (gills) द्वारा होता है मछलियों के रुधिर का तापमान वातावरण के तापमान के साथ घटता-बढ़ता है पिसीज को तीन वर्गों में बांटा गया है—

साइक्लोस्टोमैटा (cyclostomata)
इलस्मोब्रेंकाइ (elasmobranchi)
तथा ऑस्टिक्थीस (osteichthyes)

टेट्रापोडा (tetrapoda) शुरू में इस महावर्ग के अधिकांश जन्तु मूल रूप से जलीय जीवन को छोड़कर जमीन पर रहने लगे थे, इसीलिए इन प्राणियों में सांस लेने के लिए फेफड़ों का निर्माण हुआ इसे चार वर्गों में बांटा गया है—उभयचर या एम्फीबिया सरीसृप या रेप्टीलिया, पक्षी या एवीज और स्तनपायी या मैमेलिया

उभयचर (amphibia) इस वर्ग के प्राणी जल और थल दोनों में रह सकते हैं ये असमतापी (cold blooded) होते हैं अर्थात् इनके शरीर का तापमान वातावरण के तापमान के साथ-साथ घटता-बढ़ता रहता है इनमें श्वसन क्रिया त्वचा गिल तथा फेफड़ों द्वारा होती है इनके अण्डों का निषेचन तथा भ्रूण विकास जल में होता है इस वर्ग में मेढक टोड, सलामण्डा आदि आते हैं

सरीसृप (reptilia) इस वर्ग के सभी जन्तु रेंग कर चलते हैं, इसलिए इन्हें रेंगने वाले या रेप्टाइल्स कहते हैं इनका शरीर स्थलीय जीवन के लिए पूर्णतया अनुकूलित होता है और शरीर का तापमान वातावरण के तापमान के साथ घटता-बढ़ता है नर में मैथुन अंग होते हैं इसलिए गर्भाधान मादा शरीर के अन्दर होता है मादा अण्डे देती है सरीसृप को तीन गणों (order) में बांटा गया है—किलोनिया (chelonia), स्क्वमेटा (squamata) तथा क्रोकोडिलिया (crocodilia)

पक्षी (aves) इस वर्ग में विभिन्न पक्षी आते हैं इनमें उड़ने के लिए अगली टांगें पंखों (wings) में परिवर्तित हो जाती हैं इनके चोंच होती है परंतु दांत नहीं होते ये अण्डे देते हैं इनके रुधिर का तापमान हर मौसम में समान होता है यानी ये समतापी (warm blooded) होते हैं

स्तनपायी (mammalia) यह प्राणियों का सबसे अधिक विकसित एवं बुद्धिमान वर्ग है इस वर्ग के जन्तुओं की त्वचा पर बाल होते हैं त्वचा में स्वेद ग्रंथियां तथा तेल ग्रंथियां होती हैं कान अधिक विकसित होते हैं इनमें स्तन ग्रंथियां (mammary glands) पाई जाती हैं मादा में स्तन ग्रंथियां अधिक विकसित हो जाती हैं, जिनसे दूध निकलता है ये अपने बच्चों को स्तनों से दूध पिलाती हैं आमतौर पर इनमें उंगलियों पर नाखून, सिर पर सींग, पंजे या खुर तथा कुछ में त्वचा पर शल्क (scales) पाए जाते हैं दांत मसूड़ों में उगे होते हैं श्वसन केवल फेफड़ों द्वारा होता है प्रोटोथीरिया (prototheria) को छोड़कर सभी जन्तु समतापी (warm blooded) होते हैं अर्थात् उनके खून का तापमान हमेशा एक-सा बना रहता है मादा सीधे बच्चे पैदा करती है केवल प्रोटोथीरिया के जन्तु ही अण्डे देते हैं

स्तनपायी को तीन उपवर्गों प्रोटोथीरिया (prototheria), मेटाथीरिया (metatheria) तथा यूथीरिया (eutheria) में विभक्त किया गया है

प्राइमेट्स (primates) इसमें मनुष्य, गोरिल्ला, चिम्पैंजी, बंदर आदि विकसित मस्तिष्क वाले बुद्धिमान प्राणी आते हैं इनके हाथों और पैरों में पांच-पांच उंगलियां होती हैं जिन पर पंजों की जगह

नाखून होते हैं आंख सामने होती हैं और छाती पर स्तन ग्रंथियां होती हैं मादा आमतौर पर एक बार में केवल एक ही बच्चा देती है

पक्षियों की प्रवास यात्राएं (migration) सदियों में कुछ ऐसी जगहों पर पक्षियों की बहुतायत देखी जाती है जहां कुछ महीनों पूर्व एक भी पक्षी नजर नहीं आता था ये पक्षी कहां से आ गए? आम इन्सान तो यही सोचता है कि यह प्रकृति का नियम है वास्तव में प्रति वर्ष सर्दियों के मौसम और शुरू सर्दी में अनेक पक्षी एशिया यूरोप तथा अमेरिका के उत्तरी भागों में स्थित अपने स्थानों से उडकर गर्म देशों में आ जाते हैं और बसंत तथा गर्मियों में वे फिर वापस उत्तर में अपने घर लौट जाते हैं इनकी यह यात्रा इतनी नियमित और सुव्यवस्थित ढंग से होती है कि इनके आने-जाने के एक-एक दिन का ठीक हिसाब लगाया जा सकता है एक प्रश्न उठता है आखिर पक्षी इतनी लम्बी यात्राएं क्यों करते हैं? पक्षियों में सर्दी-गर्मी को सहन करने की तो क्षमता होती है परंतु भोजन न मिलने पर उनको मौत का सामना करना पडता है जीवित रहने के लिए उन्हें अपना आवास बदलना पडता है प्रवास द्वारा पक्षी दो विभिन्न मौसमों में दो अलग-अलग स्थानों पर इस प्रकार रहते हैं कि दोनों जगह उनको अनुकूल मौसम मिल जाता है यह प्रकृति का एक नियम है कि पक्षी हमेशा अपने प्रवासी क्षेत्र के ठण्डे भाग में ही प्रजनन क्रियाएं करते हैं

पक्षियों की सही और नियमित वापसी बडी विचित्र और रहस्यपूर्ण है कुछ वर्षों पूर्व प्रयोगों द्वारा यह संकेत मिले हैं कि दिन में उडने वाले प्रवासी पक्षी विभिन्न मौसमों में सूर्य के पृथ्वी के साथ बनने वाले कोण के आधार पर अपना मार्ग निर्धारित करते हैं लेकिन रात को विचरण करने वाले प्रवासी पक्षी नक्षत्रों द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं।

बैंडिंग (bending) यह पक्षियों के प्रवसन सम्बंधी अध्ययन की एक विधि है जिसमें किसी छोटे पक्षी के पैर या टांगों में ठीक आकार का हल्का छल्ला बांध दिया जाता है जिन पर नम्बर और पता लिखा रहता है एक विशेष रजिस्टर में विस्तृत ब्यौरा लिखकर पक्षी को छोड दिया जाता है ऐसे पक्षियों में से कुछ को दूर स्थानों पर जाल द्वारा पकड कर या गोली मारकर फिर प्राप्त कर लिया जाता है और उनके छल्ले तथा पाए जाने वाले स्थान, समय आदि की जानकारी उस स्टेशन को भेज दी जाती है जहां से पक्षी छोडा गया था

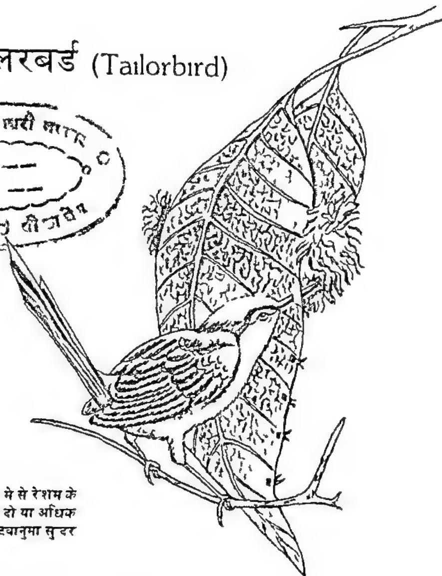
सन् 1959 में बम्बई की 'नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी' ने बैंडिंग की व्यवस्थित क्षेत्रीय योजना बनाई थी इनके छल्लों पर लिखा होता है "बम्बई की नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी को सूचित करें

जन्तुओं की भाषा मनुष्य की तरह अर्थ-बोधक शब्दजन्य भाषा जीव-जन्तुओं में नहीं है। इनकी भाषा सरल ध्वनियों तथा मुद्राओं के रूप में होती है कुछ जानवर दूसरे जानवरों यहां तक कि मनुष्य तक की बोली की हूबहू नकल कर लेते हैं, परंतु यह उनकी बातचीत या विचार-विमर्श की कोई शक्ति नहीं होती यह जबान या आवाज का एक कौशलपूर्ण किन्तु निरर्थक व्यायाम ही है वैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोग करने के बाद यही निश्चय किया है कि जानवरों का ज्ञान केवल, सांकेतिक ध्वनि या भाव-भंगिमा या गंध तक हो सकता है वे वाक्यों द्वारा बातचीत कर सकने में असमर्थ होते हैं।

जानवरों की बुद्धि जीव-जन्तु,जो कौशलपूर्ण कार्य करते हैं,वह उनकी बुद्धि का परिणाम हरगिज नहीं है इन अद्भुत कार्यों की प्रेरणा इन्हें सहज वृत्ति (instinct) से मिलती है, जो वंशानुगत होकर असंख्य पीढियों तक चलती है टेलरबर्ड का घोंसला या बीवर का बांध कारीगरी का नमूना है, परंतु टेलरबर्ड या बीवर को न तो माता-पिता ही कुछ प्रशिक्षण देते हैं और न बुद्धि ही सहायक होती है जन्तुओं में इन उद्देश्यपूर्ण कार्यों को करने की स्वाभाविक शक्ति होती है सहज वृत्ति को जन्तु का ऐसा ही अंग कहा जा सकता है जैसे उसके अन्य शारीरिक अंग होते हैं

सहज वृत्ति के बावजूद सभी जानवरों को अपने जीवन में कुछ न कुछ तो सीखना ही पडता है परंतु कुछेक उदाहरणों को छोडकर जानवरों में दूसरों का अनुकरण करके लाभ उठाने की समझ नहीं होती आमतौर पर लोग जानवरों की जल्दी या देर से सीखने की क्षमता को ही तीव्र या मंद बुद्धि कहते हैं लेकिन वैज्ञानिकों का अधिकांशतः यही निश्चित मत है कि बंदर और वनमानुषों को छोडकर अन्य किसी भी जानवर में सोच समझकर कार्य करने की शक्ति नहीं होती

टेलरबर्ड (Tailorbird)



टेलरबर्ड बारीक सूत, ऊन और कोया मे से रेशम के धागे आदि बटोर कर अपनी चोंच से दो या अधिक पत्तियो के किनारो को सी कर एक बटवानुमा सुन्दर घोसला बनाती है

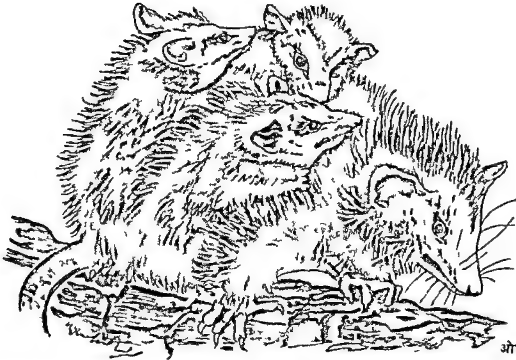
टेलरबर्ड्स वार्बलर्स (warblers) की ही दो किस्म हैं, जिनका नाम इनके घोसला बनाने के तरीके पर पडा ऑर्थोटोमस (orthotomus) दक्षिणी एशिया मे तथा सिस्टीकोला (cisticola) आस्ट्रेलिया मे पाई जाती है।

टेलरबर्ड जिसे हम दरजिन या दर्जी भी कहते हैं, गौरय्या से छोटी एक निडर जतनी-हरे रंग की चंचल चिडिया है नर-मादा मे कोई विशेष अंतर नही होता यह चिडिया शहर के बीच बगीचो तथा झाड-झंखाड वाले जंगलो मे पाई जाती है शहर का भीड-भाड वाला इलाका हो या जंगल, दोनो इनके लिए उपयुक्त हैं डाकबंगलो या बागो के करीब बने मकानो के बरामदो मे घुस जाती है आदमियो से बिल्कुल नही डरती और मजे से पेड-पौधो और बेलो पर फुदकती फिरती है और टोविट-टोविट या प्रीटी-प्रीटी की आवाज निकालती रहती है इसका भोजन कीड-मकोड तथा फलो का मधुरस है।

इस चिडिया का घोसला बडा विचित्र होता है दो पत्तियो के बीच मे मुलायम रूई ऊन या रेशो का बना प्याले जैसा दोनो पत्तियो के किनारो पर अपनी चोंच मे छेद करके उन्हे रूई धागे या ऊन के धागो मे सी देती है इस प्रकार इसका घोसला मजबूत और सुन्दर कीप की शक्ल का बन जाता है।

इस चिडिया की नीडन-ऋतु (breeding season) प्राय अप्रैल से सितम्बर होती है मादा अण्डे सेती है और बच्चो का पालन-पोषण दोनो ही करते हैं।

ओपोसम (Opossum)



ओपोसम

उत्तरी अमरिका के जगला म कगारू की भाति थली मे शिशु रखन वाल मारसूपियल्स (marsupials) वग के जानवरा म केवल ओपासम ही अभी तक वचा हुआ ह

आपामम का आकार वडी विल्ली क वरावर हाता ह चहरा चूह की भाति लवातरा आर नुकीला तथा दुम लम्वी हाती है इमक शरीर पर नम वाल होते ह यह रानिचर जानवर है

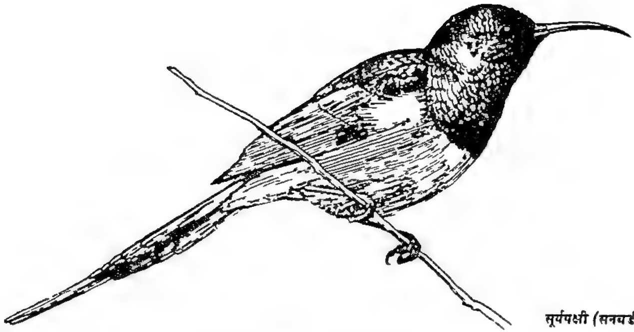
यह विचित्र जानवर सुस्त आर विल्कुल ही मूख होता ह जगल क अन्य जानवरा क आक्रमणा म अपनी रक्षा कर मकना इसके वस की वात नही है यह इतना वुद्धिहीन हाना ह कि शत्रु का मामन दखकर भागन की वात भी नही सोच मकता जव कोइ शत्रु सम्मुख आ जाता है ता आपामम भय क कारण मूच्छित हा जाता है उसका शरीर विल्कुल मुर्दे की भाति अकड जाता है जानवर उस मुदा जान कर छोड दत ह

इस सुस्त और वुद्धिहीन जानवर का जगल म जीवित रहना भी एक चमत्कार ही ह इसका एक कारण यह भी हो सकता ह कि इसकी मादा वहुत अधिक शिशुआ का जन्म दती ह, परिणाम यह होता ह कि जितने मरत ह, उससे ज्यादा पदा हो जात हैं एक ओपोसम मादा एक वष मे तीन वार वच्चे देती ह जिनकी सख्या 30 से 35 होती ह

नवजात शिशु का आकार हमारी छोटी उगली के वरावर होता है जव इनका जन्म हाता ह तो इनकी आख वद हाती ह य रेंग कर अपनी माता की वक्ष की थली म पहुच जात हैं आर वही छ या सात सप्ताह तक दूध पीत रहते ह

आख खुलने क पश्चात् शिशु वाहर निकलन पर भी इस काविल नही हात कि स्वतत्र रूप म चल फिर सक य अपनी पछ का अपनी मा की पूछ क चारा आर लपट लेत ह मादा अपनी पूछ उठाती ह और उस मोड कर पीठ पर पहुचा देती ह शिशु उसकी पीठ पर पहुच कर उल्टे लटक रहत ह आर मादा उनका लिए हुए भाजन की तलाश म घूमती रहती ह

आपासम सवभक्षी ह जो भी मिल जाता ह खा जाता ह



सूर्यपक्षी (सनबर्ड)

सनबर्ड (Sunbird)

भारतीय सुन्दर चिडिया मे सबसे छोटी सुन्दर चिडिया नेक्टैरिनाइडी परिवार की सनबर्ड (सूर्यपक्षी) है इसका आकार घरेलू गौरय्या से भी लगभग आधा होता है जब यह धूप मे फूलो पर मडराती है तो इसकी जगमगाती पक्षति (plumage) किसी रत्न की भाँति दिखाई देती है

सभी सनबर्ड्स को आमतौर पर शकरखोरा कहा जाता है इनमे पर्पलरम्पड सनबर्ड यलोबेक्ड सनबर्ड तथा पर्पल सनबर्ड मुख्य है यहा हम पर्पल सनबर्ड के बारे मे बताएगे।

प्रजननकाल से पूर्व की पक्षति मे नर और मादा मे कोई विशेष अन्तर नही होता दोनो का रग ऊपर से भूरा और नीचे हल्का पीला होता है नर को उसके गहरे रग और वक्ष के बीच चोडी काली पट्टी से पहचाना जा सकता है दोनो की चोच लम्बी और दुम छोटी होती है, जबकि यैलोबेक्ड सनबर्ड मे नर की दुम लम्बी होती है

यह चिडिया भारत मे हर जगह बागो, खेतो और हल्के पर्णपाती जगलो मे पाई जाती है इसकी पतली और लम्बी चोच देखने मे विचित्र लेकिन इसके लिए बडी उपयोगी होती है अपनी पतली मुडी हुई चोच से यह फूलो की नली से मधुरस पी जाती है और इस प्रकार पौधो का पर-परागण भी हो जाता है

यह चिच-चिच जैसी बोली बोलती है प्रजननकाल मे नर अपने पख ऊपर-नीचे करके बगल के पीले तथा सिन्दूरी रग के चमकीले पख दिखाकर मादा को अपनी ओर आकर्षित करता है और चीविट-चीविट की आवाज भी निकालता रहता है

इसका घोसला बया की तरह लटकने वाला होता है जमीन से कुछ ऊपर पेड की लटकती हुई पतली डाली के सिर पर ऊर्ध्वाधर (vertical) दीर्घाकार कोष्ठ के रूप मे झूलता रहता है घोसले की बनावट आश्चर्यजनक होती है इसमे अदर जाने के लिए एक छेदनुमा दरवाजा होता है जिसके ऊपर छज्जा-सा बना होता है घोसले को शत्रुओ से छुपाने के लिए बाहर पेड की छाल के टुकडे, इल्लियो की विष्ठा और मकडियो के अण्डो के खोल लगे होते हैं

घोसला केवल मादा बनाती है और वही अडे भी सेती है नर केवल बच्चो के पोषण मे ही सहायता करता है अडो की सख्या 2 या 3 होती है नीडन-ऋतु (breeding season) प्राय मार्च से मई जून तक चलती है

उत्पाती रैकून (Racoon)

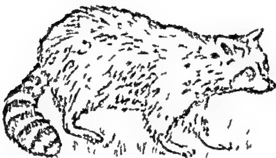
रैकून अपनी चालाकी, चपलता और शैतानी के लिए प्रसिद्ध है। यह [illegible] स्तनपायी (furry mammal) प्रोसाइआनाइडी (procyonidae) परिवार का है। इसकी दो मुख्य जातियाँ हैं। उत्तरीय रैकून (procyon lotor) [illegible] और मध्य अमरिका में तथा [illegible] (crab eating) रैकून (procyon carnivorous) दक्षिणी अमरिका में पाया जाता है।

रैकून आमतौर पर [illegible] होता है। [illegible] ब्राउन या पीली [illegible] भी होती है। इसकी पूंछ की लम्बाई दुम सहित 76–97 सेमी होती है। इसकी [illegible] बड़ी सुन्दर होती है जिसका [illegible] तथा उस पर 4-6 [illegible] होते हैं। इसकी पूंछ की लम्बाई लगभग 25 सेमी होती है। रैकून का वजन लगभग 7-8 किलोग्राम होता है।

रैकून प्राय: उन स्थानों पर रहता है जहां पानी और घने वृक्ष हों। इसका भोजन मछलियां, [illegible] तथा फल इत्यादि हैं।

उत्तरी रैकूनों (Northern racoons) की संगम-ऋतु साल में एक बार जनवरी [illegible] होती है। संगम (mating) के लगभग 9 सप्ताह बाद मादा रैकून 2 से 8 तक बच्चों को जन्म देती है। इसकी उम्र 6-8 वर्ष तक रिकार्ड की गई है।

रैकून



[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] अपनी शरारत से बाज न आता था [illegible] जबड़ों में भी [illegible] सावधान रहता था। यदि वह स्वयं नहीं [illegible] था तो गिलहरी को भी जगाए रखता था

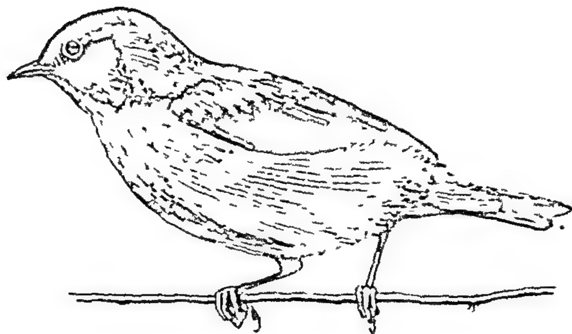


रैकून अपना भोजन पानी से धोकर खाता है

रेकून एक बिल्कुल ही विचित्र कार्य करता है वह अपना भोजन पानी म अच्छी तरह धोने के बाद ही खाता हे मेढक हो, मछली हो या बिल्कुल छोटा सा कछुआ वह उसे पानी मे डुबो-डुबो कर अपने पजे से अच्छी तरह रगड कर धोता ह यह एक आश्चयजनक बात हे कि वह ऐसा क्या करता हे? वास्तव मे इसका कारण सहज-वृत्ति (instinct) ही है चीजो को धोना शायद उसके लिए एक दिलचस्प खेल ह कभी-कभी यह भी देखा गया हे कि वह ठीकर धो-धो कर कपडा की भाति सुखाता ह

किसान रेकून के बालो से मासम का अनुमान लगा लते हे यदि रेकून के नम बाल लम्बे होते हें ता समझा जाता ह कि इस वार सर्दी बहुत अधिक पडगी और यदि बाल छाट हाते ह तो हल्की सर्दी पडने की सम्भावना होती हे

फुलचुकी (Tickell's Flower-pecker)



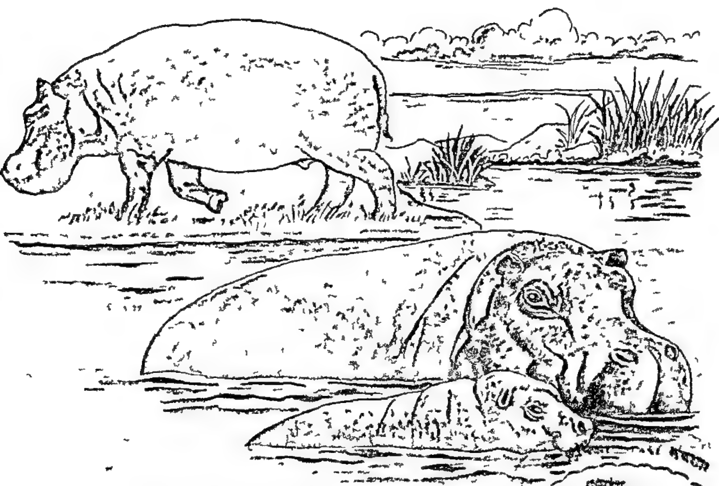
विश्व की सबसे छोटी चिड़िया बी हमिंगबर्ड (bee humming bird) है, जो क्यूबा और पास के द्वीपों में पाई जाती है। भारतीय चिड़ियों में सबसे छोटी चिड़िया फुलचुकी (Tickell's Flower pecker) है जिसका आकार केवल अंगूठे के बराबर होता है, यानी यह चिड़िया सनबर्ड से भी छोटी होती है। इसका रंग जैतूनी भूरा, निचला हिस्सा सफेद और चोंच छोटी पतली और कुछ मुड़ी हुई होती है। नर-मादा एक जैसे होते हैं।

भारत में सभी जगह बगीचों, जंगल में लगाए गए पेड़ों और गांवों के करीबी कुंजों में पाई जाती है। यह छोटी-सी चिड़िया बड़ी चंचल होती है। यह फुदकते हुए या उड़ते समय चिक चिक चिक की आवाज निकालती रहती है। कभी-कभी चहचहाने वाला गीत भी सुनाती है।

[illegible] परजीवी [illegible] (Loranthus) [illegible] पौधा उग आता है और इस प्रकार यह नए परजीवी [illegible] फलों का मधुरस और छोटे कीड़े मकोड़े भी खा जाती है।

इसका घोंसला भी नया तथा सनबर्ड की भाँति ही लटकता बना होता है। नर मादा दोनों ही घोंसला बनाने व बच्चों के पालन-पोषण में सहयोगी होते हैं। आमतौर पर इनकी नीडन-ऋतु फरवरी से जून तक होती है।

ऊपर : फुलचुकी सबसे छोटी भारतीय चिड़िया है



हिप्पोपोटैमस (Hippopotamus)

हिप्पोपोटमस एक विचित्र विशालकाय जानवर ह जो हाथी स कुछ छाटा होता हे यह 4 5 मीटर लम्बा, 1 5 मीटर ऊचा ओर 2 6 टन स भी अधिक वजनी होता हे अधिकाशत यह अफ्रीका के जगला ओर नदियो मे पाया जाता ह यह एक एसा जानवर ह,जो पानी म मछली की तरह रहता हे ओर भूमि पर हाथी की तरह घूमता ह

इसका शरीर बाल रहित चिकना आर बेलनाकार होता हे हाथी की भाति चार छोटे-छोटे मज़बूत पैर होते हैं, सिर बडा और बहुत भारी होता ह यह इस युग का सबसे विशालकाय जीवित जुगाली न करने वाला और खरवाला जन्तु ह

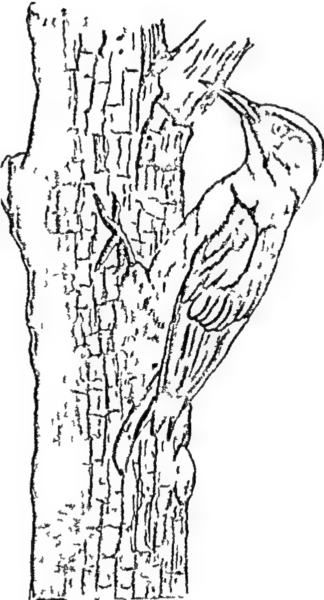
हिप्पोपोटेमस पूणत शाकाहारी ह, घास ओर जल के पाधे बहुत शोक से खाता हे इसका खुला हुआ मुह गुफा की तरह दिखाई दता हे यह एक बार मे 150-200 किग्रा तक भोजन खा जाता हैं

ये दिन-भर पानी मे पडे रहते हैं, केवल आखें और नासाछिद्र (nostrils) पानी की सतह से ऊपर रहते ह ये रात का पानी से बाहर निकलत हे ओर जगलो मे भोजन की तलाश म घूमते रहते हैं खेतो को जितना चरते नही उससे अधिक अपने भारी वजन क कारण राद कर नष्ट कर देते ह अफ्रीका म इसका शिकार किया जाता हे वहा के लोग इसका मास बहुत शौक से खाते हैं एक हिप्पोपोटेमस पूरे गाव के लिए पर्याप्त होता हे

हिप्पापोटमस विशालकाय होने के साथ-साथ शक्तिशाली आर बहुत फुर्तीला भी होता हे यह पानी की गहराई मे 10 मिनट तक रह सकता ह यह रभाता ओर गुर्राता भी ह मादा हिप्पोपोटमस एक बार मे एक ही बच्चा दती हे, जिसे वह अपनी पीठ पर चढ़ाए पानी मे तेरती रहती है

ऊपर *हिप्पोपोटैमस पानी मे मछली की तरह रहता है*

कठफोड़वा (Woodpecker)



कठफोड़वा अपनी चोंच से वृक्ष की छाल उखाड़ कर उसमें छुपी चींटियाँ खा जाता है

विश्व में कठफोड़वों (वुडपेकर) की 210 जातियाँ (species) हैं। सिवाय आस्ट्रेलिया के यह हर देश में पाया जाता है। इसका गण हाइसीफार्मिस और परिवार पाइसिडी है। यहाँ भारतीय रूफस वुडपेकर (rufous woodpecker) का विवरण दिया जा रहा है।

यह पक्षी भारत में सभी जगह, जंगलों, मैदानों तथा पर्वतों में 5000 फुट की ऊंचाई तक पाया जाता है। इसका रंग लाल-भूरा चमकीला होता है। परों तथा दुम में काली तिरछी धारियाँ होती हैं। नर को उसकी आंख के नीचे गालों पर गहरे लाल रंग के पंख से पहचाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त नर-मादा में कोई विशेष अंतर नहीं होता। रंग भेद पर आधारित इसकी चार जातियाँ हैं।

यह पेड़ों के तनों तथा शाखाओं पर सर्पिलाकार रूप में चढ़ सकता है और सीधे तने पर आसानी से टिका रहता है, क्योंकि यह अपनी दुम को तने से सटा लेता है। इसकी एक विशेषता उल्टा चलना भी है। इसकी बोली सामान्य मैना से मिलती-जुलती होती है।

इसका मुख्य भोजन वृक्षवासी चींटियाँ, उनके अण्डे तथा प्यूपा हैं। चींटियों के अतिरिक्त यह बरगद आदि वृक्षों की अंजीर और फूलों का मधुरस भी खाता है।

यह बहुत आसानी से छाल तथा गली लकड़ी को अपनी चोंच से उखाड़ कर कीड़े निकाल कर खा जाता है। इसी विशेषता के कारण इसका नाम कठफोड़वा पड़ा है। गिनेस बुक ऑफ रिकार्ड्स के अनुसार अमरिका में हाल में जो वैज्ञानिक प्रयोग किए गए हैं उनसे पता चलता है कि लाल सिर वाला कठफोड़वा इतने जोर से पेड़ की छाल पर चोंच मारता है कि टक्कर का वेग (impact velocity) 13 मील प्रति घंटा (20.9 km/h) होता है। टक्कर के कारण सिर जिस तेजी से विराम की स्थिति में आता है उसके कारण मस्तिष्क पर मंदन (deceleration) का मान लगभग 10g होता है।



ग्रेट चित्तीदार कठफोड़वा

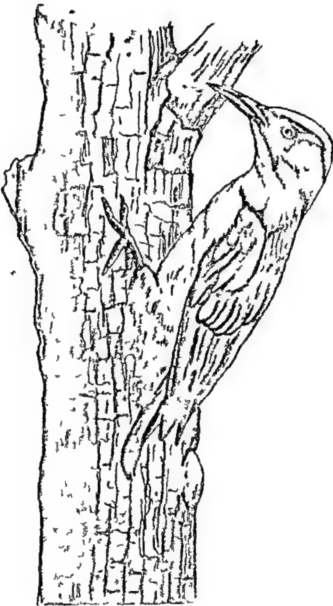
यह अपना घोसला क्रीमटीगस्टर वृक्षवासी चींटियों के घर म छेद करके बना लेता ह यानी एक घर म दो घर, और आश्चय की बात यह ह कि नर-मादा, अण्डो आर बच्चा को चींटियो से बिल्कुल काइ नुकसान नही होता यह भी चींटियो का परशान नही करते मिल-जुल के रहने का यह एक अच्छा उदाहरण ह

इनक अण्डे सन की अवधि अन्य पक्षिया की अपेक्षा कम होती ह चित्तीदार बड कठफोडवे आर काली चोच वाली कायल ही एसे ह, जिनकी अडे सेने की सबस कम अवधि 10 दिन ह

इनकी नीडन-ऋतु प्राय फरवरी से अप्रल तक होती ह अण्डे दो या तीन होते ह बच्चो क पालन-पोषण मे नर-मादा दानो का सहयोग हाता हे

इसक अतिरिक्त भारतीय वुडपैकरा म गोल्डेन बक्ड वुडपकर तथा यलोफ्रण्टड पाइड वुडपकर मुख्य हैं

कठफोडवा (Woodpecker)



कठफोडवा अपनी चोंच से वृक्ष की छाल उखाड कर उसमे छुपी चींटिया खा जाता है

विश्व मे कठफोडवे (वुडपकर्स) की 210 जातिया (species) है सिवाय आस्ट्रेलिया के यह हर देश मे पाया जाता है इसका गण हाइसीफार्मिस और परिवार पाईसिडी है यहा भारतीय रूफस वुडपकर (rufous woodpecker) का विवरण दिया जा रहा है

यह पक्षी भारत म सभी जगह, जगलो, मैदानो तथा पर्वतो म 5000 फुट की ऊचाई तक पाया जाता है इसका रग लाल- भूरा बादामी होता है पख तथा दुम मे काली तिरछी धारिया होती हैं नर को उसकी आख के नीचे चन्द्राकार गहरे लाल रग के परो से पहचाना जा सकता है इसके अतिरिक्त नर-मादा मे कोई विशेष अतर नही होता रग भेद पर आधारित इसकी पाच जातिया हैं

यह पेडो के तनो तथा डालो पर सर्पिलाकार तरीके से चढ सकता है और सीधे तने पर आसानी से टिका रहता है क्योकि यह अपनी दुम को तने से सटा लेता है इसकी एक विशेषता उलटा चलना भी है इसकी बोली सामान्य मैना से मिलती-जुलती होती है

इसका मुख्य भोजन वृक्षवासी चीटिया, उनके अण्डे तथा प्यूपा है चीटिया के अतिरिक्त यह बरगद आदि वृक्षो की अजीर और फूलो का मधुरस भी खाता है

यह बहुत आसानी से छाल तथा गली लकडी को अपनी चोच से उखाड कर कीडे निकाल कर खा जाता है इसी विशेषता के कारण इसका नाम कठफोडवा पडा है 'गिनस बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' के अनुसार अमेरिका म हाल म जो वैज्ञानिक प्रयोग किए गए है, उनसे पता चलता है कि लाल सिर वाला कठफोडवा इतने जोर से पेड की छाल पर चोच मारता है कि टक्कर का वेग (impact velocity) 13 मील प्रति घटा (20 9 km/h) होता है टक्कर के कारण सिर जिस तेजी से विराम की स्थिति मे आता है, उसके कारण मस्तिष्क पर मदन (deceleration) का मान लगभग 10g होता है



ग्रेट चित्तीदार कठफोड़वा

यह अपना घोसला क्रीमटीगम्टर वृक्षवासी चीटियो के घर म छेद करके बना लता ह यानी एक घर मे दो घर, आर आश्चय की वात यह हे कि नर-मादा, अण्डो आर वच्चो को चीटियो से विलकुल कोइ नुकसान नही होता यह भी चीटिया का परशान नही करते मिल-जुल क रहन का यह एक अच्छा उदाहरण ह

इनक अण्ड सने की अवधि अन्य पक्षिया की अपक्षा कम हाती ह चित्तीदार वडे कठफोडवे आर काली चाच वाली कोयल ही एस हें, जिनकी अडे सेने की सवसे कम अवधि 10 दिन ह

इनकी नीडन-ऋतु प्राय फरवरी स अप्रल तक होती हे अण्डे दा या तीन होते हे वच्चा के पालन-पोषण मे नर-मादा दोनो का सहयोग हाता हे

इसके अतिरिक्त भारतीय वुडपेकरो म गाल्डेन बेक्ड वुडपकर तथा यलोफ्रण्टेड पाइड वुडपकर मुख्य हें

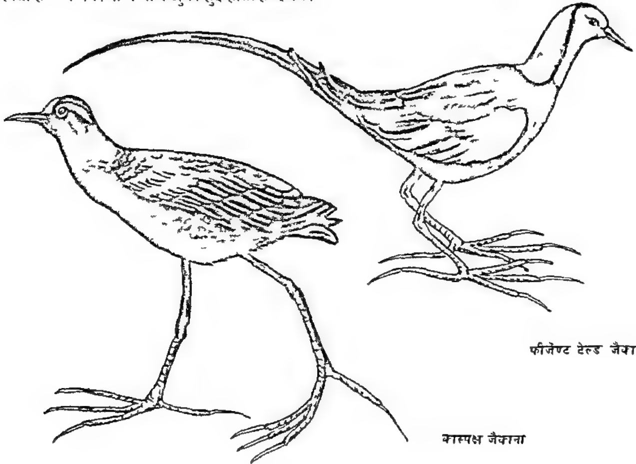
जैकाना (Jacana)

जकाना जिसे लिली टाटर (lily trotter) भी कहते ह जकानिडी परिवार की एक जल-चिडिया ह इसकी सात जातिया ह जा अफ्रीका उष्णकटिबन्धीय प्रदेशा म पाइ जाती ह यह दलदल झील या तरती हुइ वनस्पतिया वाल तालाबा क आस-पास रहती ह इस चिडिया की खास पहचान इसकी पर की उगलिया ह, जा मकडी की भाति बहुत अधिक लम्बी हाती हैं इसकी लम्बाइ 6 स 15 इच तक हाती ह, इसका भाजन जलीय पाध आर छाटे-छाट जीव ह भारत म लगभग सभी जगह पाइ जाती ह

भारतीय फीजण्ट-टल्ड जैकाना जिस हम पिह या पिहया भी कहत ह प्रजननकाल से पूव इसके शरीर का रग प्राय भूरा आर सफेद हाता हे आर ऊपरी वक्ष पर काला नकलस जसा डिजाइन हाता ह प्रजननकाल म इसका रग सफद और चाकलटी-भूरा हाता ह दुम नकीली व नीचे झुकी हुइ होती है इसकी पर की उगलिया मकडी की भाति बहुत लम्बी हाती ह नर-मादा दखन म लगभग एक जस हात ह

तालाबा म तरती हइ वनस्पतिया जस लिली आर सिघाड की पत्तिया आर शाखा पर अपन मकडी जस लम्ब परा की सहायता स यह चिडिया बडी आसानी स चलती ह यह अच्छी तरह तरना जानती ह आर पानी म डुबकी भी लगा सकती ह इसकी बाली टर्वान-टर्वान जसी हाती ह प्रजननकाल मे काफी निडर आर चचल हा जाती ह आर खूब शार मचाती ह

मादा बहुपतिका ह यानी कइ पति बदलती ह इनकी नीडन-ऋतु जून स सितम्बर तक हाती ह यह चार अण्ड दती ह, जिन पर काल रग की चित्रकारी-सी हाती ह यह अपना घासला पानी म तरती हुइ पत्तिया पर या किनार पर खडे सरकण्डो पर बनाती ह



फीजेण्ट टेल्ड जैकाना

कास्यपक्ष जैकाना

बीवर (Beaver)

9809
3.4 88

बीवर यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका का सबसे बडा कुतरने वाला (rodent) स्तनपायी जानवर ह यह चूहे ओर गिलहरी का निकटवर्ती ह परतु आकार म उससे काफी बडा होता ह इसके शरीर की लम्बाई 80 सेमी से 1 मीटर, पूछ की लम्बाई 30 सेमी से 35 सेमी तथा वजन 21-30 किग्रा होता ह यह प्राय पानी के किनारे,जहा घने वृक्ष हो,रहता ह कीमती फर (fur) ओर स्वादिष्ट मास के लिए इसका शिकार किया जाता हे

बीवर प्राणी जगत का एक कुशल इजीनियर कहलाता है यह बाध आर खाइया से घिरे घर बनाने के लिए प्रसिद्ध ह इसका कार्य अन्य सभी जन्तुओ क कार्या स पेचीदा ओर आश्चर्यजनक है

ये मोट से मोटे वक्षो को बडी तेजी मे काट डालते हे परतु बाध बनान क लिए प्राय छोटे 15-20 समी व्याम क वृक्ष ही चुनते ह बाध बनाने के लिए बीवरो का पूरा दल कार्य करता है 15 सेमी व्यास के किसी वक्ष को बीवर अपन तेज दातो से केवल कुछ ही मिनटो म काटकर गिरा देता ह ओर फिर केवल कुछ ही मिनटा मे तने के डढ-दो मीटर के लट्ठे काटकर पानी म भी बहा देता ह

बीवर मोटे से मोटे वक्ष को बडी तेजी से काट डालता है





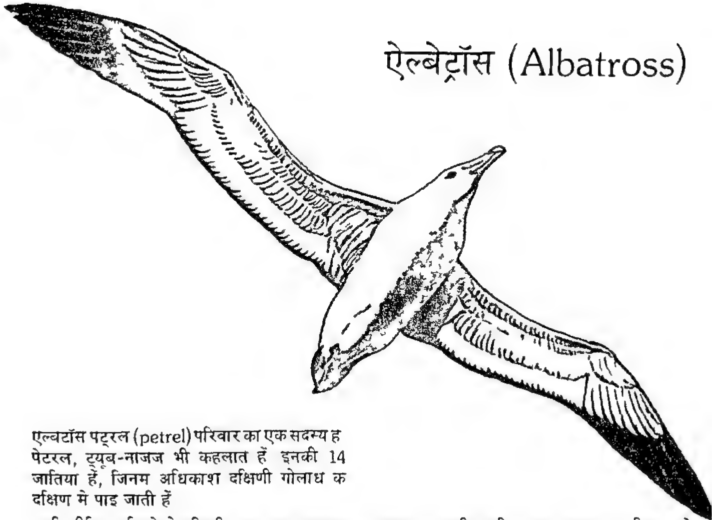
बीवर बाध बना रहे ह

बीवर बाध बनान क स्थान पर काफी मख्या म वक्षा क लटठे आर टहनिया डालत ह उमक ऊपर पत्थर आर कीचड फकन ह परिणाम यह हाता ह कि पानी का तल काफी ऊपर उठ आता ह इम प्रकार एक बाध का निमाण हाता ह

बाध बनान क बाद मचित हुए पानी क बीच म बीवर पत्थर आर कीचड गिरा कर एक ऊचा टीला मा बना लत ह यह टीला एक द्वीप की भाति बन जाता ह जिमक चारा ओर पानी हाता है इम टील या द्वीप क ऊपर व टहनिया आर मिट्टी द्वारा घर या लॉज (lodge) बनात ह जा गुम्बदनुमा होता ह ऊपर की आर यानी छत पर छद या चिमनी होती ह,जिमके द्वारा घर म हवा आती जाती ह घर म खाद्य-मामग्री भी मचित रहती ह,जा खराब मामम हान या मकट क ममय काम आती ह बीवर एक अच्छा तराक ह इमलिए आन जान का गम्ता भी मुरग की शक्ल का पानी क अदर ही हाता ह बीवर का घर या लाज पूणतया मुरक्षित हाता ह शत्रुआ की इनका काइ चिता नही हाती घर क चारा आर पानी की खाइ इनकी रक्षा करती ह कोइ शत्रु पानी की खाइ पार करन का माहम नही करता

बीवर बाध आर घर बन जान क बाद भी शात नही बठत, बराबर काम म लग रहत ह, वक्ष काट-काट कर बाध क चारा ओर डालत रहत ह इजीनियरा ने रॉकी पवतमाला म एम बाधो का उल्लख भी किया ह जा लगभग चाथाइ मील लम्बे थे यह बीवरा की कइ पीढिया का काम था पवतीय क्षेत्रा म बाध बनान वाल इजीनियरा का इस बात पर बडा आश्चय ह कि बाध बनान के लिए वही स्थान मर्वात्तम सिद्ध हुए जहा बीवरो न बाध बनाए थ

ऐल्बेट्रॉस (Albatross)



एल्वटॉस पट्रल (petrel) परिवार का एक सदस्य ह पेटरल, ट्यूब-नाजज भी कहलात हें इनकी 14 जातिया हें, जिनम अधिकाश दक्षिणी गोलाध क दक्षिण मे पाइ जाती हें

सभी जीवित पक्षियो मे दक्षिणी मागर क घुमक्कड एल्बेटॉस समार क सबस बड उडन वाले पक्षी ह इनक पखो का फलाव एक सिरे स दूसर सिरे तक लगभग 3 3 मीटर होता ह 'गिनस बुक ऑफ रिकॉड्स' क अनुसार अमरिका नासना क एल्टनिन नामक एक अटार्कटिक अनुसधान पोत न एक नर ऐल्बेटॉस का पकडा था जिसक पखा का फलाव 3 63 मी (11 फिट 11 इच) था

इसका आप एक छोटा हवाइ जहाज कह सकत ह क्योकि उपर उडने क लिए इस खुली जगह चाहिए पख फलाकर यह 60 से 90 फिट (18 28-27 43 मी) तक दाडता ह फिर हवाइ जहाज की भाति धीरे-धीर ऊपर उठता जाता ह उतरत समय भी बिल्कुल एसा प्रतीत हाता ह माना हवाइ जहाज उतर रहा हा

वास्तव म यह वडा विचित्र पक्षी ह समुद्री तूफानो का बडे साहस से मुकावला करता हुआ अपनी यात्रा जारी रखता ह कभी-कभी ता कइ सप्ताह तक बिना रुके जलयान का पीछा करता रहता ह

यह समुद्री पक्षी ह वप क 6 महीने समुद्र के ऊपर ही गुजारता ह यह अपन घासल दक्षिणी समुद्र के तटो पर वनात ह आर सकडा किलामीटर की यात्रा करने क बाद भी ठीक अपन घासले म लाट आत ह इनका आधा वप ता समुद्र पर उडने म ही बीत जाता ह बाकी 6 महीना में अपने वच्चा का पालन-पाषण करते हें घासला जमीन म एक फुट (30 48 समी) ऊपर उठा हुआ आर लगभग 12 फीट (3 78 मी) चाडा होता ह, जा घास-फूस मिट्टी आर काई से ढका होता ह मादा एक बार म एक ही अडा देती ह जिसे वह अपन परा के बीच लटकी थली स सती ह अडा 5 इच (12 7 समी) लम्बा आर 300 ग्राम भारी हाता ह

इनका भाजन समुद्री मछलिया ह जिनका शिकार ये गोता लगाकर करत ह

शुतुरमुर्ग (Ostrich)

आज जीवित पक्षियो म शुतुरमुग (ostrich) सबसे विशालतम होता ह यह एटलस पवत क दक्षिण म ऊपरी सेनगल आर नाइगर (Niger) से लेकर सूडान आर मध्य ईथियोपिया तक पाया जाता ह इनकी सख्या कम होती जा रही ह यह न उड सकन वाला पक्षी ह इनक नर की ऊचाइ लगभग 2 74 मी (9 फट) आर वजन 156 किग्रा होता ह

अफ्रीका म कभी ईपिऑर्निस (Aepyornis) नामक एक न उड सकन वाला पक्षी हआ करता था, जिसकी ऊचाइ 4 87 मी (16 फट) थी वास्तव म यह ससार का सबसे बडा पक्षी था इसके जीवाश्म अभिलखो (fossil records) म इसकी टाग बताती ह कि इसकी चाल 40 मील प्रति घटा रही होगी यही पक्षी शतरमग क पवज थ

शतरमुग दक्षिणी अफ्रीका क खुल मदानो मे जेब्रा (zebra) आर हाटबीस्ट्स (hartebeests) के साथ घमत नजर आत ह

इस पक्षी क पख छोटे होते हैं,इसलिए यह उड नही सकता परतु अपने दो बडे मजबूत आर सुन्दर पैरो से यह 25 मील प्रति घट की रफ्तार म दौड सकता ह इसकी शक्ति का अदाजा आप इससे लगा सकते ह कि यह अपनी पीठ पर दो आदमियो को आसानी से ल जा सकता ह इसके पैरो की उगलियो के बारे म एक बात विशेष उल्लखनीय हे कि जिस प्रकार कभी घोडे के





शुतुरमुर्ग दक्षिणी अफ्रीका के खुले मैदानो मे रहते हैं

पाच उगलिया हुआ करती थी, लेकिन धीरे-धीरे प्राणियो के विकास के साथ ही लगातार दाडने क कारण इसकी उगलिया कम होते-हात एक ही रह गइ, बिल्कुल इसी तरह इस पक्षी की भी तीसरी आर चाथी उगलिया शेष रह गई आर हो मकता ह कि भविष्य मे घोड के समान एक ही रह जाए

नर का अगला भाग काला होता हे लेकिन पख के पिच्छाक्ष (quills) सफेद होते हें इन्ही मफेद पिच्छाक्षा से पिच्छ (plumes) बनते हें, जो बहुत महगे विकते ह मादा का रग कुछ गहरा मिट्टी जमे रग का होता ह वनस्पति, घास-फूस, फल-फूल आर अनाज इसका मुख्य भाजन ह, बस कुछ न मिलन पर छिपकली आर छाटे-छाटे ककड-पत्थर भी निगल जाता है

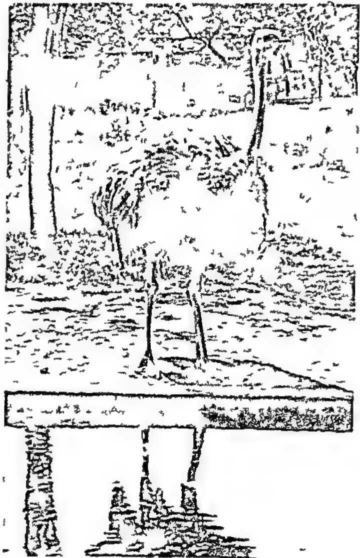
दिन मे मादा आर रात को नर अण्डे सेत हें इसके अण्डे का वजन 1 360 किलोग्राम तक होता ह इसके खोल (shell) मे मुर्गी के 18 अण्ड तक रखे जा सकते ह इसके एक झोल (clutch) मे लगभग 15 अण्डे होते हें, जो एक ही नर की कइ मादाआ द्वारा दिए जाते ह, अर्थात् एक नर अपने पास कम स कम चार मादाए रखता ह ओर वे सभी एक ही घासल मे अण्डे दती ह घोसला रेत मे एक साधारण गढ्ढे की तरह होता ह

नर पक्षी मादाओ को आकर्षित करने के लिए अपने सारे परो को फलाकर नृत्य करता ह आर बडी शान से अपनी उगलियो के सिरो से चलता ह कि मादाए मुग्ध हो जाती ह युवा पक्षी आर शिशु पक्षी दोना ही मे एक अजीब प्रवृति ह कि वे नाचते-नाचते बेहोश हा जाते ह।

इसकी निगाह बडी तेज होती है खतरा महसूस करते ही तुरत अपनी टागा से चाकडी भरने लगता ह यह एक कदम से लगभग 7 62 मी (25 फुट) जगह त करता ह दाडते समय इसकी एक ठोकर एक घुडसवार आर घोडे दोना को गिरा मकता ह

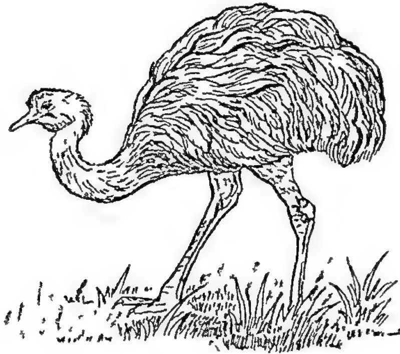
इन पक्षियो का शिकार प्राय घाडे पर चढकर शिकारी कुत्तो के साथ किया जाता ह इनक अण्ड, मास, खाल आर पर ह... लिए बहुत उपयोगी ह

शुतुरमुग के बाद विशालकाय न उड सकने वाले जीवित पक्षियो म अमेरिका के रिआ (rhea), न्यूजीलण्ड क कीवी (kiwis), आस्ट्रेलिया क्षेत्र के एमू (emu) आर कसोवरी (cassowary) ही शेष बचे ह



वतमान जीवित पक्षियो म सबसे बडा पक्षी शुतुरमुग है

रिआ (Rhea)



रिआ दक्षिणी अमेरिका का शुतुरमुर्ग कहलाता है

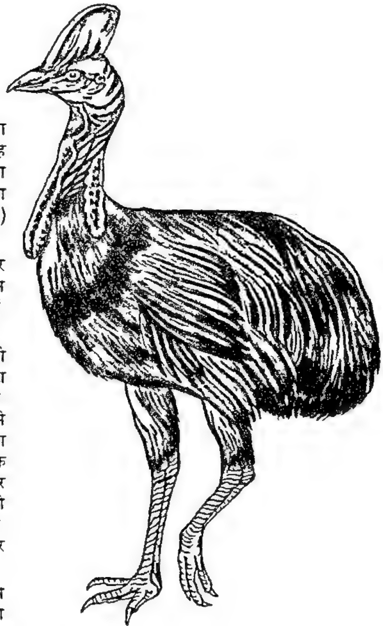
रिआ जिसे दक्षिणी अमेरिका का शुतुरमुग भी कहते ह, शुतुरमुर्ग से काफी मिलता-जुलता लेकिन ऊचाइ म कुछ छाटा यानी लगभग 1 5 मीटर हाता ह इसका रग भूरा, सिर आर छाती काली, उदर आर जाघ सफद ओर गरदन पीली होती ह इसक पर म तीन उगलिया हाती है ये मदानो म रहना पसद करते ह आर 3 से 7 तक क झुण्ड मे मिलते ह इनक साथी हिरन तथा गायेनको (guanaco) हें इनकी नजर वहुत तज होती हे

यह अपन दुश्मन को देखत ही चाकन्ना हा जाता ह शिकारियो से मुकावला भी करता ह आर कभी-कभी ठाकरो से घोडे आर सवार दाना को गिरा देता ह यह वहुत तेज दाडता ह

शुतुरमुग की भाति इसका भोजन भी वनस्पति, फल-फूल, जडे, वीज तथा छिपकली इत्यादि हैं

नर अपनी तेज आवाज मे पहचाना जा सकता ह यह वहुस्त्रीक (polygamous) हाता हे यानी एक समय मे कइ मादाओ को अपनी पत्नी बना कर रखता ह विचित्र बात यह ह कि सभी मादाए एक ही घासले म 20 स लेकर 30 अण्ड तक दती ह ओर आपस म प्रम स रहती ह नर अण्डा को सेता ह यह भी न उड सकन वाले पक्षियो मे से एक ह

कैसोवरी (Cassowary)



कैसोवरी

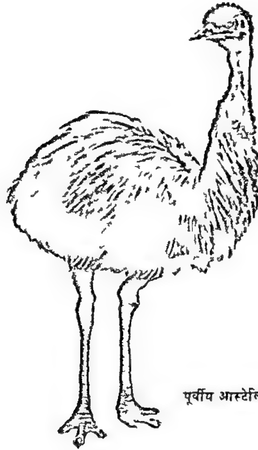
केसोवरी न उड सकने वाले पक्षियो के वर्ग का लगभग 8-9 किलाग्राम वजन का विशालकाय पक्षी है यह एमू से कुछ ही छोटा यानी लगभग 1 83 मीटर ऊचा होता है यह न्यू गायना (New Guinea) तथा उत्तरी क्विन्सलण्ड (Northern Queensland) के जगलो मे पाया जाता ह

नर ओर मादा दोनो ही सुन्दर होते ह इनके मिर आर गरदन पर इन्द्रधनुषी रग होते ह इनके परा स आस्ट्रेलिया म बहुत-सी सुन्दर वम्तुए बनाइ जाती हें जिनमे गलीच आर गहने मुख्य आकपण रखत ह

यह बडा खतरनाक पक्षी ममझा जाता ह इमकी आतंरिक पदागुलि (पाव की उगली) पर एक काटा हाता ह जिमकी ठाकर मनुष्य का पट फाड सकती ह यह पक्षी कम प्रकाश मे रहना पमद करता ह धूप इमे अच्छी नही लगती इसीलिए प्राय जगला म ही रहता ह इसकी आवाज इतनी तज हाती ह कि एक किलोमीटर से भी सुनी जा मकनी ह यह वहत दूर तक की चीज स्पष्ट देख मकना ह इमक भागने की रफ्तार 30 किलोमीटर प्रति घटा से भी अधिक ह इसका भोजन फल-फूल अनाज पत्तिया आर छाटे-छोट कीडे इत्यादि हैं

मादा 3 म 6 अड तक देती ह जो गड्ढ मे पत्तिया म बने घोसल मे रखे रहते हें अण्डा 13 सेमी लम्बा होता ह नर ही अण्डे मेता ह अण्ड मेन की अवधि 50 दिन हाती ह

एमू (Emu)



पूर्वीय आस्ट्रेलिया का एमू

शुतरमुर्ग के बाद विशालकाय न उड सकने वाला पक्षी एमू (emu) ही ह इसकी ऊचाई लगभग दो मीटर तक होती ह रग मटमैला और पैर बहुत मजबूत होते हैं किसी समय यह आस्ट्रेलिया मे हर जगह पाया जाता था, परतु अब केवल पूर्वी आस्ट्रेलिया (Eastern Australia) मे ही पाया जाता हे यह 4 स 10 तक के छोटे-छोटे झुण्डो म रहते हैं

यह बहुत तेज दौडता है इसकी दौडने की रफ्तार 50 किलोमीटर प्रति घटा तक ह शुतुरमुर्ग की भाति इसकी पैर की ठोकर भी बडी खतरनाक होती हे

पक्षियो म आमतौर पर नर कुछ बडा होता है, परतु इन पक्षियो म मादा नर की अपेक्षा कुछ बडी होती है नर-मादा दोनो मे गले के पास एक थैली जसी होती ह, जिसमे हवा भर कर यह ढोल जसी आवाज निकालता है इसका भोजन फल-फूल घास, अनाज और वनस्पति इत्यादि ह

शुतुरमुर्ग और रिआ के विपरीत इनमे एक नर एक ही मादा से वैवाहिक सम्बध रखता ह ये भी अपने घोसले गड्ढे मे बनाते ह, जिन मे सात से तेरह अण्डे तक होते है नर आठ सप्ताह तक अडे सेता ह

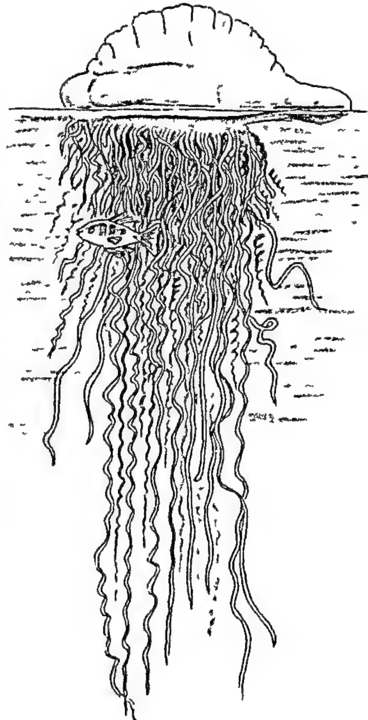
पुर्तगाली मैन-ओ-वार (Portuguese man 'o-war)

फिर्मेलिया (physalia) एक जली फिश (jelly fish) ह जो पुतगाली मन-आ-वार भी कहलाती है यह साइफोजोआ (scyphozoa) वर्ग आर छाते की शक्ल की मछली ह जा तर नही सकती बल्कि पानी मे बहती रहती ह यह लगभग 2 मीटर व्यास (diameter) की होती ह इसका शरीर खाखला आर जली (jelly) की तरह नम होता है, जिसके नीचे मूछे सी लटकी रहती ह जिन्ह श्वसनमूल (air sac) या न्यूमटोफोर (pneumatophore) कहते ह इनकी लम्बाइ लगभग 60 फट होती ह यह श्वसनमूल या मूछे सूड का काम करती ह आर निकट की वस्तुआ को खीच कर उदर मे पहुचा दती ह परतु ये बहुत खतरनाक होती ह इनके सिर विच्छू की तरह डक मारते ह

इस कोमलागी मछली क भयानक श्वसनमूला के नीचे प्राय एक मछली निवास करती ह आर आश्चर्य की बात यह हे कि यह सुरक्षित रहती ह पुतगाली मेन-आ-वार न तो उस डक मारती ह आर न खाने की चेष्टा करती ह आर मछली शातिपूवक रहती हे, क्योकि डकयुक्त श्वसनमूला क क्षत्र मे अन्य समुद्री जन्तु आने का साहस नही करते

मछली इस उपकार का वदला इस प्रकार चुकाती ह कि थाडी दूर जा कर अपने आकार मे कुछ छोटी मछलिया पक्ड लाती ह आर उन्ह स्वय नही खाती बल्कि अपनी मित्र पुतगाली मन-आ-वार का पश कर दती ह जव उसक मित्र के उदर मे यह शिकार की मछली अधपची हो कर छोटे-छोटे टुकडा म वट जाती ह ता वह अपना उदरमुख खोलता ह आर उसकी मित्र मछली उन टुकडो को खा जाती ह

यह कमी विचित्र दास्ती ह कि एक मित्र रक्षा करता ह ता दूसरा उसके आहार का प्रवध करक अपनी मित्रता का प्रमाण दता ह य एस जन्तु ह कि उनका एक दूसरे क विना जीवित रहना ही मुश्किल ह यह वात रिकाड की गइ ह कि पुतगाली मन-आ-वार मछली क साथ रहने वाली मछली कभी-भी अलग नही रह पाती यदि रहन की काशिश भी करती ह तो उस अन्य वडी मछलिया तुरत खा जाती हैं



'पुतगाली मैन-आ वार एक जैली फिश'

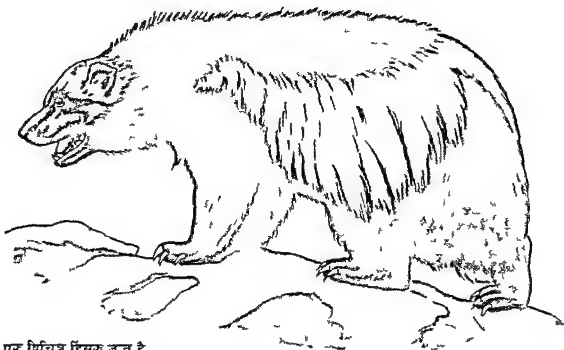
बुद्धिमान वुल्वेराइन (Wolverine)

वल्वेराइन या ग्लटन (glutton) एक असाधारण हृष्ट-पुष्ट हिंसक पशु है इसका शरीर भालू की भांति लम्बे और घने बालों से ढका होता है यह सभी मस्टेलाइड्स (mustelids) में बडा होता है इसका वजन 20 से 30 किलोग्राम होता है शरीर की लम्बाई 700-830 मिमी तथा दुम की लम्बाई 160-250 मिमी होती है इसकी उम्र 15-18 वर्ष तक रिकार्ड की गई है वुल्वेराइनों की संगम-ऋतु (mating season) ग्रीष्म के अंत से शुरू होती है और शीत ऋतु के समाप्त होने या आधे बसन्त तक बच्चों का जन्म हो जाता है

यह व्यापक रूप से यूरेशिया (Eurasia) के टैगा (Taiga) और टुड्रा क्षेत्रों और उत्तरी अमेरिका में पाया जाता है अमेरिकन क्षेत्रों में यह सबसे ज्यादा कनाडा के उत्तरी जंगलों में दिखाई देता है

वुल्वेराइन कनाडा के उत्तरी जंगलों का प्रसिद्ध जानवर है यह धूर्त, श्रमिक और क्रूर जानवर बहुत ही बुद्धिमान होता है यद्यपि यह बुलडॉग के बराबर ही होता है किन्तु अपनी चतुरता और शक्ति से हिरन तक को मार देता है जंगली जानवर इससे डरते हैं, यहां तक कि शेर और भालू भी इससे बचने की कोशिश करते हैं यह बिल्कुल नहीं डरता और अपना काम निकालने के लिए कुछ भी कर गुजरता है

इसके भोजन का भी कुछ न पूछिए, जो सामने पड जाए वही इसका भोजन है भूखा रहना तो यह जानता ही नहीं चोरी करने में बडा माहिर है—जानवर हो या मनुष्य दोनों का भोजन चुरा लेता है प्रजनन-ऋतु (breeding season) के अतिरिक्त वुल्वेराइन अकेले ही जीवन गुजारता है इसके शिकार का क्षेत्र 1,000 वर्ग किलोमीटर से भी अधिक होता है दिन हो



वुल्वेराइन एक विचित्र हिंसक जन्तु है

या रात यह हर समय शिकार की खोज मे रहता ह

जगली जानवरा का पकडने वाले बहेलिये वुल्वेराइन से बहुत परेशान रहते हैं यह उनकी जानवर पकडने की योजनाए निष्फल तो करता ही ह साथ ही सामान भी चुरा ले जाता है बहेलिये सदिया के लिए जो खाद्य-सामग्री बचा कर रखते हैं, उस वल्वराइन स बचा कर रखना बडा मुश्किल हा जाता है

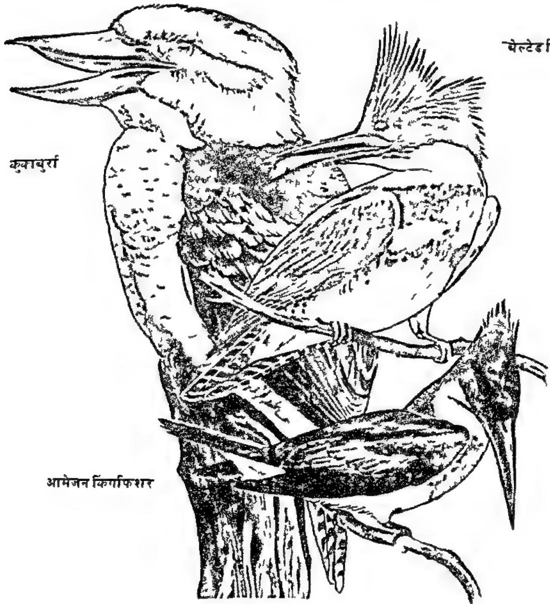
बेचारे बहेलिये यदि जानवरो को पकडन क लिए जाल या फदो की दखभाल करने के लिए जरा बाहर गए तो वुल्वेराइन तुरत उनके सामान पर छापा मारता हे जितना खा सकता ह खा जाता ह कुछ चुरा कर साथ ल जाता हे और अवसर मिलता ह तो काफी सामान बर्बाद कर देता हे अकमर ऐसी घटनाए भी देखने को मिलती हैं जिनमे एक वुल्वेराइन ने कई दिनो तक मेहनत करके भारी लट्ठो स रक्षित खाद्य-भण्डार को बबाद कर दिया था अपन स दस गुना भारी लट्ठा का घसीट कर रास्ता बनाया ओर जब एक फट माटा लट्ठा नही हटा तो उसे चबा ही लिया यह अपनी हार तो मानता ही नही ओर उस समय तक कोशिश करता हे जब तक कि सफल नही हो जाता

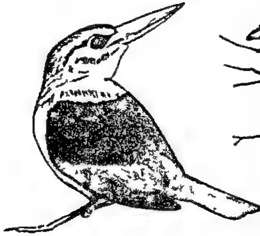
कोइ-कोइ वुल्वेराइन तो इतना अनुभवी आर बुद्धिमान होता हे कि बहेलियो के हर कायक्रम पर दृष्टि रखता ह जाल और फदे के निरीक्षण के समय चुपके-चुपके पीछे लगा सब कुछ देखता रहता ह जब बहेलिया चला जाता हे तो यह जाल ओर फदा मे लगा भोजन खा जाता हे आर साथ ही अपनी होशियारी मे जाल ओर फदो मे फसने मे भी बचा रहता ह आर यदि गलती से कभी फदे मे फस कर उसकी उगली जख्मी हा जाती हे तो फिर उसके क्रोध का कुछ न पूछिए—वह फदे को ही उठा कर कही नदी या नाले मे फेक देता ह या उसे जमीन खोद कर गाड दता हे

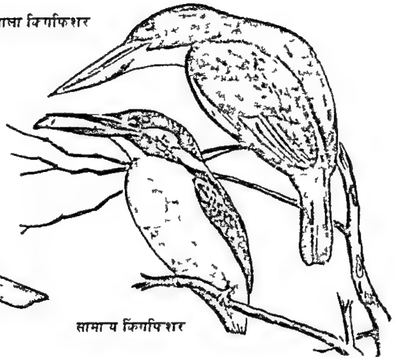
किंगफिशर (Kingfisher)

विश्व मे किंगफिशर की लगभग 80 जातिया (species) हैं इसका गण कोरेसीफार्मिस तथा परिवार ऐलसेडिनाइडी है इनमे से अधिकाश उष्णकटिबन्धीय प्रदेशो म आर खासतार पर दक्षिणी प्रशान्त महासागर के द्वीपो मे पाई जाती ह किंगफिशरो के परिवार म मबसे प्रसिद्ध आर वडी आस्ट्रेलिया की कूकाबुरा (kookaburra), या लाफिंग जेक्काम (laughing jackass) ह, जिसकी लम्बाई 38-40 सेमी होती ह ये चिडिया प्राय सुन्दर रगो की होती ह भारतीय किंगफिशरो मे हम पाइड किंगफिशर क बार मे बताएगे

यह चिडिया मना से कुछ वडी ओर कबूतर से कुछ







छोटी होती ह इस पर चित्तिया आर काली धारिया पाइ जाती ह चोच कटार क आकार की आर काफी मजबत भी होती ह उडत समय चिरुक-चिरुक की मधुर आवाज निकालती ह पानी क आसपास भारत म सभी जगह पाइ जाती ह इसका मछली पकडन का ढग वडा विचित्र ह आर इसीलिए इस किर्गाफिशर कहा जाता ह जब इस मछली पकडनी होती ह तो यह पानी स लगभग 30 फट ऊपर पख थामे हुए मडराती ह आर जस ही मछली इसकी सीमा मे आती ह दाना पख फला कर मछली पर झपटती ह मछली पकड कर यह किसी ऊची जगह या चट्टान पर बैठ जाती ह आर उसे मार कर निगल जाती ह

इसकी नीडन-ऋतु अक्टूबर स मइ क बीच होती हे मादा पाच या छ अण्ड देती ह नर-मादा दोना ही घोसला बनाने म एक दूसरे की मदद करते ह यह घोसला किसी जलधारा या खाइ क किनारे बनाई गइ क्षतिज सुरग की तरह होता ह इस सुरग के अन्त मे अड-कक्ष होता ह, जिसमे पाच या छ सफेद अड होत ह नर-मादा अण्ड सन आर बच्चो क पालन-पोषण मे भी एक-दूसर क सहयोगी होत ह।

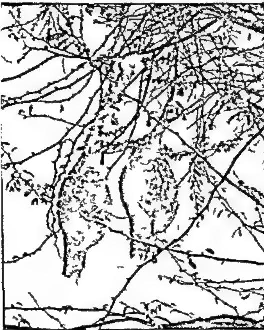
बया (Weaver bird)

प्लासाइनी प्रजाति का यह छोटा-सा पक्षी घरनू गोरय्या म मिलता- जलता होता ह इसका रग भूरा गेहुआ होता ह ऊपर गहरी धारिया आर नीच का हिस्सा सफद गेहुआ होता ह इसकी दम छोटी चाडे सिर वाली शकरूपी आर काफी मजबूत होती ह भारत म सभी जगह पाया जाता हे इसकी तीन प्रजातिया होती ह

आपने बबूल क वक्ष या पानी पर यक ताड क वक्षा पर रसायनशाला म प्रयक्त होन वाल रिटॉट (retort) की शक्ल क घोसल देख होग य विचित्र घोसले इसी चालाक पक्षी क बनाए हुए होत ह

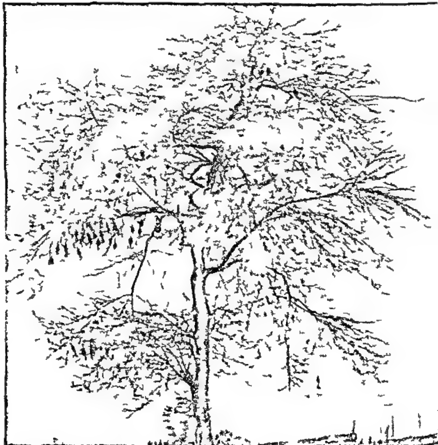
बरसात का मासम शरु होत ही यह पक्षी घोसला बनान लगत ह घोसला बनान का काम केवल नर करता ह अपन-अपन घोसल बनान म इनकी परी टोली लगी रहती ह चू-चू करत पख फडफडाते हुए य अपने काम म लगे रहत ह

बया घोसला बनान की कला को खूब जानता ह वह पहल किसी मजबूत टहनी क चारा आर चिथड आर धाग इत्यादि लपट कर एक आधार बना लेता ह फिर उसम लटकत हुए धागा या टहनिया का आडा जाड कर फदा-सा बनाता ह इस प्रकार वह घोसल का ढाचा तयार कर लता ह ढाचा बनन के बाद फदा क ऊपर एक दीवार बना कर चारा आर स बद कर दता ह अब नीचे की आर दा कमर बनाता ह, जिसम एक अण्ड-कक्ष होता ह, जा बद रखा जाता ह आर दूसरा इसक कुछ ऊपर होता ह जिसमे बाहर आने-जान क



बयो के घोसले बबूल ताड आदि वक्षो की डालिया मे रिटॉर्ट की तरह लटकते हुए दिखाई देते हैं ये अपने घोसल प्राय उन खेतो के करीब बनाते है जहा उन्हे अनाज के दाने आसानी से मिल जाए

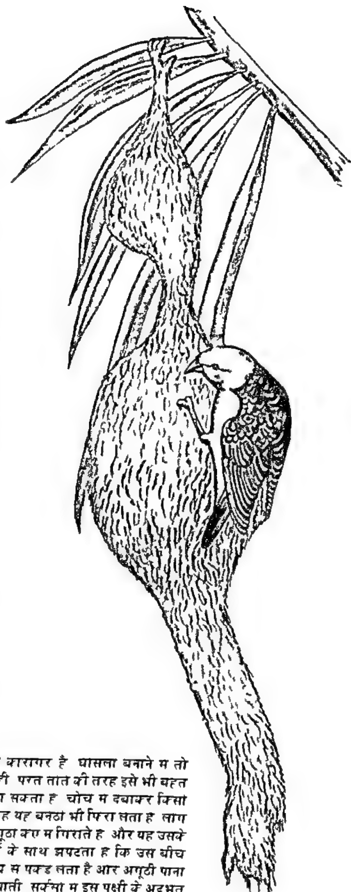
बबूल के एक वक्ष पर बया की कॉलोनी



लिए द्वार होता है।

जब घोंसला तैयारी पर होता है तो मादाएं आनी शुरू हो जाती हैं जो घोंसला बनने के दौरान दूर रहती थीं। यह प्रजनन-ऋतु होती है और नर इन दिनों घोंसलों पर आकर्षक दिखाई देते हैं और मादाओं के आसपास मंडराते हुए प्रेम प्रदर्शन करते हैं। लेकिन मादाएं इनकी ओर कोई ध्यान नहीं देतीं। वे बारी-बारी से सभी घोंसलों में जाकर उनकी अच्छी तरह जांच करती हैं और संतोष हो जाने पर ही किसी घोंसले को पसंद करती हैं। जिस मादा को जो घोंसला पसंद आ जाता है, उसी में वह अपना आसन जमा देती है। घोंसले का मालिक नर समझ जाता है कि उसको मादा ने पति के रूप में स्वीकार कर लिया है। अब वे दोनों पति-पत्नी के रूप में रहने लगते हैं। पति घोंसले का बाकी काम पूरा करता है और पत्नी अण्ड-कक्ष को आवश्यकतानुसार ठीक करती है। घोंसला बिल्कुल तैयार हो जाने पर पत्नी अण्डों पर बैठ जाती है। नर के पास अब कोई काम नहीं होता, इसलिए वह किसी करीब की ही डाली पर दूसरा घोंसला बनाने में लग जाता है। शायद उसे बेकार बैठना पसंद ही नहीं है। जब घोंसला तैयारी पर होता है तो कोई दूसरी मादा वहां आकर आसन जमा लेती है और यह उसकी दूसरी पत्नी होती है। नर तीन या चार घोंसले बनाता है और इस प्रकार उसकी तीन या चार पत्नियां होती हैं।

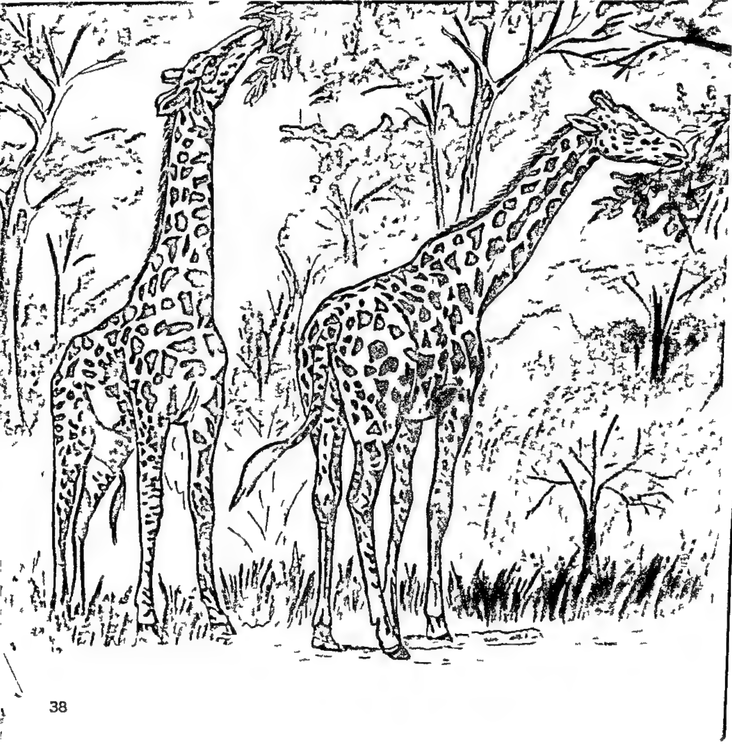
आप सोचते होंगे कि बया अपने पहले ही प्रजनन-काल में इतना जटिल और सुन्दर घोंसला कैसे बना लेता है जबकि उसे किसी प्रकार का प्रशिक्षण नहीं मिलता और न ही माता-पिता कुछ सिखाते हैं। वास्तव में एक जाति हमेशा एक ही तरह का घोंसला बनाती है जिसकी प्रेरणा उसे सहज वृत्ति (instinct) से मिलती है जो वंशानुगत होकर आने वाली पीढ़ियों तक चलती रहती है।

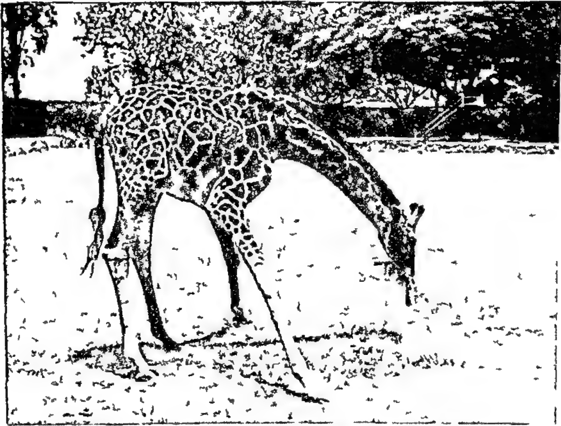


बया एक कुशल कारीगर है। घोंसला बनाने में तो इसका जवाब नहीं। परन्तु तोते की तरह इसे भी बहुत कुछ सिखाया जा सकता है। चोंच में दबाकर किसी पहलवान की तरह यह बनैठी भी फिरा लेता है। लोग इसे दिखाकर अंगूठा कुएं में गिराते हैं और यह उसके पीछे इतनी फुर्ती के साथ झपटता है कि उसे बीच रास्ते में ही चोंच से पकड़ लेता है और अंगूठी पानी तक नहीं पहुंच पाती। सर्कसों में इस पक्षी के अद्भुत करतब भी देखने को मिलते हैं।

जिराफ (Gıraffe)

जिराफ ससार का सबसे ऊचा जीवित स्तनपायी जानवर है जो अब केवल उष्णकटिबधीय घास के मैदानो और अफ्रीका म सहारा के दक्षिणी रेगिस्तानी क्षेत्रा म पाया जाता है आमतौर पर इसकी ऊचाई 5 5 मीटर होती है, परतु कुछ जिराफ 6 09 मीटर ऊचे भी देखे गए हैं कुछ शिकारियो न 7 मीटर ऊचे नर जिराफो को मारन का भी दावा किया है परतु इसका कोई ठोस सबूत नही मिलता





जिराफ घास चरने या पानी पीने के लिए अपनी अगली टागो को मोड लेता है

लम्बी गर्दन और लम्बी टागे तथा धूप-छाव की तरह शरीर पर पडे रगीन डिजाइनो ने इस जन्तु को बडा विचित्र बना दिया है नर और मादा दोनो के माथे पर त्वचा से ढके दो सीग होते हे घोडे की भाति इसके पार्श्वांगुलि (lateral toes) नही होती पूछ पर बाल होते हैं जीभ (tongue) लचीली और बहुत पतली होती है, जिसकी लम्बाई 45 सेमी होती हे यह अकापी (okapı) तथा हिरन जाति का होते हुए भी इतना विशालकाय केसे बन गया जबकि अन्य स्तनपायी जानवरो की भाति इसकी गर्दन मे भी सात ग्रीवी कशेरुका (vertebrae) होती है लेमार्क (Lamarck) का विचार है कि जिराफ वृक्षो की पत्तिया खाने के लिए अपनी गर्दन बराबर ऊची करने की चेष्टा करता रहा, परिणामस्वरूप गर्दन की कशेरुका की लम्बाई बढ़ गई और जिराफ एक अद्‌भुत जानवर बन गया

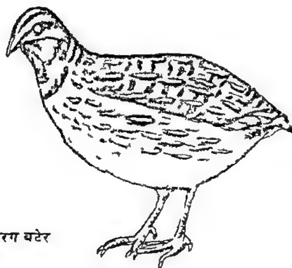
जिराफ प्राय वृक्षो की पत्तिया खाता है उसकी लम्बी गर्दन बबूल और माइमोसा (mımosa) प्रजाति के वृक्षो की ऊची- से ऊची पत्तियो को तोडकर खाने मे सहायक सिद्ध होती हैं जिराफ को बहुत अधिक भोजन की आवश्यकता पडती है क्योकि इसकी आत की लम्बाई 270 फुट (82 29 मी) होती है

वृक्षो मे खडा हुआ जिराफ दिखाई नही देता बिल्कुल अदृश्य हो जाना इसका अद्‌भुत लक्षण है घास चरने या पानी पीने के लिए यह अपनी अगली टागो को मोड लेता है ऊट की भाति यह काफी समय तक बिना पानी पिये रह सकता है यह 30 मील (48 29 किमी) प्रति घटे की रफ्तार से दौडता हे ओर आश्चर्य की बात यह है कि कोई आवाज नही होती दुश्मन पर अपनी पिछली टागो से कडी चोट करता है

मादा जिराफ एक बार म एक ही बच्चा देती है बच्चा चोदह महीने गर्भ मे रहता है नवजात जिराफ की ऊचाई 2 मीटर होती है

बहुपतिका चिडिया— सारग बटेर

(Polyandrous bird—Bustard quail)



सारग बटेर

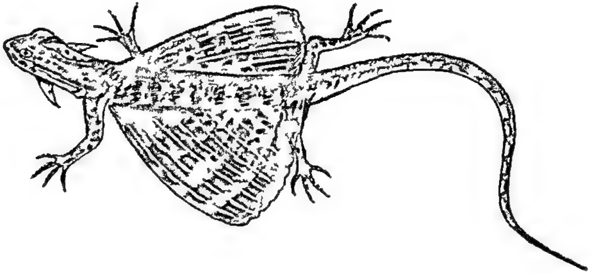
चिडिया म प्राय नर ही अधिक सुन्दर होते ह आर मादा का अपनी आर आकपत करते ह मादा को हासिल करन क लिए प्रतिद्वन्द्वी नरा से घोर युद्ध करत ह परतु टर्नीमिडी परिवार की सारग बटेर (बस्टड क्वेल) इसक विपरीत अनाखी ही चिडिया ह इनम नर की अपक्षा मादा बडी आर अधिक रग-बिरगी हाती ह।

मादा बडी चतुर हाती ह वह नरा के साथ बडी दर तक अनुरजन क्रियाए करक उनका मुग्ध कर लती ह नर को अपना बनान के लिए अन्य मादाआ के साथ झगडा भी करती ह उन्ह डराने-धमकान तथा नर का अपनी आर आकर्षित करन क लिए ढोल जसी भारी ड-र-र-र की आवाज करती रहती है आर आखिर मनपसद नर का किसी न किसी प्रकार हासिल कर ही लेती ह अब दाना कछ समय तक पति-पत्नी क रूप म रहत ह लेकिन मादा बहुत बेवफा हाती ह अण्ड दन क पश्चात् पति की बिल्कुल चिता नही करती ओर उस छाडकर नय प्रमिया की तलाश म निकल जाती ह बेचारा नर अकला रह जाता ह अब अण्ड सने आर बच्चों के पालन-पापण की जिम्मदारी उसी की हाती ह वह इस अपना कर्त्तव्य समझ कर बडी खूबी ओर लगन के साथ निभाता है

मादा का अपने पति या अण्ड-बच्चो की कोइ चिन्ता नही होती वह सब कुछ भुला कर किसी दूसरे नर को अपनी ओर आकर्षित कर लती है यही हाल दूसर पति का भी हाना ह वह भी पहले नर की भाति बाद में अकला ही अण्ड सेता ह आर बच्चो की परवरिश करता ह और मादा तीसरे पति की तलाश में निकल जाती ह इस प्रकार एक क बाद एक कइ नर मादा म नाता जोडत ह लकिन उल्लखनीय बात यह ह कि एक समय म मादा क पास एक ही नर रहता हे इनकी प्रजनन-ऋतु काफी समय तक रहती ह

बहुपतित्वशील चिडिया म चित्रत चहा (पण्टड स्नाइप) आर पिह (जकाना) की दा जातिया भी ह।

उडनेवाली छिपकली
(Flying dragon)



मद्रास, मलाया प्रायद्वीप, जावा, सुमात्रा तथा बोर्निया द्वीपो के घने जगलो मे उडनेवाली छिपकलिया (flying dragon 'Draco melanopogon') पाई जाती हे इनकी लम्बाई लगभग 25 4 सेमी (10 इच) होती हे और पूछ की लम्बाई 5 इच होती है इन छिपकलियो का शरीर गहरा भूरा होता ह, जिस पर काले धव्वे तथा धारिया होती ह तथा पख गहरे नारगी रग क होते हे, उनम भी कई-कई काली धारिया हाती ह इनकी पसलिया से जुडी हुइ झिल्ली फेलने पर उनके लिए पेराशूट जसा काम करती हे ये उडते-उडत वायु मे ही पतिगो को पकड लेती हें आर एक वृक्ष से दूमर पर आसानी स पहुच जाती हें इस जाति की छिपकलिया 15 मीटर (50 फुट) स भी अधिक ऊचाइ तक वायु म उडती दखी गई हे

उडने वाली छिपकलियो मे पिछली 6-7 पसलिया धड के बाहर दोनो ओर त्वचा से बाहर निकली रहती हें ओर इन पसलियो के बीच की झिल्ली उडते समय पराशूट की तरह फल जाती हे परतु विश्राम करते समय इनकी त्वचा और पसलिया कागज के जापानी पख की तरह गदन ओर पीठ के दोना ओर सिकुड जाती ह चमगादड तथा उडने वाली छिपकली म विशप अतर यह ह कि जहा चमगादडो मे हाथ पख के रूप मे परिवर्तित हो गए हें, वहा इनमे फेलती हुई झिल्ली को साधकर पसलिया उडने मे मदद देती हैं।

तितली जस रगीन पख होन के कारण इनक शत्रु इन्हे नही देख पाते आर ये आसानी से रग-विरगे फूला म छुप जाती हें।

सामान्य ग्रे हॉर्नबिल (धनेश)
(Common grey hornbil)

ब्यूसेरोटाइडी (bucerotidae) कुल का पक्षी जो प्राय अफ्रीका आर एशिया मे पाया जाता ह चील के आकार का एक भद्दा परतु विचित्र पक्षी ह जिसका रग भूरा-ग्रे हाता ह इसकी अनाखी चाच काफी बडी मुडी हुइ आर काली तथा सफद होती ह चोच के ऊपर एक विशेष टोपी-सी होती ह मादा म यह टोपी

नर हॉर्नबिल अपनी मादा को भोजन लाकर देता है





अफ्रीका और एशिया का विचित्र पक्षी हॉर्नबिल (धनेश)

अपक्षाकत छाटी हाती ह इसकी दम लम्बी हाती ह

मालावार, राजस्थान क कुछ क्षेत्रा आर असम का छाडकर भारत म सभी जगह पाया जाता ह यह एक पडो पर निवास करन वाला पक्षी ह आर गाव क आसपास या सडक क किनारे अजीर बरगद आर पीपल क वक्षा पर रहता जाता ह इसकी क-क-की जसी कडकुडाहट आर चहचहाट वडी तज होती ह

इस पक्षी क अण्ड दन तथा बच्चा क पालन-पापण का तरीका वडा अनोखा हाना ह प्रजनन-ऋतु शुरु होते ही प्रदशन तथा अनरजी क्रियाआ तथा जाडा बाधने क समाराहा क पश्चात मादा किसी वृक्ष के तन क खाखले हिस्स म जा कर वठ जाती ह जहा वह दा या तीन अण्ड दती ह नर मिटटी लाता ह आर मादा उस अपनी विष्ठा (बीट) म मिला कर सीमट जसा पदाथ तयार कर लती ह अदर वठ ही बठ वह अपनी चाच का करनी क रूप म इस्तमाल करक इस सीमण्ट म प्रवश द्वार वद कर दती ह कवल एक दरार-सी छाड दती ह ताकि नर उसम स उस भाजन पहचा सक इस काम म दा-तीन दिन का समय लगता ह प्रवश-द्वार का प्लास्टर इतना मजवत हाता ह कि उसका काइ भी दुश्मन आसानी से घोसले की दीवार तोड कर अदर नही जा सकता

मादा आराम से उस समय तक अदर ही रहती ह जव तक कि वच्चे अण्डा से वाहर निकल कर दस-पन्द्रह दिन के नही हा जात इस दारान नर अपना कत्तव्य निभाता ह, अपनी पत्नी के खाने के लिए फल, वड कीडे, छिपकली आर चूहे आदि लाकर दता ह खुद अपना पेट भरन आर मादा क लिए भाजन जुटान क लिए उसे वहुत मेहनत करनी पडती ह इस कारण वह काफी दुवला आर कमजार हा जाता ह मादा क य दिन आराम से व्यतीत हात ह, वह स्वस्थ आर माटी हो जाती ह

अण्डा स बच्चे निकलने क लगभग पन्द्रह दिन पश्चात् मादा धीर- धीरे प्रवेश-द्वार की दीवार तोड कर वाहर आ जाती ह नर-मादा बच्चा की सुरक्षा क लिए दीवार की फिर स मरम्मत कर लते ह अव दोनो ही उस समय तक अपन बच्चा का पालन-पोषण करते ह, जव तक व अपनी रक्षा स्वय करन के याग्य नही हा जात

स्लॉथ (Sloth)

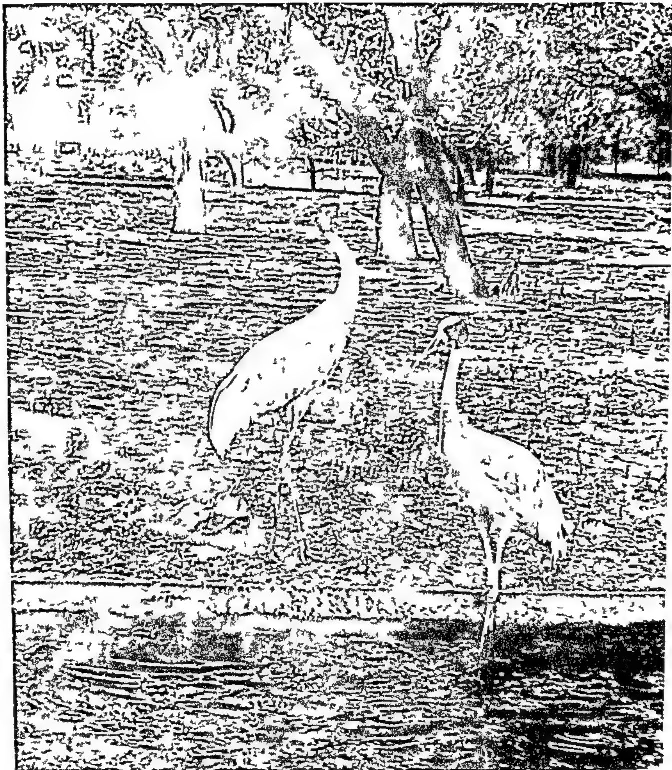


स्लॉथ शक्ल-सूरत और स्वभाव मे एक बिल्कुल ही विचित्र स्तनपायी ह जो अमेरिका के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रो म पाया जाता हे य दो किस्म के होते ह—दो उगलियो वाले स्लॉथ जिनके अगले परो म दो-दो उगलिया और पिछले परो म तीन-तीन उगलिया होती ह तीन उगलिया वाले स्लॉथ, जिनके चारो परो मे तीन-तीन उगलिया होती ह दोनो किस्म के स्लॉथो मे बाल लम्बे, मोटे और घने होते ह जिनम एक हरी-सी चमक होती हे दो उगलियो वाले स्लॉथ सभी प्रकार के फल-फूल और पत्तिया खाते ह जबकि तीन उगलियो वाले स्लॉथ केवल सक्रोपिया (cecropia) वृक्ष की पत्तिया पर ही गुजारा करते हैं

यह बडा सुस्त जानवर ह तथा अपना समस्त जीवन वृक्षो पर ही गुजार देता ह स्लॉथ डाल पर उल्टा लटका हुआ सोता रहता ह और उल्टा लटकता हुआ ही बहुत धीरे-धीरे एक डाल स दूसरी पर जाता ह फल-फूल और पत्तिया म ही अपना पेट भर लेता है, पानी पीने के लिए भी वृक्ष स नही उतरता यदि आप इसको वृक्ष स उतार कर जमीन पर डाल दे तो यह हाथ-पैर फैलाकर चित लेट जाता है और उठने या भागने की बिल्कुल कोशिश नही करता इसकी यह हालत बडी हास्यजनक होती ह

इतना आलसी जीव आज भी जगलो मे जीवित है शायद इसलिए कि इसके हरे बाल इसको पत्तिया म छुपा लेते हैं और शत्रु आसानी से देख नही पाता इसके बालो के हरे रग का एक और भी कारण ह—यह पेड पर उल्टा लटका रहता ह वर्षा के पानी मे लगातार भीगने से बालो म नन्हे-नन्हे पौधे उग आते हैं और यह एकमात्र ऐसा जीव ह जो अपने शरीर पर ही बगीचा-सा लगा लेता ह

स्लॉथ थलीय स्तनपोषी जीवो म सबसे सुस्त रफ्तार जीव हे भूमि पर इसकी औसत रफ्तार प्रति मिनट 6 से 8 फुट (1 83 से 2 44 मी) के बीच होती है वृक्षो पर इसकी रफ्तार अवश्य कुछ तेज होती ह जिसका अनुमानित औसत 15 फुट (4 57 मी) प्रति मिनट होता ह



मुगल बादशाह जहांगीर ने सारसों का विशेष अध्ययन किया था और वह इनके दाम्पत्य प्रेम से विशेष रूप से प्रभावित हुआ था यदि इनके जोड़े में से एक की मृत्यु हो जाती है तो दूसरा भी खाना-पीना छोड़ देता है और अधिक दिनों तक वह जीवित नहीं रह पाता

सबसे बडा भारतीय पक्षी सारस क्रेन
(Sarus crane)

भारतीय वडे पक्षियो मे ग्रइफार्मिस (gruiformes) गण के और ग्रइडी (gruidae) परिवार क सारस क्रन का सबसे वडा कहा जा सकता ह यह पक्षी ऊचाइ म चार-पाच फुट यानी मनुष्य क वरावर होता ह इमका रग ग्रे होता है, पर तथा सिर लाल रग क आर पर रहित होते हैं नर-मादा लगभग एक जसे दिखाइ देत ह उत्तरी आर केन्द्रीय भारत म खती या दलदल क आस-पास या फिर अधिक पानी वाले खुल मदाना म पाया जाता ह पखा को धीर-धीरे लयवद्ध रूप मे फडफडा कर उडता ह

आमतोर पर इसका जोडा हमेशा एक दूसर के साथ रहता ह कुछ जगहो पर एक-दो वच्चा क माथ भी देखा गया ह इनमे एक दूसरे के प्रति गहरा प्रेम हाता हे पति-पत्नी का यह आदश प्रेम देखकर लाग इनको विल्कुल नही सताते आर इनकी सुरक्षा का ध्यान रखते हे ये पालतू पक्षियों की भाति मनुष्य के स्वभाव का समझते ह इसलिए मनुष्य से डर कर नही भागते

प्रजनन-काल मे इन पक्षियो म जसे जीवन की नई लहर-सी दाड जाती ह इनके जोड वडे सुन्दर नृत्य करते ह पखो को उठा कर आनद से झूमते, इठलाते, उछलते-कूदते एक दूसरे के गिर्द घूम-घूम कर अपना प्रेम प्रदर्शित करते हे कभी-कभी तो एक दूसरे के सामने झुक कर इस प्रकार अभिवादन करते हे मानो कह रहे हो—'हुजूर आपके लिए तो जान हाजिर हे'

इनका भोजन मुख्य रूप से वनस्पति पदार्थ, अनाज आर कीडे-मकोडे हे इनकी नीडन-ऋतु जुलाई स



सारस का मुख्य भोजन अनाज और कीडे-मकोडे है

दिसम्वर ह, ओर ये अपनी घामला दलदल या धान के खत के वीच म सरकण्डो तथा तिनका द्वारा वनाते ह, जा एक वडे पिण्ड क रूप मे होता ह घोसल म दो अण्ड होत ह नर-मादा दानो ही घासले आर अण्डा-वच्चा की रखवाली करते ह आर किसी जानवर का करीव नही आन दते

विचित्र स्तनपायी—एकिडना और बत्तखचोंचा

आस्ट्रेलिया एक ऐसा देश है जहां संसार में सबसे प्राचीन और विचित्र जन्तु किसी प्रकार बच रह गए हैं जब पृथ्वी पर प्राणियों का विकास हो रहा था ये विकास के मार्ग पर ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाए इसलिए इनमें कुछ लक्षण तो स्तनपायी जीवों के समान पाए जाते हैं और कुछ सरीसृप और पक्षियों के इन विचित्र अंडा देने वाले स्तनपायी जीवों में एकिडना और बत्तखचोंचा आते हैं

स्तनपायियों को तीन उपवर्गों में विभक्त किया गया है एकिडना और बत्तखचोंचा उपवर्ग प्रोटोथीरिया (prototheria) के जन्तु हैं जिनमें प्रारम्भिक स्तनपायी आते हैं स्तनपायियों का विकास सरीसृप से हुआ है इसलिए इस समूह के जन्तुओं में सरीसृप के लक्षण भी पाए जाते हैं—ये अण्डे देते हैं नर में वृषण उदरगुहा में ही स्थित होते हैं स्तनपायियों की भांति इस उपवर्ग के जन्तुओं में स्तन ग्रंथियां होती हैं परन्तु इनमें विकसित स्तनपायियों की भांति चूचुक नहीं होते अण्डों से बच्चे निकलने के बाद मां का दूध पीते हैं शरीर पर बाल भी पाये जाते हैं

कंटीला चींटीखोर या एकिडना
(Spiny anteater or Echidna)

एकिडना 45 सेमी लम्बा एक विचित्र स्तनपायी है जो आस्ट्रेलिया, न्यूगिनी तथा उनके निकटवर्ती द्वीपों में पाया जाता है इसकी पीठ पर पीले कांटे होते हैं जिनका रंग सिरे पर काला होता है कांटों के बीच-बीच में बाल भी होते हैं पेट पर कांटे नहीं केवल बाल ही पाये जाते हैं टांगें छोटी तथा नाखून मजबूत और तेज होते हैं यह अपने तेज नाखूनों से सख्त जमीन को भी बड़ी तेजी से खोद डालता है पिछली टांगों की उंगलियां चलते समय बाहर की ओर उल्टी और अगले पैर की सामने को मुड़ी होती हैं इसकी जीभ लम्बी होती है तथा बाहरी कान नहीं होते

एकिडना का मुख्य भोजन चींटियां हैं इसकी जीभ चिपचिपी होती है, जो इसके लिए बहुत उपयोगी है जीभ निकालते ही सैकड़ों चींटियां उस पर चिपक जाती हैं

इस अद्भुत स्तनपायी की मादा अण्डे देती है लेकिन



कंटीला चींटीखोर या एकिडना

अपने अण्ड किसी घोसले मे नही रखती बल्कि इन अण्डो का वह अपने शरीर मे बनी एक थली मे रख लेती है वही समय आन पर बच्चा निकलता ह बच्चा कई सप्ताह तक उस थली मे बद रहता ह, तत्पश्चात् मादा उसे किसी सुरक्षित जगह रख देती ह जहा कुछ समय पश्चात् वह चलने-फिरने के योग्य हो जाता ह

इसके शरीर के काटे देखकर दुश्मन इस पर आक्रमण करने से हिचकिचाता हे परतु एकिडना स्वय भी अपनी रक्षा करना जानता है, खतरा महसूस होते ही लिपटकर गोल हो जाता ह आर देखने मे एक कटीला-पाधा नजर आने लगता ह इसके शत्रु धोखा खा जाते हें

बत्तखचोंचा या प्लेटीपस
(Duck-billed or platypus)

'डकबिल' या 'बत्तखचोचा' जिसे 'प्लेटीपस' भी कहते हें,पूर्वी आस्ट्रेलिया ओर टस्मानिया मे नदियो, झीलो तथा तालाबो क किनारे पाया जाता है इसके शरीर की लम्बाई 50 8 सेमी (20 इच) होती है 6 35 सेमी (2½ इच) लम्बी ओर 5 08 सेमी (2 इच) चोडी बत्तख जैसी चोच तथा पेरो की उगलिया के बीच मे झिल्ली होती हे, जिससे तैरने मे मदद मिलती ह

यह अपना बिल पानी के किनारे बनाता है, जिसकी लम्बाई 15 24 मी (50 फुट) तक होती है बिल के प्राय दो दरवाज होते ह—एक पानी के भीतर ओर दूसरा जमीन के ऊपर जो घास-फूस आर पत्तियो से ढका रहता ह बिल के अतिम सिरे पर एक छोटी-सी कोठरी यानी अण्ड-कक्ष भी होता हे,जिसमे बिछी हुई घास पर दो या तीन अण्डे रखे होते हें अपने दुश्मनो को धोखा देने के लिए यह अपने बिल मे नकली सुरगे भी बना लेता है

यह असाधारण प्राचीन स्तनपायी रात मे, बत्तख की तरह अपनी चौडी चोच से नदी की मिट्टी और बालू को कुरेद-कुरेद कर कीडे-मकोडे, सीपी और घोघे आदि खाता हे

अजीब बात यह ह कि बचपन मे बत्तखचोचा के छोटे-छोटे दात होते ह, जो जवान होने से पूर्व ही टूट जाते हें बच्चे जब अण्डा से निकलते हैं तो मादा उनको अपनी दुम से पेट पर चिपकाकर दूध पिलाती है इन जन्तुओ मे स्तन नही होते बल्कि मादा के पेट पर बारीक छेद होते हे, जिनसे दूध निकलता है

इन विचित्र जन्तुओ के शरीर मे मल और मूत्र को बाहर निकालने के लिए एक ही रास्ता होता हे, इसीलिए ये एकछिद्री कहलात हें



बत्तखचोचा या प्लेटीपस

परजीवी कुक्कू (Cuckoo) कोयल और पपीहा

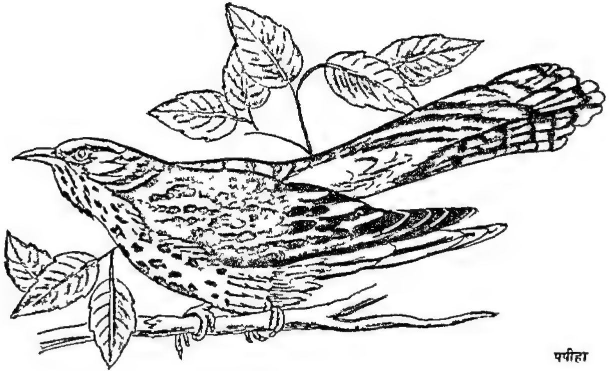
'कायल आर पपीहा कक्कू परिवार क मुख्य 'परजीवी ह परजीवी इनको इसलिए कहा जाता हे क्याकि य अपना घोसला नही बनाते आर वेचारे किसी दूसरे पक्षी क बने बनाए घासले म अण्डे द आते ह खद किसी झंझट म नही पडत अण्डा आर बच्चो की दखभाल की जिम्मदारी भी उन्ही पर छोड आते ह

कोयल यह पक्षी घरल कावे स मिलता-जुलता लकिन कछ दुबला हाता ह आर इसकी दुम भी लम्बी होती ह नर का रग चमकीला काला हाता ह चाच पीली-हरी आर आख गहरी लाल हाती ह मादा का रग भूरा हाता ह उसक शरीर पर सफद चित्तिया आर धारिया होती ह यह पक्षी भारत म सभी जगह पाया जाता ह

गमी मे कोयल की कू-कू-कू की मधुर आवाज स आप परिचित होग यह मधुर आवाज नर-कोयल की होती ह, जो मादा का अपनी आर आकर्षित करती ह मादा कायल की आवाज मधुर नही हाती जाडो मे य पक्षी खामाश ही रहते ह



सामान्य कुक्कू



पपीहा

इनकी प्रजनन-ऋतु कौवों के अनुसार अप्रैल से अगस्त तक चलती है यह पक्षी बहुत चालाक होता है मादा कोयल अपने अंडे घरेलू या जंगली कौवों के घोंसलों में रख आती है एक कौवे के घोंसले में कोयल के तेरह अण्डे तक पाए गए हैं कौवे उनको अपने ही अण्डे समझ कर सेते हैं और बच्चों का पालन-पोषण भी खुशी से करते हैं और कोयल मजे में आजाद घूमती है

पपीहा यह पक्षी कबूतर के आकार का, लेकिन कुछ दुबला-पतला होता है इसकी दुम लम्बी होती है इसका रंग ऊपर से ग्रे तथा नीचे से सफेद होता है जिस पर भूरी धारियां पड़ी होती हैं, दुम भी धारीदार होती है नर-मादा में कोई विशेष अन्तर नहीं होता भारत में सभी जगह पाया जाता है गर्मी का मौसम शुरू होते ही शोर मचाने लगता है अंग्रेजों के अनुसार यह पक्षी बड़ी तेज आवाज में पांच-छह बार ब्रेन-फीवर, ब्रेन-फीवर बोलता है इसकी आवाज को हिंदी में पी-कहां (मेरा प्रियतम कहां है) और मराठी में पाओस-आला (पानी बरसने वाला है) समझा जाता है इसकी आवाज शुरू में आहिस्ता और फिर तेज होती जाती है कुछ देर के लिए इसकी आवाज बिल्कुल बंद हो जाती है चांदनी रात में भी इसकी आवाज सुनाई देती है सर्दियों में इस पक्षी की आवाज सुनाई नहीं देती

इनके अण्डे देने तथा बच्चों के पालन-पोषण का मौसम मार्च से जून ठर्डायडस बैब्लर के अनुसार होता है पपीहा भी कोयल की तरह चतुर और धोखा देने में दक्ष होता है मादा पपीहा अपना अण्डा बब्लर के घोसले में दे आती है और इसकी चालाकी तो देखिए अपने अण्डे के लिए जगह बनाने के लिए उस बेचारे का एक अण्डा ही निकाल देती है, परपोषी नर और मादा ही इनके अण्डों और बच्चों की देखभाल करते हैं।

ससार की सबसे बडी छिपकली–कमोडो ड्रेगन (Komodo dragon)



कमोडो ड्रेगन (komodo dragon) ससार की सबस बडी छिपकली (lizard) हे, जा इडोनेशिया क कोमोडो, रित्जा, पाडार आर फ्लोरस द्वीपा म पाइ जाती ह यह छिपकली जाति क जीवा मे सबसे दीर्घकाय होती ह इसके वयस्क नरा की औसत लम्बाई 3 मीटर ओर वजन 79–91 किग्रा होता है

कमोडो ड्रेगन की लम्बी लचीली गदन आर चिमटे की तरह फटी लपलपाती हुइ लम्बी जीभ, भारी ओर भद्दा शरीर दशक क रागट खड कर दता ह

द्वीप-समूह क आदिवासी इस भयकर छिपकली का जिक्र किया करत थ परतु लोगा को विश्वास नही होता था वैज्ञानिका ने इस दीघकाय छिपकली को सर्वप्रथम सन् 1914 मे दखा

यह जन्तु बडा शक्तिाली आर भयकर होता है, जगलो मे पाए जाने वाले जगली सुअरो ओर हिरनो का शिकार करता है

एक विशालकाय नमूना सन् 1928 मे बीमा (Bima) क सुल्तान ने एक अमेरिकी वज्ञानिक का भटस्वरूप दिया था, जिसकी लम्बाइ 3 10 मीटर (10 2) ओर वजन 166 किग्रा था

सेही (Hystrix)

सेही स्तनपायी या मैमेलिया के उपवर्ग यूथीरिया (eutheria) के गण रोडेसिया (rodentia) का सदस्य है इस गण के जन्तुओ की आसान पहचान इनके दात हैं इनके कीले (canine) नही होती उनकी जगह खाली होती है दाढे चबाने योग्य होती हे इनके तेज दात कठोर वस्तुओ को कुतर-कुतर कर खाने योग्य होते हैं, इसीलिए इनको 'रोडेसिया' या कुतरनेवाले जीव कहा जाता है कुतरनेवाले प्राणिया के कन्तक दन्त जीवन भर बढते रहते हे ओर लगातार कुतरने से वे घिसते चले जाते हे जिनसे उनकी तेज धार बनी रहती है इस गण के सभी जन्तु शाकाहारी होते हैं

कुतरनेवाले जन्तुओ मे सेही एक विचित्र जन्तु है इसके शरीर की लम्बाई लगभग 57 सेमी तथा दुम की लम्बाई 5-6 सेमी होती हे इसका वजन 10-15 किग्रा होता है इसकी सारी पीठ और दुम पर लम्बे, सख्त और फसनेवाले काले आर सफेद काटे होत ह यह जन्तु सीधा-साधा ओर सुस्त होता हे इसको दुश्मन के आक्रमण का भय नही होता जरा सी आहट हुई और इसके काटे बिल्कुल सीधे खडे हो जाते हें दुश्मन से बचने के लिए यह अपनी दुम को ऐसा झटका देता है कि काटे दुश्मन के मुह पर चुभ जाते हैं इस जन्तु से शेर भी घबराता है शेर जब इसको पजा मारता हे ओर तो पजे मे काटे चुभ जाते हें दद के कारण शेर कराह उठता हैं और पीछे हटकर अपने पज से काट निकालने की कोशिश करता है कभी-कभी तो कोई काटा मास के अदर ही टूट जाता ह ओर शरीर मे जहर फेल जान से शेर की मृत्यु तक हो जाती ह

जगला ओर खेतो मे या पत्थरो के आसपास सेही घूमता नजर आ जाता ह जब यह बाहर निकलता हे तो इसके काट खडखडाते ह आर इसक दुश्मन सावधान हो जात हे यद्यपि यह शान्तिप्रिय जानवर हे परतु खेतो मे अनाज को बहुत नुकसान पहुचाता हे

मादा सेही एक वष मे 1 मे 4 बच्चो को जन्म देती है इसकी औसत आयु 10 म 15 वर्ष तक होती है



कुतरने वाले जीवो मे सेही अपने ढग का एक अनोखा जीव है इसकी पीठ और दुम पर लम्बे कडे और फसने वाले काटे होते है

कोडोर (Condor)

शिकारी पक्षिया म मबस भारी एण्डियन कोडोर (andean condor) होता ह जिसके वयस्क नरो का औसत वजन 9 09–11 3 किग्रा तक हाता ह इनके पखो का फलाव 10 फुट (3 04 मी) तक हाता ह इसक सिर पर लाल रग की कलगी (caruncle) हाती ह गरदन का निचला भाग सफद होता है शेप पर काल आर चमकदार हाते ह इसकी काई विशप बाली नही हाती यदि इसे सताया जाता ह ता यह एक प्रकार का मल उगल देता ह, जा बहुत बदबूदार हाता ह



दक्षिणी अमेरिका के ऐडीज (Andes) पर्वत का यह गिद्ध (vulture) पुरानी दनिया के गिद्ध स कुछ भिन्न होता ह इसकी नासिका क बीच काइ विभाजन नही हाता इसकी नजर बडी तज हाती ह यह बडी ऊचाइ स शिकार का देख लता है बहुत ऊचाई पर उडता ह आर ऊपर स झपटकर जानवरा का उठा ले जाता ह वास्तव म यह बडा भयानक पक्षी ह भेडा के झुण्ड तक इसस बहुत डरते ह एसे भी उदाहरण मिले ह कि यह मनुष्य क छाटे बच्चा का अपने घासला म उठा कर ले जाता ह ओर वही उन्हे मार कर खा जाता ह

इसका शिकार करने का तरीका भी विचित्र ह बहुत ऊचाइ स हवाइ जहाज की तरह तजी से उतर कर धरती पर टिके बगर अपन पजा से शिकार का पकड कर तुरत ऊपर उठता चला जाता ह

इसका घोसला किसी ऊची चट्टान पर एक गढढे की शक्ल का हाता ह जिसमे मादा अण्डे रखती ह बच्चे एक वप के होन पर उडने लगत ह



दक्षिणी अमेरिका के एडीज पवत का शिकारी पक्षी कोडोर

भयानक गरुड सुनहरा गरुड और हार्पी गरुड
(Golden eagle and Harpy eagle)

शिकारी पक्षियो मे सुनहरा गरुड (golden eagle) और हार्पी गरुड (harpv eagle) अपनी शक्ति आर देखने की सबस अधिक क्षमता के लिए प्रसिद्ध ह इनकी आखे मनुष्य की आखो की अपेक्षा 8–10 गुना तेज होती ह

सुनहरा गरुड (Golden eagle) यह मुख्यत स्कॉटलैड के पहाडी क्षेत्रो मे पाया जाता ह, इसके अतिरिक्त स्कण्डिनेविया (Scandınavıa), स्पन आल्प्स (Alps), कारपथियन (Carpathıan) आर कभी-कभी यूरोप के अन्य क्षेत्रो म भी देखा जाता ह

यह वडा भयानक शिकारी पक्षी होता ह पक्षियो क अतिरिक्त यह खरगोश, वत्तख, मुर्गी, भेड क बच्चो और हिरनो आदि को आर अवसर मिलन पर आठ वष के बच्चो तक को उठा ले जाता ह

इसकी आखा की तेजी इसी स मालूम हो जाती ह कि अच्छे प्रकाश आर पृष्ठभूमि मे समुचित अतर होन पर यह 46 सेमी (18) लम्बे खरगोश को 3 2 किमी (2 मील) की ऊचाइ से भी दख सकता ह, 1966 मी (6450) की दूरी से ता बिल्कुल स्पष्ट दख सकता ह।

इसकी लम्बाइ लगभग 82 समी तथा पखो का फलाव 188 स 196 समी होता ह यह 'किआ-किआ की सीटी जसी आवाज निकालता ह मादा प्राय दा



सुनहरा गरुड



हार्पी गरुड

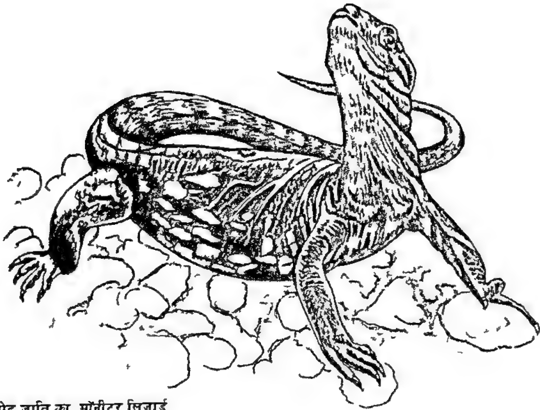
अण्डे दती हे अण्डे का आकार 70 1-88 9 × 51 0-66 0 mm हाता ह मादा अण्ड सेती ह, जिसकी अवधि 44-45 दिन हाती हे

पक्षिया मे इसको 'राजा' की पदवी दी गइ हे क्याकि यह 95 वष तक जीवित रहता ह

हार्पी गरुड (Harpy eagle) हार्पी गरुड दक्षिणी ओर मध्य अमरिका क जगलो, न्य गायना (New Guinea) तथा फिलीपीन्स (Philippines) म पाया जाता ह इसका रग ब्राउनिश-काला ओर नीच का भाग सफद हाता ह इसक पजा तक पर जम होते हैं प्राचीन अनुश्रुति के अनुसार भयानक पखा वाले दत्या 'हापिज' के नाम पर इस पक्षी का नाम पडा

यह अपन शक्तिशाली तज पजा मे जगली सूअर, स्लॉथ (sloths), वाइल्ड टकी, बदर ओर घन जगला के अन्य जानवरा को उठा ल जाता ह इसका स्वभाव बहुत-कुछ सुनहरे गरुड से मिलता-जुलता होता हे यह पडा की चाटियो पर घासले बनाते हैं आर दा या तीन अण्डे दते हैं

गोह (Monitor lizard)



गोह जाति का मॉनीटर लिजार्ड

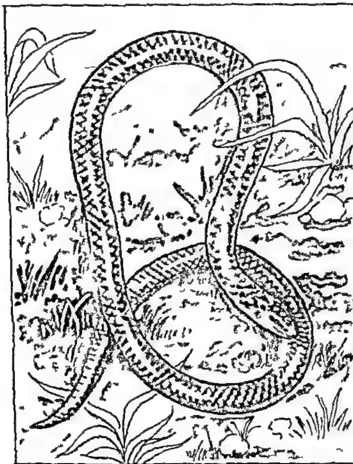
गोह का नाम आपने अवश्य सुना होगा यह जीव अपने पेरा स किसी भी जगह का इस दढता स पकडता ह कि उसको वहा स छुडाना वहत मुश्किल हाता ह

इसकी लम्वाइ 2–3 मी तक दखी गइ ह भारतीय गोहो मे 'कवरा गोह सवस वडी होती ह यह मुख्यत स्थलवासी जीव हे परतु इसकी कुछ जातिया जमीन और पानी दोना मे रहती हें पानी म तरते समय इसके पर शरीर स चिपक जाते ह आर पूछ पतवार का काम करती ह इसकी खाल खुरदुरी हाती ह जीभ साप की तरह लम्बी,चिकनी और दा भागा म फटी हुइ होती ह यह घरा म पानी म और वक्षो की डालिया पर रहती ह

प्राचीन काल म गाहा का उपयाग लडाइ मे किला की ऊची दीवारा पर चढ़ने के लिए भी किया जाता था इस काम के लिए गाहा को विशेष रूप से प्रशिक्षण दिया जाता था गोह की दुम मे रस्सी बाधकर उस दीवार पर छोड दिया जाता था ओर जब वह ऊपर चढकर मजबूती से अपने पज जमाकर दीवार के सिर पर चिपक जाती थी, तब नीच लटकती हुइ रस्सी के सहारे लोग ऊपर चढ़ जाते थ डाकू भी डाका डालने मे गोहो का सहारा लेत थे

गोह का आहार चिडियो और कछुओ के अण्डे, छाट खरगोश और चूहे आदि हैं

बिना पैर वाली छिपकली—ग्लास-लिजार्ड
(Glass-lızard)



ग्लास लिजार्ड

बिना पर वाली छिपकलिया मे सबस प्रसिद्ध 'ऐगम्यूडी' वश की व छिपकलिया आती हें, जिन्ह साधारणत आलसी कीडा (slow worm) अथवा अधा साप ही समझा जाता है, और बचारी साप के धोखे मे मारी जाती हे ग्लास-लिजाड भी एक एसी ही छिपकली हे जो दक्षिणी-पूवी योरुप, दक्षिणी-पश्चिमी एशिया, उत्तरी अफ्रीका आर अमेरिका क अतिरिक्त उत्तरी-पूर्वी भारत तथा बमा मे पाइ जाती ह

यह छिपकली काच के समान चिकनी होती ह इसका सारा यह शरीर चाकोर पील ओर भूर रग क शल्का स ढका रहता ह इसके अगले पर नही होत, परतु पिछले पर बहुत छोट होते हैं जो चलते समय नजर नही आते इसकी लम्बाई लगभग 40-45 समी होती ह

इसकी दुम बडी विचित्र होती हे जब यह किसी शत्रु क चगुल म फस जाती ह तो अपन शरीर को माडकर अचानक दुम का काफी हिस्सा छोडकर भाग जाती हे आर शत्रु के हाथ लगती ह कवल थोडी-सी दुम कुछ लाग यह भी कहत सुने गए ह, कि यह टूटी हुई दुम का फिर से जाड लेती ह, परतु एसा कोई ठोस प्रमाण नही ह टूटी हुइ दुम दुबारा उग आती ह यह साप की भाति केचुली भी उतार फकती ह

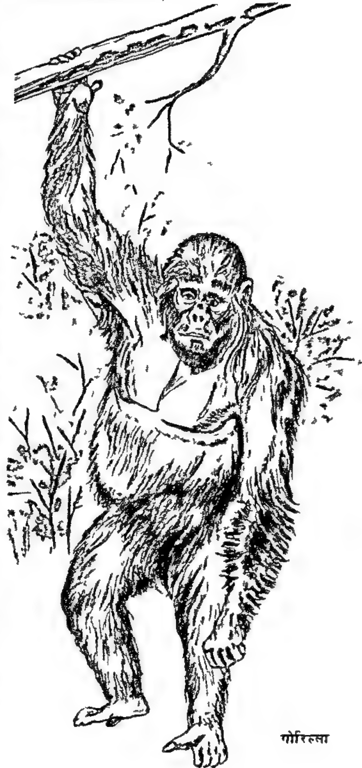
गोरिल्ला और चिम्पैजी
(Gorilla and Chimpanzee)

कपि (apes) और बदर (monkeys) हमारे निकटवर्ती जीवित सम्बधी हैं यदि आप ध्यानपूर्वक देखे तो इनके ओर हमारे शरीर मे बहुत कुछ समानता दिखाई देगी सिर आमतौर पर गोल, विकसित मस्तिष्क, आखे जा सामन देखती हैं तथा मनुष्य से मिलते- जुलते कान मनुष्य की ही भाति उगलिया तथा अगूठे जिनमे नाखून होते हैं आर हाथ जो चीजो को पकड सकते हैं कपि, बदर तथा मनुष्य एक ही श्रेणी के स्तनपायी (mammals) हैं जिन्हे जतुशास्त्री प्राइमट (primates) कहत हैं

बदरो के पूछ होती है, परतु कपि तथा मनुष्य के नही होती इसलिए मनुष्य बदर की अपेक्षा कपि के ज्यादा करीब नजर आता है जन्तुशास्त्रियो के अनुसार हम कपि की ही किसी जाति के वशज ह परतु वे कपि आजकल के कपि से बिल्कुल भिन्न थे एसा अनुमान ह कि छोटे कपि दा करोड वर्ष पूर्व दो वर्गो मे बट गए एक वर्ग जिसने जमीन पर रहना शुरू किया था अन्तता विकसित होकर मनुष्य बना ओर दूसरा वर्ग जो वृक्षो पर रहता था, आज का कपि (apes) कहलाता है कुछ भी हो, लेकिन कपि हमारे निकटवर्ती जीवित सम्बधी ह

गोरिल्ला (Gorilla) एन्थरोपाइड (anthropoid) वग क जीवित कपि म गोरिल्ला ही सबस विशालकाय ह, जो केवल अफ्रीका क जगला म पाया जाता ह इसका कद आदमी स ऊचा (लगभग 7 फुट) आर वजन 270 किग्रा स भी अधिक हाता ह

नर गोरिल्ला ही विशालकाय होता ह चहर की त्वचा पर झुरिया होती ह चेहरे क अतिरिक्त पूरे शरीर पर काल बाल होत ह सिर के ~ल कुछ ब्राउन हात ह जो बुढाप मे मनुष्य क बालो की तरह ही सफेद हो जाते हे हाथ काफी लम्बे होत ह सिर लम्बा और आख धसी हुई, नाक ओर कान मनुष्य की भाति तथा पर हाथा की अपेक्षा छोटे होते हे



गोरिल्ला

गोरिल्ला एक दैत्य की भांति भयानक दिखाई देता है जब यह कुशलता का अनुभव करने पर अपना सीना पीटता है तो ऐसा प्रतीत होता है मानो मनुष्य पर हमला करने वाला है, परंतु यह तो इसका स्वभाव है वास्तव में यह बिना छेड़ कभी हमला नहीं करता यह आमतौर पर शांत ही रहता है

गोरिल्ले परिवार बना कर रहते हैं, जिसमें 10 से 20 सदस्य होते हैं नर गोरिल्ला परिवार का स्वामी होता है सभी उसकी आज्ञा का पालन करते हैं वह भी उनसे बहुत प्रेम करता है यदि छोटे गोरिल्ले उसके चारों ओर घूम-घूम कर खेलने लगते हैं या थोड़ी-बहुत शरारत करते हैं तो वह गुस्सा नहीं करता अपने



चिम्पैंजी में सीखने और नकल करने की बड़ी योग्यता होती है इनकी चतुराई का अंदाजा इन बातों से आपको हो सकता है कि ये दरवाजा खोलना, चम्मच या प्याले से दूध चाय आदि पीना ही नहीं सीख जाते, बल्कि कपड़े पहनने का भी अभ्यास इन्हें कराया जा सकता है ये स्त्री पुरुष के अंतर को भी समझते हैं और पुरुष की अपेक्षा स्त्री से अधिक नम्रता से व्यवहार करते हैं अपने शरीर के किसी हिस्से से अचानक खून बहने लगने पर ये उस हिस्से को अपने हाथों से दबाकर खून को बंद करने की कोशिश करते हैं यदि फिर भी खून बंद नहीं होता तो जख्म पर घास तोड़कर रख लेते हैं



जगलो मे चिम्पैंजी तग दरारो से टहनी द्वारा कीडो को बाहर निकाल लेते हैं ये पत्तियो के गुच्छे को पानी म डुबोकर स्पज की तरह इस्तेमाल करते हैं

परिवार क प्रति उसका स्वभाव बिल्कुल मनुष्य की भाति होता है

गोरिल्ल वृक्षा पर मचान या स्लीपिग-प्लटफाम (sleeping platforms) बनाकर रहते हैं, कभी-कभी वे इन्ह जमीन पर भी बनाते हैं नर गोरिल्ले हर रात स्वय वृक्षो पर स्लीपिग- प्लेटफाम बनाते हैं प्रत्यक गोरिल्ला आधार क लिए एक मजबूत शाखा को चुनता है और नम टहनियो को मोडकर तथा पत्तियो का इस्तेमाल करके बिस्तर बनाता है मादा और बच्चे वृक्ष पर बने स्लीपिग- प्लेटफार्म (मचान) पर सोते हैं और नर गोरिल्ला वृक्ष के नीचे तने से कमर लगाकर सोता है ताकि शत्रु मादा और बच्चा को सोते मे नुकसान न पहुचा सके

गोरिल्ले पूर्ण रूप से शाकाहारी होते हैं फल, फूल और पत्तिया इनका मुख्य भोजन है

गोरिल्ला बहुत शक्तिशाली होता है 12 मनुष्यो की शक्ति उसम अकेले ही होती है एक गिलहरी, जिस प्रकार काष्ठफल (nut) को तोडती है, उसी प्रकार यह मनुष्य की खोपडी तोड सकता है ऐसे भी प्रमाण मिले हैं कि यह शिकारी की बदूक छीनकर किसी टहनी की तरह तोड देता है

गोरिल्ला म मैत्री भावना और बुद्धि अन्य जानवरो की अपेक्षा अधिक होती है बुद्धि-परीक्षा मे चिम्पजी सर्वोत्कृष्ट जन्तु माने जाते हैं, परतु मस्तिष्क की रचना मे गोरिल्ले चिम्पैंजी की अपेक्षा मनुष्य क अधिक निकट हैं बुद्धि-परीक्षा मे गोरिल्ले सुस्त पाय गये हैं हो सकता है कि इसका कारण इनका शर्मीलापन हो इनमे सकोची वृत्ति पाई जाती है यदि इसको पाला जाता है तो यह जल्दी ही मर जाता है क्योकि यह मनुष्य म ज्यादा मिलना-जुलना पसद नहीं

करता ओर न दूसरो की नकल करने की कोशिश ही करता है लेकिन गोरिल्ला मे मनुष्य की भाति व्यवस्था की प्रवत्ति होती है ये जो काम करते है, ठीक ढग से करते है य छडियो के इस्तेमाल से काफी समस्याए हल कर लते है इनकी स्मरण शक्ति ओर बुद्धि काफी तेज होती हे यदि आप गोरिल्ले को चाकलेट द तो वह चाकलेट खा लता ह आर इसके कागज को छोटी-छोटी गोलिया बना कर एक कोने म फेक दता ह जो चीज उसके काम की नही होती, उसे बगेर तोडे किसी कोने मे सावधानी से रख देता हे

चिम्पेजी (Chimpanzee) गोरिल्ले के बाद अफीका क कपियो म कवल चिम्पजी का नाम आता ह यद्यपि यह गोरिल्ल स काफी छोटा होता ह, परतु सब जानवरो स अधिक बुद्धिमान आर मनुष्य का निकट सम्बधी माना जाता ह

पत्र-पत्रिकाओ म चिम्पजी क बारे मे आपने बहुत कुछ पढा होगा फिल्मो मे भी चिम्पजी का मनुष्य की तरह काम करत दखा होगा फिल्म 'इसानियत म जिप्पी नामक एक चिम्पजी ने अपन अभिनय स दशको को आश्चर्यचकित कर दिया था

चिम्पजी, गोरिल्ल की अपक्षा वृक्षो पर अधिक रहता ह आर मुख्य रूप स फल खाता ह यह फुर्तीला आर अत्यधिक शोर मचान वाला जन्त ह य दल बनाकर रहत ह, जिसम 100 स अधिक जन्त होत ह गोरिल्ला की भाति इनका कोइ नता नही होता परतु सबस अधिक शोर मचान वाला नर ही प्रमुख समझा जाता ह

चिम्पजी हमशा वृक्षो पर सोत ह ये प्रत्यक रात्रि को वृक्षा पर जमीन स 25 मीटर ऊचा टहनिया को मोडकर तथा पत्तिया आदि का इस्तमाल करक सोने के लिए बिस्तर बनाते ह जगलो म चिम्पजी तग दरारो से टहनी द्वारा कीडो को बाहर निकाल लता ह यह पत्तियो के गुच्छे को पानी म डुबो कर स्पज की तरह भी इस्तेमाल करता ह

चिम्पेजी स्नहशील होते ह, य मनुष्य क साथ रहन म गर्व अनुभव करते ह तथा बहुत भावुक होत ह, कठघर मे बद होना इन्हे बिल्कुल पसद नही विद्वानो की दृष्टि मे चिम्पजी बुद्धि ओर भावनाओ म मनुष्य के बहुत निकट हे चिम्पजी आठ महीन तक गर्भ म रहता हे, यह मनुष्य के नो महीने क गर्भ की निकटतम अवधि ह मादा शिशु के पालन-पोषण मे शुरू म अवश्य ही कुछ लापरवाह होती ह किन्तु बाद के शिशुओ म उस पालन- पोषण का अनुभव हो जाता ह दूध न मिलन पर शिशु अगूठा भी चूसता ह

चिम्पजी उपकरणो का प्रयोग भी कर सकता ह आरी से लकडी चीर सकता ह, पचकस से पच खोल आर कस सकता है और कील भी ठोक सकता ह अभ्यास करान पर टेलीफोन का डायल भी घुमा सकता ह चाबी से ताला खोल सकता है आर छुरी-काट आर चम्मच द्वारा भोजन भी खा सकता ह साइकल चलान म इस बहुत आनद आता ह

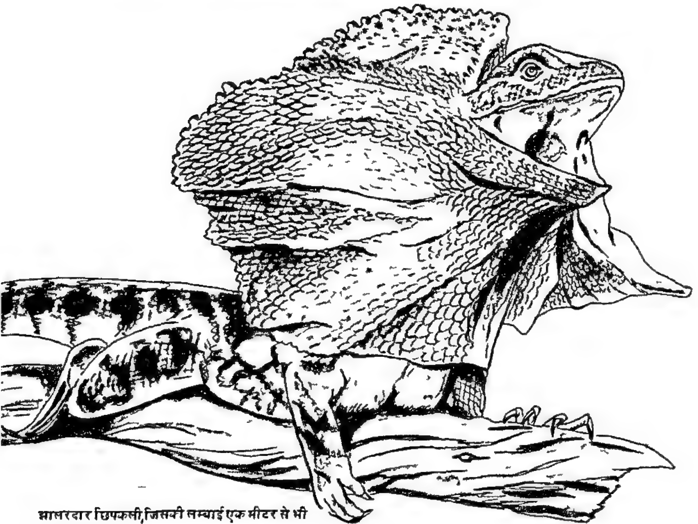
बुद्धि-परीक्षा मे चिम्पेजी काफी सफल सिद्ध हुआ ह सदको को एक दूसरे पर रखकर ऊपर लटका हुआ कला छडी से तोड लता ह आर कइ रगो की वस्तुओ को भी अलग-अलग छाट कर रख सकता ह आकार का भी इसको ज्ञान होता ह तथा डिब्बो पर सही ढक्कन लगा सकता ह

विद्वानो का विचार ह कि चिम्पजी म सीखन की वृत्ति होती ह, इसलिए यदि इसको अभ्यास का अधिक अवसर दिया जाए तो इसकी बुद्धि का विकास हो सकता ह

झालरदार छिपकली
(Frilled lizard)

आस्ट्रेलिया मे एक विचित्र झालरदार छिपकली पाई जाती है इसका निवास स्थान उस महाद्वीप का उत्तरी भाग और क्वीन्सलैंड है

इस छिपकली की बाहरी खाल उसकी गर्दन और कण्ठ के चारो ओर झालर की तरह बढ़ी हुई होती है दुश्मन को देखते ही यह इस झालर को फैला लेती है और अपना पूरा मुह खोलकर सिर ऊचा उठाकर खडी हो जाती है इसका यह भयानक रूप देखकर दुश्मन भयभीत होकर भाग जाता है खतरा दूर होते ही झालर पहले की तरह पुन गर्दन के चारो ओर लिपट जाती है झालर का रग पीला-लाल धब्बदार होता है इसकी लम्बाई लगभग 1 मीटर होती ह दाडते समय यह सिर और पूछ ऊपर उठा लती हे इतनी डरावनी शक्ल की होत हुए भी यह कोई नुकसान नही पहुचाती



झालरदार छिपकली, जिसकी लम्बाई एक मीटर से भी अधिक होती है

तारा मछली (Starfish)



तारा मछलियो की 1600 ज्ञात जातिया हैं इनमे पुनरुत्पादन की विचित्र क्षमता होती है

तारा मछली, ब्रिटल स्टार (brittle star), समुद्री अर्चिन्स (sea urchins) आदि सघ-एकाइनोडर्मेटा क मदस्य ह एकाइनोस (echinos) का अर्थ है काटेदार ओर डर्मेटॉस (dermatos) त्वचा को कहत ह, यानी वह प्राणी जिमकी त्वचा पर काट होते हें

तारा मछली पचभुजीय तारे की तरह का एक समुद्री प्राणी हे इसका सिर नही होता। मुख शरीर के निचली तरफ तथा गुदा (anus) ऊपरी सतह पर स्थित होता हे इसकी आहारनाल कुण्डलित होती है इस जन्तु के ऊपरी सतह पर छन्ने की तरह एक गोल प्लेट होती हे जिसे मेड्रीपोराइट (madreporite) कहते हें इसी के द्वारा पानी अदर प्रवेश करता हे त्वचा पर काफी सख्या मे अस्थिकाये (ossicles) तथा कटिकाए (spines) होती हें, जो कैल्शियम कार्बोनेट की बनी होती है निचली सतह पर प्रत्येक भुजा मे एक-एक ग्रूव (groove) हाता हे जिमम बहुत से छोटे-छोटे फ्लास्क की तरह नालपाद (tube feet) होत हें तारा मछली इन्ही के सहारे चलती फिरती हे इस विचित्र जन्तु के शरीर के अदर हड्डिया का ढाचा नही होता, परतु यदि आप समुद्र तट से एक तारा मछली उठाकर देखे तो हाथ से छूने पर वह काफी कठोर एव खुरदुरी महसूस होगी यह कठोरता और खुरदुरापन केल्शियम कार्बोनेट के बने काटो के कारण होता हे

ये एकलिंगी (unisexual) प्राणी हे यानी नर व मादा अलग-अलग होते हें निषेचन (fertilization) मादा के शरीर के बाहर जल म होता हैं

तारा मछली मे पुनरुत्पादन (regeneration) की विचित्र क्षमता हाती है यदि इसकी एक भुजा कट जाती ह तो जल्दी ही उसी जगह दुबारा उग आती हे

तारा मछलियो की 1600 ज्ञात जातियो मे भुजाओ क कुल फलाव की दप्टि मे तारा मछली 20 मिमी (0 78") म 1380 मिमी (54 33) तक की पाई जाती हे ओर इनका अधिकतम वजन 6 किग्रा तक रिकॉड किया गया हे

बॉवर पक्षी (Bower Bird)

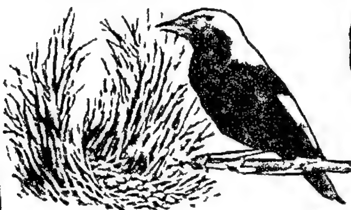
आस्ट्रेलिया आर न्यू गायना के बॉवर पक्षी वास्तव मे स्वर्ग के पक्षियो के सबधी हे परतु इनमे वह सुदरता नही होती फिर भी मादा का आकर्षित करने के लिए नर खूबसरत आर रगबिरगा प्रदशन करत हे ये अनुरजन गृह का निर्माण करते हैं और इनको रगीन फूलो, फलो, रगीन पत्थरा के टुकडो, यहा तक कि बटन तथा बोतला के ढक्कना तक से सजाते ह ये बॉवर कहलाते हैं बॉवर पक्षियो की 17 जातियो मे चार प्रकार की प्रणय-याचन गतिविधिया देखी जाती हैं कुछ पक्षी बॉवर क चारा आर काई का कालीन बिछाते हे, आर कुछ ता रगो का भी इस्तेमाल करत है रगो के लिए ये पक्षी फला को चबाकर उसके रगीन रस मे घास के तिनको या छाल को डुबा कर बॉवर के ऊपर पेंटिग भी करते हें ये पक्षी भी उन विचित्र पक्षिया के वर्ग मे आते हें,जो उपकरण का प्रयोग करते हैं

इनके बॉवर विभिन्न प्रकार के होते ह कुछ ऐवन्यू बॉवर (Avenue bowers) कहलाते हे इनमें टहनिया की दो समान्तर कतारे हाती हें, जिनके ऊपर प्राय एक साधारण घर की तरह मेहराब हाती हे इसक अतिरिक्त कुछ छोट बगीच जैसे हात हें, जिनके चारो ओर टहनियो की बाड हाती ह आर कुछ छोटी फूस की कुटिया के समान हात हें,जो छाटे-छोटे पेडा के तना क चारो आर बनाए जात हैं

मादा बॉवर पक्षी सवप्रथम नर क गीत स आकर्षित हाती ह वह मादा का अपना बनाया हुआ बॉवर दिखाता हे आर सजावट की विभिन्न चीज पश करक उस अदर आन क लिए आमत्रित करता ह यदि मादा का वहा अपनी पसद की चीज मिल जाती है तो वह नर का प्रणय-निवदन स्वीकार कर लेती है ओर आखिरकार पति-पत्नी का सबध स्थापित हा जाता ह जोडा बधने के बाद मादा चली जाती ह आर अपना घासला बनाकर अपन बच्चो का पालन-पाषण खुद ही करती ह

मैकग्रेगर्स बॉवर पक्षी



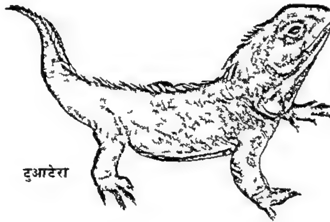


रीजेंट बॉवर पक्षी



ग्रेटमेम बॉवर पक्षी

तीन आखो वाला जन्तु टुआटेरा (Tuatara)



टुआटेरा

टुआटेरा (tuatara) या स्फनाडोन पक्टेटस (sphendon punctatus) देखन म छिपकली जसा ही होता हे परतु इनकी आतरिक रचना काफी भिन्न हाती ह इमीलिए इसका सरीसृपो क एक अलग गण रिन्कोसिफलिया (rhynchocephalia) म रखा गया ह यह 25 करोड वर्ष पूव टयामिस (triassic) तथा जुरामिक (jurassic) काल मे व्यापक रूप स पाया जाता था पुरानी निशानी के तार पर टुआटरा को हम जीवित जीवाश्म (living fossil) कहत ह

अब टुआटेरा न्यूजीलड आर उसक ममीपवर्ती द्वीपा मे पाया जाता ह इसकी शरीर रचना आर स्वभाव कुछ-कुछ कछुओ आर पक्षिया मे मिलता-जुलता ह एसा मोचा जाता ह कि वतमान छिपकलिया का विकास इसी प्राचीन छिपकली जसे जन्तु से हुआ

टुआटारा की एक विचित्रता उमकी तीमरी आख ह जा पाइनिअल आइ (pineal eye) कहलाती ह यह मिर क बीच मस्तिष्क क ऊपर एक छेद म स्थित हाती ह तीमरी आख का इस जन्तु क लिए क्या महत्व ह यह तो ठीक-ठीक नही कहा जा मकता लेकिन प्रारभिक मरीसृपा मे इसका कुछ विशेष महत्व अवश्य रहा हागा

टुआटोरा समुद्री पक्षिया पेटरल आदि के साथ ही बिलो म रहते ह आर मेढक, चूहे, केचुए ओर घोघे आदि खात ह विचित्र बात यह है कि अपना भोजन पजा से पकड कर खात ह टुआटेरा बडे डरपोक होते ह और अधिकाश जीवन बिला के द्वार पर ही गुजार दत हे, जब खाने का कुछ भी नही मिलता तभी बाहर निकलते ह लेकिन बिल से ज्यादा दूर नही जाते इनकी उम्र लगभग 77 वष से भी अधिक होती हे

आमतार पर मादा टुआटोरा दस पाचमेट जेसे अण्ड देती ह इन अण्डा स बच्चे एक वर्ष बाद निकलते हैं सरीमपा क अण्ड सेन की यह सबस लबी अवधि ह

ये विचित्र जन्तु अब लुप्त हाते जा रहे हैं न्यूजीलैंड मरकार न इनकी सुरक्षा का काफी प्रबध किया ह ताकि प्रकृति की यह प्राचीन निशानी लुप्त होने से बच सके।

गध फेकने वाला जन्तु स्कक (Skunk)

स्कक (skunks) अपने निराले बचाव के लिए प्रसिद्ध है—इसकी दुम के नीचे एक गध-ग्रंथि (scent gland) होती है, जिसमे से एक किस्म का बहुत तेज बदबूदार तरल निकलता है, जिसे ये काफी दूर तक फेक सकता है यह काला और सफद मासाहारी जन्तु अपने दुश्मन को धमकाने के लिए जमीन पर पैर पटकता है, फुफकारता है और फिर दुम ऊपर उठा लेता है यदि दुश्मन फिर भी नही डरता तो स्कक तरल दुर्गन्ध की पिचकारी मारता है

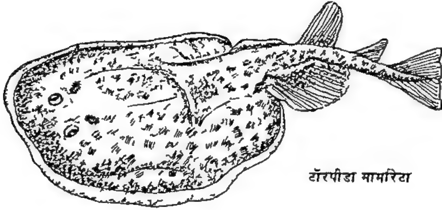
स्कक केवल नई दुनिया मे पाए जाते हैं वीजल (weasel) परिवार के अन्य किसी भी सदस्य की अपेक्षा इनकी गध-ग्रंथिया (scent glands) ज्यादा विकसित होती हैं स्कक का मुख्य आहार कृन्तक प्राणी, कीडे-मकोडे और चिडियों के अण्डे है परतु आवश्यकता पडने पर वनस्पति भी खा लेता है

चित्तीदार स्कक, या गध विलाव (civet cat) जो स्कक मे सबसे छोटा होता है, अपने दुश्मन को अजीब ढग से डराकर भगा देता है यह अपनी अगली टागो मे खडा होकर अपने शरीर के पिछले हिस्से को उठा लेता है और आगे को झुकी हुई अपनी सफेद दुम को लहराता है स्कक को इस विचित्र मुद्रा मे देखकर दुश्मन डर कर भाग जाता है और स्कक को दुर्गन्ध की पिचकारी मारने की जरूरत नही पडती चित्तीदार स्कक मध्य अमरिका से स रा अमरिका तक पाये जाते है



स्कक तरल दुर्गन्ध की पिचकारी मारकर अपने दुश्मन को भगा देता है

टॉरपीडो (Torpedo)



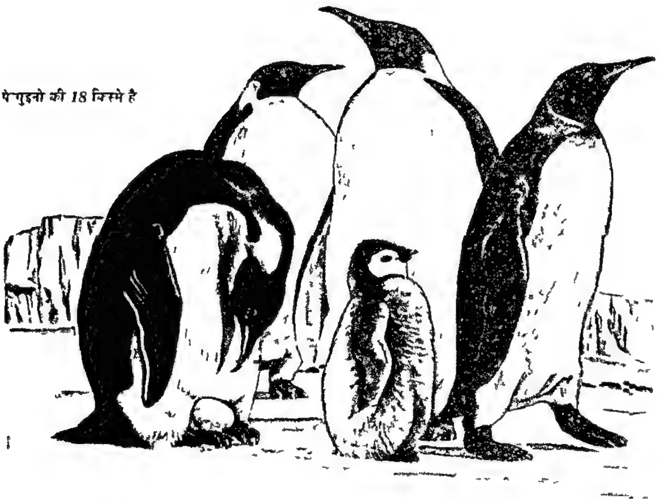
टॉरपीडा मार्मोरिटा

टारपीडो मार्मोरिटा (Torpedo marmorata) इलस्माब्रकाई (elasmobranchii) वर्ग की एक चपटी मछली ह, जो समुद्र क तल पर पाइ जाती ह इसकी लबाइ लगभग 1 5 मीटर हाती ह आर वजन 30 किग्रा से भी कुछ अधिक हाता ह मुख आर गिलदरार अधर तल की आर स्थित होती हैं सिर पर आखा क पीछ दो श्वासरन्ध (spiracle) होत हे, जिनक द्वारा श्वसन क लिए पानी अदर जाता ह असपरा (pectoral fin) शरीर क चाड भाग क दोना आर पटटी क समान हाता ह इसके अतिरिक्त एक जोडी श्राणीपख (pelvic fin), एक जोडी पृष्ठपख (dorsal fin) तथा एक पुच्छ-पख (caudal fin) हाता ह सिर क दोनो ओर त्वचा के नीचे एक-एक विद्युत-अग (electric organ) होते हैं, जिनसे बिजली पदा होती हे यह बिजली 40-220 वोल्ट तथा 7-10 एम्पीयर तीव्रता (amps intensity) की हाती ह इसी विशिष्टता क कारण इसको इलक्ट्रिक-र (electric ray) कहत है यह मछली इसी बिजली स शिकार का मारती ह आर शत्रुआ से अपनी रक्षा भी करती ह

पेन्गुइन (Penguins)

पेन्गुइन न उड सकन वाले समुद्री पक्षी ह जो दक्षिणी गोलार्ध मे पाए जात ह ये पक्षी विशेष रूप म इसलिए प्रसिद्ध ह क्योंकि बफ से जम दक्षिण-ध्रव प्रदश म पाए जाते है लकिन 18 किस्मा के पन्गुइना म कवल 5 किस्म के पन्गुइन ही दक्षिण-ध्रुवीय क्षत्र क अन्दर रहते हैं शप उप-दक्षिण ध्रुवीय द्वीपा म आर आस्ट्रेलिया तट के चारो आर न्यूजीलड दक्षिण अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका म पाए जात ह गॅलापागॉस (galapagos) पन्गुइन तो भूमध्य रखा के बहुत ही करीब रहते ह

सभी पन्गुइना का पिछला हिस्सा काला और अगला सफेद होता ह परतु कुछेक म सिर या चोच पर रगीन धारिया भी दखी जाती ह आर कुछ जातियो मे सिर पर रगीन पिच्छक भी हात ह य मनोरजक प्राणी मनुष्य की तरह सीधे खड रहते हे और इनके विचित्र डैने हाथो की तरह दानो तरफ लटके रहते हैं दूर से देखने पर पेन्गुइन ऐसा लगता ह जेस काई छोटा-सा आदमी डिनर सूट पहने खडा हा यह अद्भुत प्राणी उड तो नही सकता परतु परा का कुछ फैलाकर तथा गदन को आगे निकालकर दा-तीन फुट तक फुदक सकता ह



पेन्गुइनो की 18 किस्मे है

ऐसा अनुमान है कि पेन्गुइन के पूर्वज एक द्वीप से दूसरे द्वीप में उडकर आते-जाते होंगे, परंतु कुछ कारणों से वे अपनी उडन की शक्ति खो बैठे होंगे यद्यपि ये पक्षी उडन में बिल्कुल असमर्थ हैं लेकिन पानी मे ऐसे तैरते हैं मानो उड रहे हों मछली पकडने के लिए बडी तेजी में झपटते हैं और सील को देखते ही भाग लेते हैं, क्योंकि वह पेन्गुइन को चट कर जाती है यह पक्षी पानी की सतह पर भी किसी बत्तख की तरह तैर सकता है

पेन्गुइन के ऊपरी पंख सामान्य पक्षियो से भिन्न होते है ये बहुत गछे हुए तथा तल से भीगे रहते हैं ताकि पानी में भीग कर भारी न होने पाए रोमिल पिच्छ की अन्दरूनी परत तथा त्वचा के नीचे चर्बी की मोटी तह होती है जो इनको ठंड से बचाती है

जो पेन्गुइन अपने क्षेत्र की कुछ गरम जगहों पर रहते हैं, अपने घोसले बिलो मे या तटीय घास के मध्य मे बनाते हैं परंतु बिल्कुल दक्षिणी ध्रुव-प्रदेश के निवासी दूसरी व्यवस्था करते हैं एम्परर पेन्गुइन, जो सबसे बडी जाति है किसी प्रकार के घोसले नही बनाते बल्कि बर्फ के ऊपर ही अण्डे देते हे अण्डे देने के समय ये पक्षी समुद्र को छोड देते हे और 100 किलोमीटर से भी अधिक चलकर प्रदेश के अन्दरूनी इलाकों में पहुचते है और अण्डा देने के लिए कोई उपयुक्त स्थान निश्चित करते हैं यहा नर और मादा दोनों साथ होते हैं प्रत्येक मादा केवल एक अण्डा देती हैं और तुरंत ही उसे अपने नर के हवाले कर देती हे नर-मादा दोनो ही बहुत सावधान रहते हैं और अण्डे को गिरने नही देते क्योंकि जरा भी बर्फ का छू जाने पर अण्डा ठिठर जाता हे और फिर उससे बच्चा नही निकल सकता नर पेन्गुइन अण्डे को अपने पैरों पर रखता है और उसे सर्दी से बचाने के लिए अपने पेट की मोटी खाल में ढक लेता है मादा भोजन की तलाश मे समुद्र की ओर चली जाती है और अब नर के धैर्य और प्रतीक्षा की लंबी शुरूआत होती है

हजारो अण्डा सेते हुए नर सर्दी से बचने के लिए एक दूसरे से सटे रहते हैं अण्डे से बच्चे निकलने में लगभग दो महीने का समय लगता हे और इस दौरान ये कुछ नही खाते, बिलकुल भूखे रहते हैं त्वचा के नीचे एकत्रित चर्बी ही इनका जीवन सुरक्षित रखती है

यह एक विचित्र बात हे कि अण्डो से बच्चे निकलते ही ठीक समय पर मादाएं अपने आमाशय मे मछली भरे हुए बच्चो की खुराक लेकर वापस लौट आती हैं और अपने बच्चो तथा नरो की देखभाल करती हे नर,जो लगभग तीन महीने तक भूखे रहते हैं,बडी मुश्किल से घिसट कर भोजन के लिए समुद्र तक पहुचते हैं और दो या तीन सप्ताह बाद वापस लौटते हैं इस दौरान मादा अपने आमाशय से उगली हुई मछलिया बच्चो को खिलाती रहती है अब बर्फ पिघलने लगती है और पेन्गुइनो को पानी के लिए ज्यादा दूर जाना नही पडता नर और मादा दोनो ही बच्चो को एक प्रकार की नर्सरी मे छोडकर मछली पकडने चले जाते हैं इस समय गल—जैसे पक्षी स्कुआ (skuas) के आक्रमण से बच्चो को खुद ही बचना पडता हे माता-पिता पेन्गुइन बच्चो के लिए भोजन लेकर आते हैं बर्फ के पूर्णतया पिघलने तक बच्चे इस योग्य हो जाते हैं कि समुद्र तक जा सके

पेन्गुइन मछलियो के शिकार के लिए पानी के किनारे खडे होकर पहले अच्छी तरह निरीक्षण करते है यदि कोई पेन्गुइन पानी के बहुत करीब होता हे तो उसके साथी धोखे से अचानक उसे पानी मे ढकेल देते है, यदि वह सकुशल तैरता रहता हे तो उसके अन्य साथी भी पानी मे उतर जाते हैं परंतु यदि उसे सील या व्हेल ने पानी में जाते ही झपट लिया, तो फिर अन्य साथी पानी मे नही उतरते

अफ्रीका की हनीगाइड (Honeyguide) चिडिया

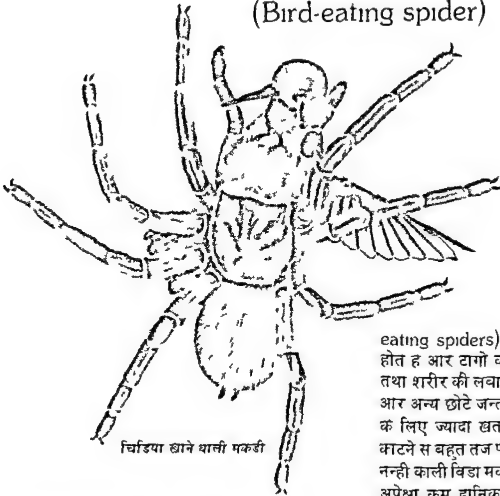
हनीगाइड (Honeyguide) यानी मधुसूचक छोटे वर्ग की अफ्रीकन चिडिया है,जिसका मुख्य भोजन कीडे-मकोडे है मधुमक्खी और ततैया तो इसे बहुत ही प्रिय है और कभी-कभी तो यह नन्हे कीट और उनके लार्वे (larvae) खाने के लिए मधुमक्खी के छत्ते मे भी घुस जाती हैं एक या दो हनीगाइड तो ऐसी भी देखी गई हैं,जो मधुमोम (beeswax) खाती हैं,जिससे छत्ता बना होता है पक्षियो मे ऐसी आदत बहुत कम पाई जाती है एक आश्चर्यजनक बात यह है कि यह मधु-विज्जू (Honey badger) द्वारा मधुमक्खी के छत्ते को खुलवाकर मधुमोम प्राप्त करती है जब हनीगाइड को कोई मधुमक्खी का छत्ता दिखाई दे जाता है तो वह तुरत कुछ दूर तक उडती है और फिर किसी झाडी पर बैठकर चहचहाती है मधु-विज्जू भी इस चिडिया के आस-पास ही रहता है चिडिया की आवाज सुनते ही वह तुरत उस दिशा मे चल पडता है चिडिया जैसे ही मधु-विज्जू को देखती है,वह कुछ मीटर तक उडती है और पुन चहचहाती है यह करीब ही मधुमक्खी का छत्ता होने की सूचना होती है जब तक मधु-विज्जू छत्ते तक नही पहुचता,हनीगाइड छत्ते के आस-पास ही मडराती रहती है जब मधु-विज्जू छत्ते तक पहुच जाता है तो हनीगाइड धैर्यपूर्वक छत्ता खुलने की प्रतीक्षा करती है मधु-विज्जू मधुमक्खियों को भगा देता है और छत्ता खोलकर उसमे भरा मधु पी कर तुरत चला जाता है उसके जाते ही हनीगाइड वहा पहुच जाती है और अपना प्रिय भोजन मधुमोम खाती है एक दूसरे के सहयोग से भोजन प्राप्त करने का यह एक आश्चर्यजनक उदाहरण है अफ्रीका के जगलो मे मधु प्राप्त करने के लिए वहा के लोग हनीगाइड और मधु विज्जू को देखते ही यह अनुमान लगा लेते हैं कि करीब ही कहीं मधुमक्खियों का छत्ता मौजूद है



हनीगाइड चिडिया जो मधु विज्जू द्वारा मधुमक्खी के छत्ते को खुलवाकर मधुमोम प्राप्त करती है

चिडिया खाने वाली मकडी

(Bird-eating spider)



चिडिया खाने वाली मकडी

मकडी आर्थापाडा समुदाय से सबधित ह विश्व मे 20 000 विभिन्न किस्मो की मकडिया पाइ जाती हें इनम से कछक पानी मे रहती ह परतु अधिकाश जातिया धरा बाग-बगीचा आर जगलो मे रहती ह आर इन्ही की सख्या सबसे अधिक हाती ह यह गणना हा चुकी ह कि गमियो म एक हक्टयर (लगभग 2 5 एकड) घास क मदान में 5 000 000 मकडिया रहती हें

आपन मकडिया को मक्खिया आर छोट-छोट कीट-पतगो को अपने जाल मे फसाकर पकडते दखा हागा, परतु क्या आप विश्वास कर सक्त हें कि एसी मकडिया भी हाती हें जा चिडिया का अपन जाल म फसाकर पकड लती हें इस प्रकार की दत्याकार मकडिया उष्णकटिबन्धीय क्षत्रा म पाइ जाती ह जिन्ह चिडिया खान वाली मकडी (Bird eating spiders) कहते ह इनके ऊपर बाल होत ह आर टागो का फैलाव लगभग 25 सेमी तथा शरीर की लबाइ 9 समी होती ह ये चिडियो आर अन्य छोटे जन्तुआ का खाती हें परतु मनुष्य क लिए ज्यादा खतरनाक नही हे, यद्यपि इसके काटने स बहुत तज पीडा होती ह परतु इसका विष नन्ही काली विडा मकडी (Widow spiders) की अपेक्षा कम हानिकारक हाता ह चिडिया खान वाली मकडी का कुछ लाग गल्ती से टाराटुला (Tarantulas) भी कहते ह, जबकि टाराटुला एक भीमकाय वुल्फ मकडी (Wolf spiders) ह जा दक्षिणी यारुप म पाइ जाती ह इसक काटन म मनुष्य की मृत्यु भी हो सकती हे

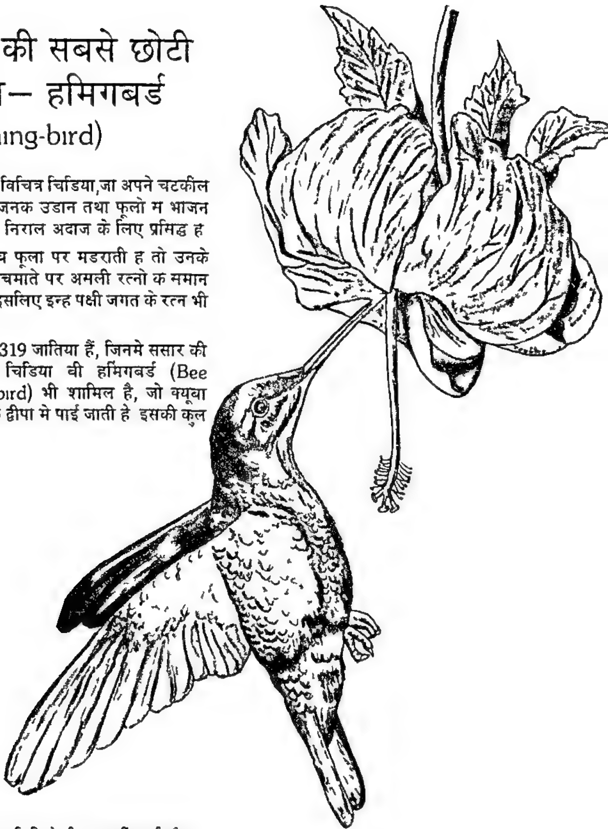
चिडिया खान वाली मकडिया टहनियो पर या पेड क खाखला मे अपने जाल बना लेती हें कुछेक ता जमीन म 2 फुट गहरा बिल बना लती है आर उस मजबूत रशमी जाल स ढक देती ह ये जाल रेशमी धागा की तरह मजबूत हात हें जिनमे शिकार फसन क बाद निकल नही पाता मकडी शिकार पर गहरी नजर रखती ह, जस ही शिकार फसता हे यह उसक शरीर क ऊपर अपना थूक या गदा रस पात दती ह, जिसम विष मिला हाता ह यह विष जाल म फसे शिकार का मार दता है

दुनिया की सबसे छोटी चिडिया— हमिगबर्ड (Humming-bird)

नइ दुनिया की विचित्र चिडिया,जा अपने चटकील रगो, आश्चयजनक उडान तथा फूलो म भाजन प्राप्त करने क निराल अदाज के लिए प्रमिद्ध ह

ये चिडिया जब फूला पर मडराती ह तो उनके जगमगाते-चमचमाते पर असली रत्नो क समान नजर आते हे इसलिए इन्ह पक्षी जगत के रत्न भी कहा जाता ह

हमिगबर्ड की 319 जातिया हैं, जिनमे ससार की सबसे छोटी चिडिया बी हमिगबर्ड (Bee Humming bird) भी शामिल है, जो क्यूबा और पाइन्स के द्वीपा मे पाई जाती हे इसकी कुल



हमिगबर्ड मामाय चिडियो की तरह नहीं उडती और इनका फूलो से मधुरस पीने का अदाज भी निराला है

लबाइ 57 मिमी (2 24") हाती है, जिसम आधी लबाइ ता कवल चोच और पूछ की हाती है इसका कुल वजन 1 6 ग्राम होता है इसके छोटे से घोसले का व्यास एक इच का तीन-चौथाइ हाता है हमिगवड मे सबसे बडी जाइट हमिगवड (Giant Humming bird) है,जो हाई एडीज (High Andes) म पाइ जाती है, जिसके शरीर की लबाई 21 5 ममी (8½ इच) हाती है

हमिगवड सामान्य चिडिया की तरह नही उडती इसके पखा की औसत फडकन एक सकड मे 55 बार हाती ह अब आप जरा अपनी उगली को तेजी स ऊपर नीच कीजिए आप देखग कि एक सेकड मे दा या तीन बार स ज्यादा उगली को नही हिलाया जा सकता इसी स आप अनुमान लगा सकते है कि इस चिडिया के पखो की फडफडाहट अन्य सभी चिडिया मे अधिक तज है इसलिए उडते समय पखा क स्थान पर धुध सी दिखाई देती ह और पखो की इस तज फडफडाहट से भिनभिनाहट की आवाज भी पदा होती है जिस कुछ लोग गलती से इस चिडिया की बाली समझ लेते हे

हमिगवड फूला पर मडराती रहती हे परतु कभी उन पर बैठती नही अजीब बात यह हे कि पूर्णतया हवा म ठहरे हुए,बगैर किसी आधार के अपनी चाच को फूल के भीतर डालती है और मधुरस पी कर तुरत उड जाती हे

आप सोचते हाग कि क्या हमिगवड थोडी दर भी बैठ कर आराम नही करती? वास्तव मे इसका बैठने की जरूरत ही नही पडती, इसके परो की अत्यधिक तेज फडफडाहट इसको हवा के बीच एक ही जगह स्थिर रख सकती ह पखो की इस असाधारण शक्ति के कारण ही हमिगवड क भोजन प्राप्त करने का ढग अन्य चिडिया से बिल्कुल भिन्न है इसका मुख्य भोजन फूला का मधु और फूलो के बीच पाये जाने वाले नन्हे कीडे हे

हमिगबर्ड का नन्हा घोसला एक छोटे से रत्न क समान होता है, जिसे ये चिडिया जमीन मे कुछ ऊपर झाडियो, देवदारु-फल (pine cones) या पत्तियो पर मकडी के जाल, काई, लाइकेन (lichens) तथा पेड की छाल द्वारा बनाती है इनमे कुछ चिडिया बिजली के तारो, चट्टानो या इमारतो पर भी अपना घोसला बना लेती है हमिगबर्ड दो बहुत ही छोटे सफेद अण्डे देती हे

यद्यपि यह दुनिया की सबस छोटी चिडिया है परतु वीरता म इसका जवाब नही अपने घोसले की सुरक्षा के लिए यह कौवे और बाज के आक्रमण को भी विफल कर देती हे

पैंगोलिन (Pangolin)

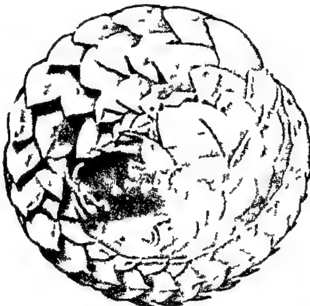
पैंगोलिन निम्न कोटि का स्तनपायी है जो जावा, बोर्नियो, फिलिपाइन्स तथा निकटवर्ती द्वीपों, दक्षिणी चीन और अफ्रीका के अतिरिक्त भारत में भी पाया जाता है। भारतीय भाषाओं में पैंगोलिन को [illegible] [illegible] और [illegible] कहा जाता है।

पैंगोलिन की लंबाई 65 से 176 सेमी (2-5 फुट) तक होती है। इसके सारे शरीर और दुम के ऊपर कड़ी प्लेटें खपरैल की भांति लगी रहती हैं। ये प्लेटें बहुत कड़ी होती हैं। पैंगोलिन को जब खतरा महसूस होता है या कोई शत्रु अचानक उस पर हमला करता है तो वह अपने मुंह और दुम को पेट के नीचे दोनों ओर से भींच लपेटकर बिल्कुल गेंद की तरह बन जाता है। सारी प्लेटों के सिरे ऊपर उठ जाते हैं। ऐसी हालत में कोई शत्रु उस पर हमला करने का साहस नहीं कर सकता है।

इस विचित्र जीव का सिर और मस्तिष्क छोटा होता है तथा मुंह में किसी भी प्रकार का कोई भी दांत नहीं होता। यह दिन भर अपने बिल में छिपा रहता है, क्वल रात्रि मे भोजन के लिए बाहर निकलता है अपनी लची और चिपचिपी जीभ से चीटी और दीमक बडे मजे मे खाता है इसकी मादा सर्दियो मे कवल एक या दो बच्चा को जन्म देती है

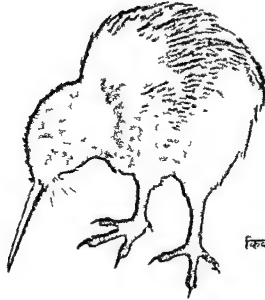


पैंगोलिन



खतरा महसूस होते ही पैंगोलिन गेंद के समान गोल हो जाता है

किवी (Kiwi)



किवी

किवी न्यूजीलड का एक अद्‌भुत पक्षी हे,जो उड नही सकता इसकी ऊचाइ 30 45 सेमी होती ह इसक डने वहुत छोट होते हैं, जा इसक वहुत ही मुलायम वाला जेस परो मे छुपे रहत ह इसकी लवी चोच के सिर पर इसके नथन हान ह इस अजीव जगह पर स्थित इन नथना न इम जमीन म पाय जान वाले कचुए और कीड-मकाड आदि तलाश करन मे बडी सहायता मिलती ह इसक पैरा मे चार उगलिया हाती हैं

सामान्य किवी उत्तर दक्षिण तथा स्टिवर्ट (Stewart) द्वीपो म, छाटी चित्तिया वाले किवी दक्षिणी द्वीप क पश्चिमी क्षत्र म पाय जात ह परत दुलभ बडी चित्तिया वाल किवी कवल दक्षिणी द्वीप के उत्तर-पश्चिम म ही पाये जात हैं

किवी जगलो म रहता हे और दिन मे बाहर नही निकलता लेकिन रात को भोजन की तलाश म इधर-उधर घूमता नजर आता है शत्रु को देखकर वहुत तेज भागता हे ओर सीटी जैसी आवाज निकालता ह, इसीलिए इसका नाम किवी पड गया यह स्वभावत वहुत शर्मीला होता हे

इसका मुख्य भोजन कीडे-मकोडे तथा मिट्टी मे पाये जाने वाल अन्य जीव हें परतु यह सरसफल (berries) भी खाता ह यह अपना घासला आमतौर पर विला मे वनाते हैं, जहा मादा एक या दो वडे और सफद अण्डे दती ह जिसका वजन लगभग 450 ग्राम होता हे अण्डे प्राय नर ही सेता है ग्यारह सप्ताह बाद अण्डा म बच्च निकलत ह

उडने वाली गिलहरी
(Flying Squirrel)



उडने वाली गिलहरी

उडने वाली गिलहरिया भारत आर लका से जापान तक के सभी देशो तथा उनके निकटवर्ती द्वीपा म पाइ जाती हैं इस किस्म की छोटी नम्ल की गिलहरिया स्केण्डीनेविया और रूस से लेकर जापान तक देखी गइ हैं सबमे छोटी उडने वाली गिलहरी वोनियो म पाई जाती है, जो चूहे के वरावर होती है आमतोर पर उडन वाली गिलहरियो का शरीर 13 5 सेमी से 20 5 सेमी लवा होता है तथा दुम की लवाई 9 सेमी से 14 सेमी तक होती हे इसका वजन 110 से 170 ग्राम तक होता है

ये असाधारण गिलहरिया राडण्ट्स (rodents) परिवार से सवधित हे कडे-से कडे फलो के छिलके वडी सरलता से यह अपने तेज दाता से कुतर डालती ह उडना इनकी विशेपता है यद्यपि ये चिडिया की भाति नही उड सकती परतु एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष तक पहचने के लिए हवा में तैरती हुई (glide) 35 मी म भी अधिक का फासला तय कर लेती ह इनकी लटकती हुई ढीली त्वचा पेराशूट जमा काम करती हे यानी उसक शरीर को हवा मे साधे रहती हे

ये गिलहरिया घने जगलो म ऊचे-उचे वृक्षा पर निवास करती हैं दिन मे ये अपने घोसले मे सोती रहती ह ओर सध्या के समय ओर रात मे बाहर निकलती हे मादा एक वर्ष मे 2 से 4 तक बच्चो को जन्म देती हे इन गिलहरियो की उम्र 6–8 वर्ष तक होती ह।

पेलिकन (Pelican)

पेलेकनीफार्मिस (Pelecaniformes) गण तथा पेलकेनिडी परिवार का पेलिकन भद्दी शक्ल का लबी चाच वाला विचित्र पक्षी है भारत मे इस पक्षी को हवासिल या कूरेड कहत ह यह गिद्ध से भी काफी बडा होता ह छोटी मजबूत टाग, बडे जालयुक्त पर आर काफी भारी चपटी चाच जिसके नीच पूरी लबाइ तक त्वचा की एक बडी थैली हाती ह रग प्राय सफद या भूरा-सफद होता ह

पेलिकन की 6 उपजातिया यूरोप, अफ्रीका तथा एशिया म ओर 2 उपजातिया अमेरिका मे पाई जाती है उत्तरी अमेरिका की एक उपजाति म चाच क ऊपर एक कलगी-सी उगी दिखाई देती है जो उनकी समागम-ऋतु तक ही रहती है, बाद मे झड जाती ह भारत मे यह पक्षी अधिक जल वाले क्षेत्रो म पाया जाता है



पेलिकन



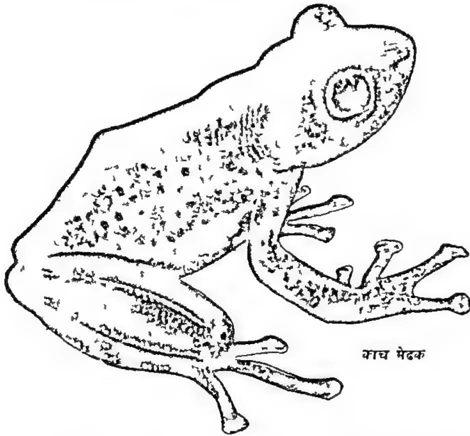
पेलिकन की एक अजीब विशेषता यह ह कि इसकी लबी चाच के निचले भाग मे एक दीघाकार लचीली थैली होती है,जिसका इस्तेमाल यह अपनी और अपने बच्चो की उदर-पूर्ति के लिए करता हे इस पक्षी का मुख्य भोजन मछलिया ह इसकी चोंच के नीचे की थैली मछली पकडने के जाल जैसी होती है, जिसकी समाई काफी होती है एक साधारण पेलिकन की इस विचित्र थैली म 14-15 किग्रा मछलिया भरी जा सकती हे यह पक्षी इस थैली के अदर मछलियो को मार-मार कर जमा करता रहता हे पानी में तरते समय यह थैली भी जाल की तरह तैरती रहती हे कुछ मछलिया तो धोखे ही मे इस जालनुमा थैली मे फस जाती हैं जब यह थैली मछलियो और पानी मे पूणतया भर जाती हैं तो पेलिकन अपना मुह बद करके इससे पानी बाहर निकाल देता है

मछली पकडने के अतिरिक्त पेलिकन की मादा अपनी थैली का इस्तेमाल अपने बच्चा की उदर-पूर्ति के लिए भी करती ह अपने आमाशय का थोडा पचा हुआ भोजन वह पुन थैली मे उगल देती ह असहाय शिशु थैली म जमा किए हुए खाद्य-द्रव्य से अपनी उदर-पूति कर लेते हैं

पेलिकन के झुण्ड के झुण्ड पानी मे बडी कुशलता मे तरते दिखाई देते हे मछली पकडने म कई पेलिकन मिलकर कोशिश करते हे तैरते समय ये अपन लबे-लबे पखो का फडफडाते रहत हे,जिससे मछलिया डर कर भागती हुई इनके चगुल मे फस जाती हैं इतना बडा आर भारी हाने पर भी इनका पानी से निकल कर उडने में काइ कठिनाइ नही हाती

ये आमतौर पर पानी मे दूर उच वृक्षो पर बडी-बडी टहनियो द्वारा एक मच सा बना लेते हैं यही इनका घोसला होता ह एक वृक्ष पर कई घोसले होते हैं ये बस्तिया बनाकर रहते ह

काच-मेढक (Glass Frogs)



काच मेढक

आपने साधारण भारतीय मेढक राना टिग्रीना अवश्य देखा होगा मढक प्राय हर मासम मे लगभग सभी स्थाना पर पाया जाता ह। प्रकृति म मढका की कमी नही है क्योंकि इनम प्रजनन-क्षमता अत्यधिक हाती है इनकी अनक जातिया हैं जिनम वृक्षवासी जातिया बडी ही विचित्र समझी जाती हैं

वृक्षा पर रहन वाल मढका की मुख्यत तीन जातिया हैं अफ्रीका की रैकोफोराइडी (rhacophoridae) एशिया आर मडागास्कर की हाइलाइडी (hylidae) अथवा ट्रू हायलाज (true hylas) तथा सण्टोलनाइडी (centrolenidae) जिन्हे आमतौर पर काच-मढक (glass frogs) कहत हैं हायला अफ्रीका मडागास्कर, भारत आर मलाया क अतिरिक्त सब जगह पाया जाता है हम यहा आपको केवल काच-मेढक के बारे मे ही सक्षेप म बताएग

काच-मेढक या ग्लास फ्रॉग सेण्टोलेनाइडी (centrolenidae) परिवार के सदस्य हैं, जो मध्य और दक्षिण अमरिका म पाये जाते हैं इनकी त्वचा काच की तरह पारदर्शक होती है,जिसम से इनके शरीर क अदर क अग स्पष्ट दिखाई दत हैं इनकी सफेद या हरी टागो की भीतरी हड्डिया और धमनियो मे दौडता हुआ लाल रक्त भी दिखाई दता है यही नही बल्कि हृदय तथा अन्य अन्तराग भी बिल्कुल स्पष्ट देख जा सकत हैं परतु इनकी ऊपरी त्वचा अन्य सामान्य मढका की तरह चमकीली हरी और अपारदर्शी ही हाती है इस प्रकार क मढक आमतौर पर वृक्षा पर रहते हैं और वृक्षवासी-मेढका (Tree frogs) से सबंधित है। इनम गुल्फ की हड्डिया (ankle bones) संगलित (fused) हाती हैं

कोआला (Koalas)

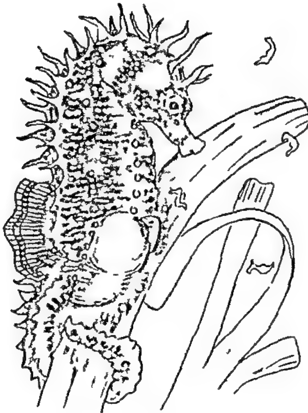


'कोआला' भालू की-सी शक्ल क छोटे थैलीवाले (मार्सूपियल) स्तनपायी ह,जो आस्ट्रेलिया मे पाये जाते हैं इनका वजन 13-14 किग्रा मे भी कम होता हे ये भी कगारूओ की तरह आस्ट्रेलिया क प्रतीक समझे जाते हैं

इनके कान लवे आर गुच्छेदार होते हैं, आखे वहुत वडी और शरीर पर छोटे-छोटे ऊनी वाल होते हैं इनका भोजन यूक्लिप्टस (eucalyptus) के वृक्ष की पत्तिया हैं इन्ही वृक्षो पर ये निवास करते हैं इनका अधिक समय वृक्षो पर ही गुजरता ह लेकिन थोडी-थोडी देर बाद ये जमीन पर मिट्टी चाटने भी आते हैं, विल्कुल इसी प्रकार जसे पक्षी ककड खाते हैं मिट्टी कोआला के पाचन मे सहायता करती ह जिस क्षेत्र मे कोआला रहते हैं, यदि वहा के यूक्लिप्टस वृक्षो पर पत्तिया नही रहती तो ये विचित्र जीव भूखे ही रहते हैं आर किसी अन्य वृक्ष की पत्तिया छूते तक नही

दा महीने तक वच्चे मादा कोआला की थैली मे रहते हैं उसके वाद वे उसकी पीठ से चिपके हुए घूमते रहते हैं। वह दश्य वडा ही मनारजक होता है, जव ये वृक्षवासी कोआला एक-दूसरे को थामकर वक्ष की डाली पर अपने आपको साधे हुए चलते हैं

हिप्पोकैम्पस—समुद्री घोडा
(Hippocampus— Seahorses)



हिप्पोकैम्पस जिसे समुद्री घोडा भी कहते हैं

हिप्पोकेम्पस जिसे समुद्री घोडा भी कहते हैं, दरअसल एक समुद्री मछली है इसका सिर घोडे के मुख के समान होता है यह 10 से 30 सेमी तक लंबा होता है और विश्व के सभी महासागरो मे पाया जाता है इसकी विचित्र पूंछ गतिशील एवं ग्राही होती है तथा समुद्री पाधो से लिपटने मे सहायता करती है इसका शरीर छोटी-छोटी हड्डी की प्लेटो में ढका रहता है, जिन्हे अस्थि-प्लेट कहते है सिर धड के साथ समकोण बनाता हुआ आगे की ओर निकला रहता है, इसे रॉस्ट्रम (rostrum) कहते है इसके अगले सिरे पर एक छोटा मुंह होता है

समुद्री घोडा जल मे सीधा खडा तैरता है मादा सैकडो अण्डे देती है लेकिन आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि ये अण्डे वह नर की भ्रूणधानी (brood pouch) मे देती है यह भ्रूणधानी नर के प्रतिपृष्ठ तल पर एक थैली की तरह होती है इसी थैली मे अण्डो का निषेचन तथा विकास होता है

समुद्री घोडा उपवर्ग निओप्टरीजाई (neoptrygii) का सदस्य है इसकी 100 जातियां है जो सफेद पीली, लाल या नीली होती है

होत्जिन (Hoatzıns)

हात्जिन बहुत ही अदभुत पक्षी ह, जा दक्षिणी अमरिका म अमजन (Amazon) नदी क किनार जगला मे पाय जात ह इन पक्षिया का घामला एम छाटे वक्षा पर होता ह जो पानी क उपर झुके हुए होत ह इनका मुख्य भाजन ऐसे पानी के पाधा की पत्तिया ह जा वृक्षा क नीच उगत ह इन पक्षिया की बाली मढक की आवाज जसी हाती ह य बिल्कुल नही डरत इनका स्वभाव पालत् पक्षियो जसा हाता है

होत्जिन की एक विलक्षणता यह है कि इसके बच्चे पूर्णतया बिना पखो के होते ह पखा की जगह दो-दो पजे (claws) होत ह जिनकी सहायता से य छिपकली की भाति चारो परा पर रेगते तुए वक्षा की टहनिया पर चढ जाते है और अजीब बात यह ह कि ये बडी कुशलतापूवक वक्ष के ऊपर म गिर क बल पानी म कूदकर डुबकी भी मारत ह आर पानी म बिल्कुल किसी मछली की भाति तरते भी ह इनक विचित्र पजे दो या तीन सप्ताह म अदश्य हा जाते ह आर वयस्क म इनका कोइ चिह्न तक शेप नही रह जाता

होत्जिन की एक अन्य विशिष्टता द्विकक्ष गलथली (two compartment crop) का विशाल आकार है, जिसमे इसकी खाइ हुइ पत्तिया जमा रहती ह आर पचती भी ह शरीर का एक-तिहाई भाग इसी अग से घिरा होता ह, इसलिए इस पक्षी की उडने की सामथ्य कम होती ह

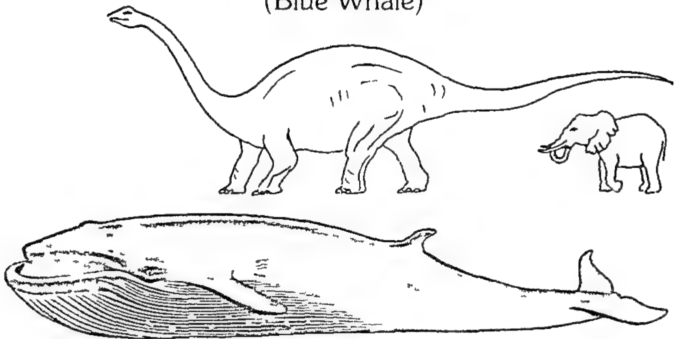
हात्जिन की इन विशिष्टताआ को देखते हुए वज्ञानिक इसे प्राचीन पक्षी (primitive bird) से सबधित मानत हे क्योकि अपनी कुछ विशेपताआ मे यह पक्षिया से कही अधिक सरीसृपो का निकट सबधी प्रतीत हाता ह यह उस समय का एक जीता-जागता नमूना ह, जब सरीसृपावस्था स अनेक जीव पक्षी बन रह थे होत्जिन का विकास ता हुआ परतु अन्य जीवधारिया की अपेक्षा बहुत धीरे- धीर आर उस युग का प्रभाव आज इसकी विचित्रता बन गया ह



हात्जिन

विश्व का सबसे बडा जीव नीली व्हेल

(Blue Whale)



स्तनपायी मूलतः जमीन पर रहने वाले जीव हैं परन्तु इनमें तीन वर्ग—व्हेल (whales) सील (seals) तथा समुद्री-गाय (sea cows) ऐसे हैं जो अपना जीवन समुद्र में व्यतीत करते हैं व्हेल स्तनपायी होते हुए भी कभी पानी से बाहर नहीं आती धरती पर आज तक नीली व्हेल (blue whale) के आकार का कोई भी जानवर पैदा नहीं हुआ इसकी लंबाई 30 मीटर तक होती है और वजन 150 टन अब तक की सबसे विशालकाय मादा व्हेल जो सन 1904 से सन 1920 के मध्य किसी समय दक्षिण जॉर्जिया के सिया अर्जेंटीना ड पस्का तट पर देखी गई थी उसकी लंबाई 33 58 मी (110 2½") थी 20 मार्च 1947 को एक और मादा व्हेल दक्षिण सागर में पकड़ी गई थी जिसकी लंबाई 27 6 मी (90 6") थी और भार 187 टन था उसकी जीभ और दिल का वजन क्रमशः 4 22 टन और 698 5 किग्रा था यह इतनी तेज सीटी बजाती थी कि उसे 850 किमी (530 मील) की दूरी से भी सुना जा सकता था

नीली व्हेल की शक्ल-सूरत मछली जैसी जरूर होती है परंतु यह मछली नहीं बल्कि एक स्तनपायी है इसके फेफड़े होते हैं जिनसे यह सांस लेती है इसके क्लोम (gills) नहीं होते सारे दांत एक समान होते हैं जो चबाने के काम नहीं आते कुछ समय तक इसके शरीर पर बाल भी रहते हैं यह जीवित बच्चे देती है और बच्चों को अपना दूध भी पिलाती है इसका शरीर सुडौल और शक्तिशाली होता है पेट वाला हिस्सा गुलाबी रंग का होता है इसके दो पक्षाकार (flippers) वास्तव में इसके हाथ हैं जो तैरने के लिए सपरिवर्तित हो गए हैं पिछली टांग नहीं होती परन्तु इनके अवशेषक (vestiges) मांस में दबे हुए मिलते हैं इसकी दुम एक शक्तिशाली चप्पू के रूप में विकसित हो चुकी है जो इसको पानी में आगे बढ़ने में मदद देती है यद्यपि यह विचित्र स्तनपायी मछली की तरह ही पानी में आराम से जीवन व्यतीत करता है परन्तु सांस लेने के लिए पानी की ऊपरी सतह पर आता है सांस लेने से बाहर निकली हुई गर्म भाप के

जमन म फुहार बनती ह लकिन वह फहार जा व्हेल तेज धार म पानी की मतह पर आने क बाद फेकता ह,बडी विचित्र हाती ह इस फुहार क साथ एक तेज छनाक की आवाज भी सुनाइ दती हे यह फुहार सिर क ऊपर एक वाय-छिद्र (blow hole) स निकलती ह व्हेल की इम फुहार (spouting) मे ही शिकारी कइ किलामीटर दूर स इमको पहचान लेते हें स्पम व्हल साम लने क बाद दा घटे तक पानी क भीतर रह मकती ह आर लगभग 1000 मीटर गहराई तक जा मकती ह परतु अधिकाश व्हेल प्रति 5 या 10 मिनट बाद सास लेन ऊपर आती ह व्हल तरते हुए सोती ह उस ममय उसका वायु-छिद्र पानी की मतह क ऊपर रहता हे जरूरत पडने पर व्हल 37 किलामीटर प्रति घटा की चाल मे भाग सक्ती ह

नीली व्हल आधक ठड-ममुद्रा म रहती ह आर मदिया म वच्च दन क लिए गम समुद्रा म आ जाती ह मादा व्हल वच्च का पानी म जन्म दती ह आर जन्म के बाद तुरत उम धक्का दकर पानी की मतह पर ले आती ह ताकि वह जीवन का पहला साम ल मक इमके नवजात शिशु की लबाइ 6 5 स 8 6 मीटर (21 3½ स 28 6) क बीच आर वजन तीन हजार किलाग्राम तक हाता ह वच्चे को जन्म दत समय आर उस पानी की सतह तक लाने मे अन्य मादाए भी उमकी सहायता करती ह जन्तुओ मे आपसी सहयोग का एक विचित्र उदाहरण ह इनका यह सहयोग इनको बुद्धिमान जतु सिद्ध करता ह हाल क अध्ययन स यह भी पता चलता ह कि ये एक दूसर से विभिन्न आवाजा मे बाते भी करती ह

एक प्रश्न उठता ह कि व्हेल एक स्तनपायी होते हुए भी मछली की भाति पानी स बाहर लाए जाने पर क्यो मर जाती ह? वास्तविकता यह ह कि यह मछली की भाति (पानी न हाने के कारण) सास रुकन से नही मरती बल्कि जमीन पर आने से इमक पृष्ठ आर छाती के भार से फेफडे दब जात ह, व्हेल मास नही ल पाती आर दम घुटने म मर जाती ह

अधाधुध शिकार क कारण इनकी सख्या घटती जा रही थी। अनमान लगाया गया ह कि सन् 1981 मे ससार क सभी जतुआ म लगभग 21 हजार स 23 हजार क बीच नीली व्हल माजूद थी। व्हेल की इस विचित्र जाति को मन् 1967 से कानूनी सरक्षण मिला हुआ हे अर्थात् इसके शिकार पर पाबदी लगा दी गइ ह

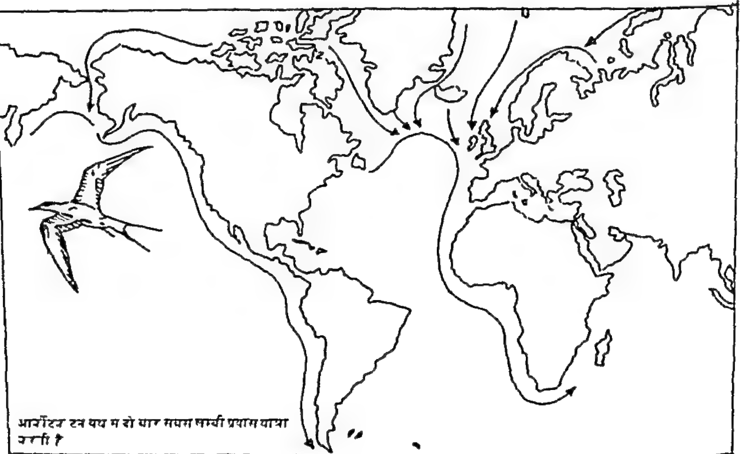
विचित्र टर्न (Terns)

गैल परिवार (gull family) की टन (terns) जिन्ह कुररी या गगाचील भी कहत हे, विश्व म सभी जगह पाइ जाती ह य सभी महासागरो में आर्कटिक (Arctic) तथा अण्टार्कटिक (Antarctic) म भी आर नदिया, झीलो तथा दलहनो म देखी जाती ह आमतार पर टन छाटी दबल-पतल शरीर वाली चिडिया ह,जिसक पख नाकीले आर दुम लबी तथा बीच म फटी हइ हाती ह गल की अपेक्षा टर्न अधिक सन्दर हाती ह

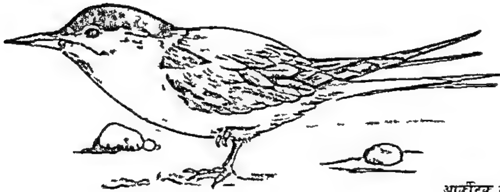
टन पानी की सतह के कछ ऊपर उडत हुए मछलियो का शिकार करती ह शिकार दिखाई दत ही अपन लब नाकील पखा का बद करके नीच झपटती ह आर चाच मे शिकार पकड हए उड जाती ह इसकी एक विशेषता यह भी है कि शिकार का हवा म ही झपट कर निगल जाती ह मछली इसका मुख्य आहार ह परतु टेडपोल तथा जल-कीट भी इसको प्रिय हे टर्न अपना घासला भूमि के किनारे बनाती हे आर आमतार पर पानी क बलुआ तटो की भमि पर सामूहिक रूप से अण्डे देती हे

दुनिया म टर्न की 39 जातिया मे साधारण टर्न (common tern) ही एसी चिडिया ह,जिस आसानी ा पहचाना जा सकता ह आर्कटिक टन भी दखन मे बिल्कुल साधारण टर्न क समान ही होती ह इन दाना मे पहचान कोई जानकार ही कर सकता ह

टर्न प्रवासी पक्षी के रूप म अधिक प्रसिद्ध ह जन्तुआ के प्रवसन के बारे म पत्र-पत्रिकाआ म आप पढते ही



आर्कटिक टर्न वर्ष म दो बार सबस लम्बी प्रवास यात्रा करती है



आर्कटिक टन

रहत ह वास्तव म पक्षिया म प्रवसन की कला अन्य जतुओ की अपक्षा आधक विकासत हइ ह आधक सर्दी या गर्मी का पक्षिया पर वहत कम प्रभाव पडता ह आर एसी परिस्थितिया म व जीवत रह सक्त ह परतु यदि भाजन मिलन म कठिनाइ हा ता उन्ह जीवित रहन क लिए अपना स्थान वदलना पडता ह इसलिए व ऐसे स्थाना पर चल जात ह,जहा उनका अनकूल मामम मिल सके जव उनक यहा का मामम अनुकूल हान लगता ह ता व अपन मल निवास पर वापस लाट जाते है इनकी इस यात्रा की दूरी कइ हजार मील तक हो सकती ह प्रवासी पक्षिया म आर्कटिक टन (उत्तरध्रुवीय कुररी) का चम्पियन समझा जाता ह यह चिडिया वष म दा वार सवस लबी प्रवास यात्रा करती ह जाड म आर्कटिक स दक्षिण की आर पृथ्वी क आर-पार उडती हुइ ग्रीष्म काल अण्टार्कटिक प्रदेश म विताकर फिर वापस लाट आती ह आमतार पर आर्कटिक टन की एक तरफ की यात्रा का फासला 11 000 मील स भी अधिक हाता ह यह चिडिया हर वष कम से कम 20 000 मील की यात्रा करती ह

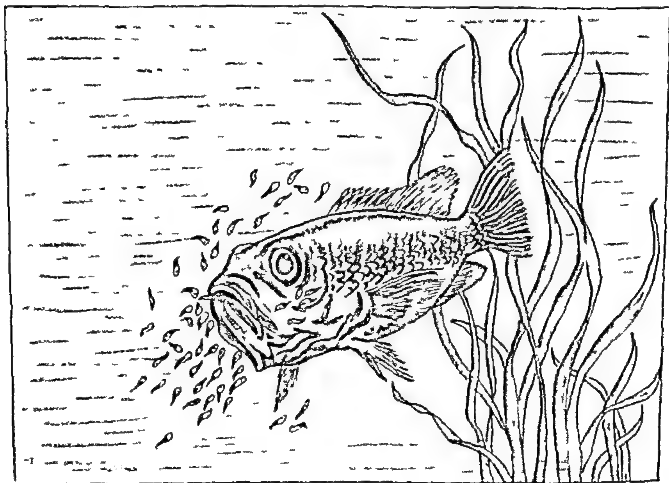
गिनेस वुक ऑफ रिकॉर्ड्स क अनुसार 5 जुलाइ, 1955 को कडलक्ष सेंक्चुअरी म एक आर्कटिक टन का जव यह घासल म ही थी एक छल्ला पहनाया गया था 16 मइ 1956 का इसे एक मछर ने पश्चिमी आस्ट्रेलिया म जीवित पकडा था उस समय वह 19 200 किमी (12 000 मील) की दूरी तय कर चुकी थी

सामान्य टन म आर्कटिक टन की उम्र सवस ज्यादा हाती हे जमनी म 1920 म आर्कटिक टन का छल्ला पहनाया गया था 27 वष पश्चात् उसी जगह उसे एक विल्ली न मारा था

आर्कटिक टन वास्तव म एक विचित्र चिडिया ह परतु काली कुररी (Soo'v tern) भी अपनी विचित्रता म कुछ कम नही ह यह सभी पक्षिया म सवसे अधिक हवा मे रहने वाली चिडिया ह एक अजीव बात यह ह कि घासला छाडने क वाद लगातार तीन-चार वष तक यह आकाश मे ही रहती ह इस अवधि क पश्चात् ही यह चिडिया धरती पर प्रजनन क लिए आती ह

मछली जो अपने अण्डे मुह मे रखकर सेती है

मुख-प्रजनक (mouth breeders) विभिन्न किस्म की छोटी मछलिया हैं,जो सुमुद्र के अतिरिक्त नदिया आर झीला म भी पाइ जाती हैं कैटफिश (catfish) जॉफिश (jawfishes) तथा कार्डिनलफिश (cardinal fish) इसी किस्म की मछलिया हैं। नर ओर मादा मछलिया अण्डे सेने की क्रिया तथा अपने बच्चो का पालन-पोषण मुह म ही करती हैं आमतार पर अण्डे-बच्चा की जिम्मदारी मादा पर हाती ह परतु इन मछलियो मे अण्ड सने का काम नर-मछली को करना पडता हे मादा मछली अण्डे दती ह आर नर उस अपने मह म रख लेता है अण्डो से मुह पूणतया भर जाने के कारण नर कुछ खा भी नही पाता और उसे अण्डो से बच्चे निकलने तक भूखा ही रहना पडता ह लगभग एक महीने बाद बच्चे निकलना शुरू हो जात हैं और अब मादा की जिम्मेदारी शुरू होती ह वह बच्चो को नष्ट होने से बचाने क लिए 15 दिनो तक उन्हे अपने मुह म रखती ह बच्चे मुह से निकल कर बाहर पानी मे भी तैरते रहते हैं परतु जसे ही कोइ खतरा महसूस हाता है मादा उन्हे अपने मुह मे वापस भर लेती ह



स्वर्ग के पक्षी
(Birds of Paradise)

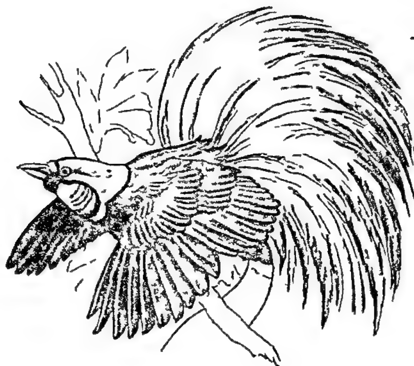
यूरोपीय वैज्ञानिको ने सर्वप्रथम सन् 1522 म एक ऐसा पक्षी देखा, जो बहुत अधिक सुन्दर और आकषक था उन्ह विश्वास ही नही हुआ कि यह इसी ससार का काइ जीव हो सकता है, इसलिए उमका नाम 'स्वग का पक्षी' रख दिया गया इनकी 40 जातिया न्यू गिनी (New Guinea) तथा इसके द्वीपो म ओर चार जातिया आस्ट्रेलिया के जगला मे पाइ जाती ह

कुछ स्वर्ग क पक्षिया के शरीर का आकार लगभग तेलियर पक्षी (starlings) के बराबर होता हे—कुछेक का कौवे स बडा परतु वे अपने पखा क कारण ज्यादा बडे दिखाई देते हैं

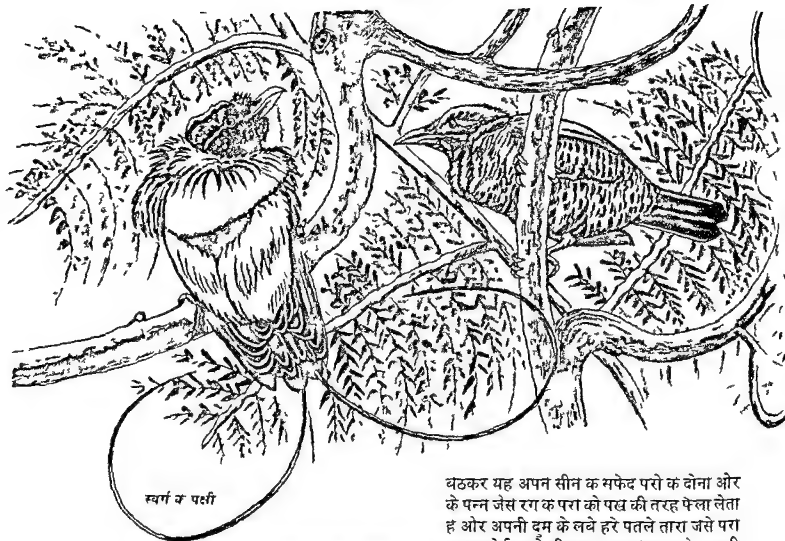
रिबन टेल्ड स्वर्ग का पक्षी (ribbontailed bird of paradise) एक कौवे से भी छाटा होता है, परतु इसके दो सफेद पूछ के पर लगभग 90 सेमी (एक गज) लब होते हैं जिनको मिलाकर पूछ स चोच तक इसकी लबाई 107 सेमी (42 इच) हो जाती हे

स्वर्ग के पक्षी के पखो का रग ब्राउन या काला होता है परतु ये मुलायम इन्द्रधनुपी रगो के पिच्छको (plumes) म छुपे रहते हे सभी नरो के चटकीले पर होते हैं सिर और गरदन पर पख की तरह झालर होती हैं दुम के पर मुलायम बालो के समान हाते हैं,जो बिल्कुल किसी फव्वारे की तरह दिखाई देते हैं मादा ज्यादातर खामोश रहती हे परतु नर काफी शोर-गुल करता ह ओर अपनी सुन्दरता का प्रदर्शन भी

यह कोई आश्चर्य की बात नही है कि द्वीप-निवासी



–स्वग या पक्षी



स्वर्ग क पक्षी

इन्ह दवताओ का पक्षी कहत ह एक जमाना था जब पश्चिम म महिलाए अपनी टापिया को इनक परा म सजाती थी आर स्थानीय शिकारी आर सरदार अपनी सजावट करते थ उस समय इन परा का मूल्य मान स भी बीस या तीस गुना अधिक था इस खूबसूरत पक्षी का विलुप्त होने स बचान के लिए इनके परा का व्यापार कानूनन बद करा दिया गया वरना यह पक्षी आज दिखाइ न पडता

स्वग का किग पक्षी (King Bird of Paradise) इतना सुन्दर हाता है मानो रत्ना मे सजा हा दुम क पर तारा क समान, परा की त्वचा नीली आर सिर तथा पीठ पर हर लाल आर पील पर हात ह

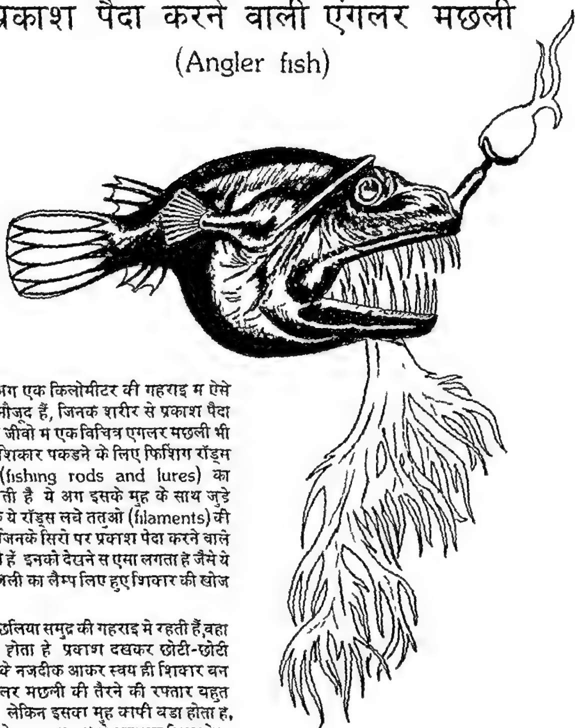
स्वर्ग का नीला पक्षी (Blue Bird of Paradise) जिम्नस्ट हाता ह वह अपन पर की उगलियो द्वारा उल्टा लटक जाता ह एसी अवस्था म उसक नील आर मखमली पर उसक चारा ओर किसी रगीन पख की तरह दिखाइ दत हैं

स्वग का किग पक्षी नतक हाता ह टहनी पर बठकर यह अपन सीन क सफेद परो क दोना ओर के पन्न जैस रग क परा को पख की तरह फैला लेता ह ओर अपनी दुम के लबे हरे पतले तारा जसे परा का अपने सिर से भी ऊपर उठा लेता ह ओर अपनी हरी झालर व सिदूरी गले का फुलाकर अन्य पक्षिया का अपने सान्दय आर शारगुल स आकर्षित करन क पश्चात एसा नृत्य करता ह कि दखते ही रहिए नृत्य क साथ इसका राग भी हाता ह लकिन बसुरा

स्वग क पक्षी अनुरजन नत्या का प्रदशन जमीन पर या वृक्षा की डालिया पर करते ह कुछ जातिया वक्षा पर नत्य क्षत्र बनान क लिए वहा की पत्तिया आर शाख तोडकर एक मच बना लती ह आर कुछ तो वक्ष की ऊपरी पत्तिया भी ताडकर साफ कर दती ह ताकि सर्य का प्रकाश स्पॉट-लाइट की तरह नतका पर पड नत्य क बाद नर आर मादा का जाडा बन जाता ह परतु य खूबसूरत नर घासला बनान या बच्चा क पालन पाषण म कोइ सहयाग नही दत यह जिम्मदारी मादा का ही निभानी पडती है इतना अवश्य ह कि कुछ दिना बाद नर घासल पर नजर रखन लगता है आर उसकी दुश्मना स रक्षा भी करता है

प्रकाश पैदा करने वाली एंगलर मछली

(Angler fish)



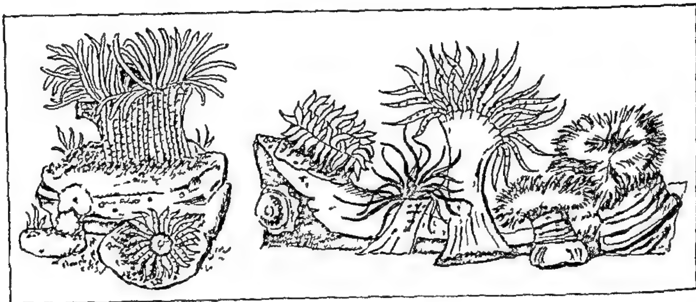
समुद्र मे लगभग एक किलोमीटर की गहराइ म ऐसे समुद्री-जीव मौजूद हैं, जिनक शरीर से प्रकाश पैदा होता है इन्ही जीवो म एक विचित्र एगलर मछली भी है जो अपना शिकार पकडने के लिए फिशिग रॉड्स और ल्युर्स (fishing rods and lures) का इस्तेमाल करती है ये अग इसके मुह के साथ जुडे रहते हैं इनके ये रॉड्स लबे ततुओ (filaments) की भाति होते हैं जिनके सिरो पर प्रकाश पेदा करने वाले बल्ब लगे होते हें इनको देखने स एसा लगता हे जैसे ये मछलिया विजली का लैम्प लिए हुए शिकार की खोज मे निकली हैं

जो एगलर मछलिया समुद्र की गहराइ मे रहती हैं,वहा काफी अधेरा होता हे प्रकाश दखकर छोटी-छोटी मछलिया इनके नजदीक आकर स्वय ही शिकार वन जाती हैं एगलर मछली की तैरने की रफ्तार बहुत सुस्त होती है लेकिन इसका मुह काफी वडा होता ह, जो शिकार को तुरत पकडने मे सहायक सिद्ध होता है।

एगलर मछलियो मे गूजफिश (goosefish) सबसे बडी होती है, जिसकी लबाई लगभग सवा मीटर और वजन 35 किग्रा होता है।

समुद्री एनीमोन या 'समुद्र का फूल'

(Sea anemone)



समुद्र में भी एक संसार आबाद है, जिसमें शायद समुद्र के बाहर के संसार से भी अधिक जीव हैं। इस विचित्र संसार में कहीं ऊंचे-ऊंचे पहाड़ हैं तो कहीं लंबे-चौड़े समतल स्थान और कहीं बहुत गहरे बड़े-बड़े खड्ड, जिनमें हजारों किस्म के जीवों की पूरी एक दुनिया ही आबाद है। इस रंग-बिरंगी दुनिया में कहीं समुद्री जीवों के खूबसूरत जंगल हैं, तो कहीं घास के तैरते हुए मैदान जैसे और कहीं फूलों के दूर तक फैले हुए बाग जैसे।

समुद्र के बागों में ऐसे फूल भी खिले दिखाई देते हैं जो रंग-बिरंगे और बहुत ही खूबसूरत होते हैं। इन्हें समुद्र के फूल या समुद्री-एनीमोन (sea anemones) कहते हैं। ये पुष्पजीव (plant animals) भी कहलाते हैं क्योंकि ये फूलों की तरह रंगीन और सुंदर होते हैं और मछली, कीड़े, केकड़ा तथा अन्य जीव जो इनकी लहराती भुजाओं के स्पर्श में आते हैं खा जाते हैं। इसलिए एनीमोन में फूलों की तरह अवश्य हैं लेकिन फूल नहीं हैं। अन्य सीलेण्टेट्स (coelenterates) सदस्यों की भांति इनका शरीर भी बेलनाकार होता है और एक सिरे से चट्टान पर लगा रहता है तथा दूसरे सिरे पर मुख के चारों ओर लंबे-लंबे धागे से लगे रहते हैं। जब ये धागे पूरे खुले होते हैं तो यह प्राणी एक सुंदर फूल-सा लगता है। इसका शरीर कोमल होता है क्योंकि इसमें कंकाल नहीं होता। इन जंतुओं के शरीर के अंदर एक बड़ी गुहा होती है, जिसे सिलेण्टॉन कहते हैं। यह गुहा मुख के द्वारा ही शिकार ग्रहण करते हैं तथा इसी द्वार से मल को भी बाहर निकालते हैं, क्योंकि इनमें गुदा (anus) नहीं होती। इनके मुख द्वार के चारों ओर जो लंबे-लंबे धागों की तरह रचनाएं होती हैं, उन्हें स्पर्शकाय (tentacles) कहते हैं। प्रत्येक स्पर्शक में अनेक गोल तथा कंटकयुक्त रचनाएं पाई जाती हैं, जिन्हें दंशकाएं (nematocysts) कहते हैं। इन्हीं के द्वारा जन्तु अपनी रक्षा तथा छोटे-छोटे जन्तुओं का शिकार भी करते हैं।

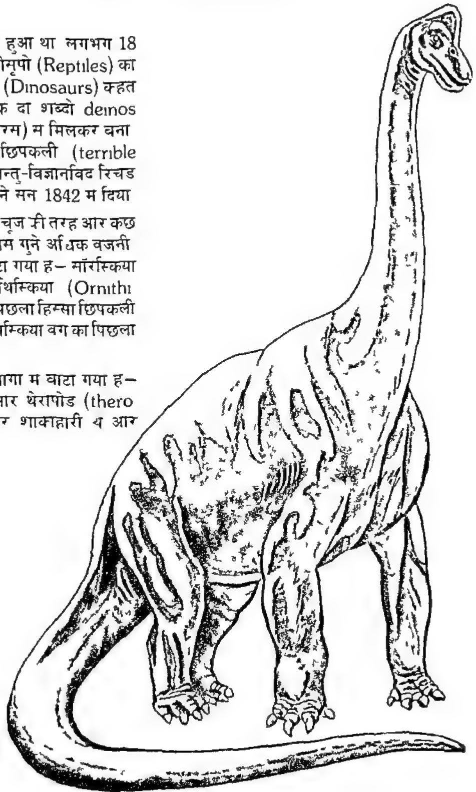
समुद्री एनीमोन चट्टान से चिपका दिखाई देता है बिल्कुल किसी पौधे की तरह ही लेकिन यदि आप इसे थोड़ी देर ध्यानपूर्वक देखें तो यह फूल आपको धीरे-धीरे चलता हुआ नजर आएगा और इसका शरीर भी अन्य जानवरों की तरह हरकत करता दिखाई देगा।

डाइनोसौर (Dinosaurs)

जब मनुष्य का जन्म भी नही हुआ था लगभग 18 करोड वर्ष पूर्व धरती पर सरीसृपो (Reptiles) का साम्राज्य था उन्हे डाइनोसार (Dinosaurs) कहते है डाइनोसार ग्रीक भाषा के दो शब्दो deinos (डाइनोस) तथा sauros (सौरस) से मिलकर बना जिसका अर्थ है—भयंकर छिपकली (terrible lizard) यह नाम एक पुराजन्तु-विज्ञानविद रिचर्ड ओवेन (Richard Owen) ने सन 1842 मे दिया

कुछ डाइनोसार बहुत छोटे थे चूजे की तरह और कुछ बहुत विशाल, हाथी से भी बीस गुने अधिक वजनी डाइनोसार को दो वर्गो मे बाटा गया है— सॉरिस्किया (saurischia) और ओर्निथिस्किया (Ornithischia) सॉरिस्किया वर्ग का पिछला हिस्सा छिपकली की भांति होता है और ओर्निथिस्किया वर्ग का पिछला हिस्सा पक्षियो जैसा

सॉरिस्किया वर्ग को भी दो भागो मे बाटा गया है— सोरोपोड (sauropods) और थेरोपोड (theropods) सोरोपोड डाइनोसार शाकाहारी थे और थेरोपोड मासाहारी



ब्रैकियोसौरस

मध्यजतुक-युग (mesozoic era) क प्रथम काल ट्रयासिम (triassic) म डाइनोसारा की सख्या बढ गइ इस काल क मध्य तक व अन्य मभी मर्गमृपा की कुल मख्या म भी अधिक हा गए थे परन्तु इनका आकार ज्यादा बडा नही था य प्राय पिछल परा म आधा खड हुए चलत थ

डाइनासारा का म्वणकाल टयामिक (triassic) काल की समाप्ति पर शुरू हुआ जुरामिक (jurassic) काल क प्रारभ म विशालकाय एल्लामारमा (allo saurus) का जन्म अमरिका म हुआ इसकी लम्बाइ 9 14 मी थी इमक म्थूल तीक्ष्ण पजे तथा कटार जस दात थ इसी दारान ब्राटामारम (brontosaurus) आर जाइगटामारम (gigantosaurus) आर डिपलाडाकम (diplodocus) विशपत उल्लखनीय है वज्ञानिक इन्ह मारापॉड (sauropods) कहत ह इनकी लम्बाइ 26 6 मी तक हाती थी आर वजन लगभग 50 टन म भी अधिक हाता था य भयानक विशालकाय जन्तु शाकाहारी थ खाने क लिए भूमि पर आत थ आर खतर क ममय पानी म चल जात थ इनका पूरा शरीर पानी क अदर डूबा रहता था कवल गदन माम लन क लिए बाहर रहती थी

हर किम्म क डाइनामारा का मम्तिष्क बहुत छाटा हाता था उदाहरण क तार पर 10 टन क म्टगासारस (stegosaurus) का ही ले लीजिए उसक मम्तिष्क का वजन कवल 85 ग्राम हाता था

मारापॉडम जानवरा म दा मस्तिष्क-मडल हात थ जिनम य अपनी मभी ममम्याय सलझा मकत थ परत उनम काइ भी गम्भीर विचार करन की क्षमता नही थी

आर्नीथिम्किया (ornithischia) श्रणी क जरासिक डाइनामार म्टगामारम (stegosaurus) काफी बुद्धिमान थ य लगभग 9 14 मी लम्ब आर 10 टन भारी हात थे य चतष्पद (sauropod) थे इनका सिर बहुत ही छाटा हाता था जिसम तीन मम्तिष्क हात थ परत फिर भी बुद्धि क मामल म आजकल क माधारण जन्तु स भी बहुत पीछ थ इनक विशाल शरीर पर पुष्ट किन्त शिथिल रूप म मढी हइ हड्डिया की दाहरी पटिटया हाती थी



इग्वनाडॉन

मध्यजतुक युग (mesozoic era) क अतिम सात करोड वप क्रिटेशम (cretaceous) काल कहलाता ह इम काल म अत्यत भयानक जन्त पदा हुए इनम टाइरनोमारम (tyrannosaurus) इतिहास का दीघतम मामाहारी था टाइरनासारम की लम्बाइ लगभग 12 80 मी आर ऊचाइ 12 5 मी थी इमकी पिछली टाग हाथी की अपक्षा भारी माटी तथा लम्बी थी इमके जवडे वड मजवूत थ दात 6 इच लम्ब तथा 1 इच चाडे हात थ पज भी वड डरावन थे

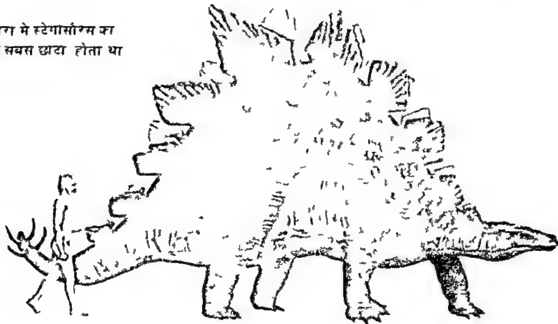
क्रिटशस (cretaceous) काल म ही एक बिल्कुल विचित्र विशालकाय सरीमप इग्वानाडान (iguanodon) हुआ करता था, जा दा परा म अपना मिर जमीन मे लगभग 4½ मीटर ऊपर उठाकर मीधा खडे होकर चलता था इमकी लम्बाइ 10 मीटर हाती थी इग्वानाडान क पर झिल्लीदार थ तथा अगठ म कील हाती थी पूछ भारी आर माटी हुआ करती थी

मध्यजतुक युग म, जा 14 कराड वप तक रहा था डाइनोमार का राज्य फला हुआ था इमलिए इम युग को मरीमृप कल्प (age of reptiles) कहत ह आज डाइनामार नही ह लगभग 7 कराड वप पव इनका अन्त हा गया

यदि इन विलुप्त जन्तुआ क जीवाश्म या फॉसिल प्राप्त न हात ता हम यह पता भी नही हाता कि कभी ऐम विचित्र विशालकाय जन्तु भी हुआ करते थ जीवाश्म प्राचीन पेड-पाधा आर जीव-जतुओ की चट्टाना म मिली निशानियो को कहते ह विभिन्न देशो के सग्रहालया म डाइनामोरा के जीवाश्म सुरक्षित ह ससार-भर के वज्ञानिको ने दश-विदश घूमकर इनका सग्रह किया ह प्राचीनतम मनारजक कहानी हम जीवाश्मा से ही ज्ञात हुइ ह

आज तक क रिकॉड के अनुसार ससार का सबसे लम्बा डाइनासार डिप्लोक्स ह, जो 15 करोड वप पूव उ अमरिका क पश्चिमी भाग म पाया जाता था पिटसबग पसिल्वनिया की 'कार्नेगी म्यूजियम आफ नेचरल हिस्टी म उमक हिस्मा को दोवारा जाडकर उमका ढाचा तयार किया गया ह जिमकी कुल लम्बाइ 26 6 मी (87 6) ह मापा क विवरण इम प्रकार ह—मिर आर गदन 6 7 मी (22), धड 4 5 मी (15) पछ 15 4 मी (50 6) शरीर की ऊचाइ 3 5 मी (11 6) ह

ब्राकियामॉरिड मवम भारी जन्तु था जो आज स लगभग साढ तरह करोड स लकर साढ मालह कराड वप पहल पूर्वी अफ्रीका, महारा पुतगाल व म रा अमरिका क दाक्षण-पश्चिमी भाग म पाया जाता था मन 1909-11 क दारान दक्षिण तजानिया क प्रसिद्ध क्षत्र तदागरू (Tendaguru) म एक जमन अभियान



डाइनासौरा मे स्टेगासौरम का मस्तिष्क सबस छाटा होता था

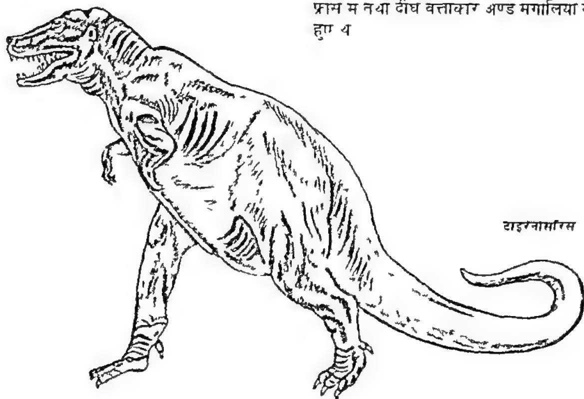
दल न जा खुदाइ काय किया था उसम ब्राकियामॉरिड का एक सम्पूण ककाल प्राप्त हुआ था यह ककाल अव पूर्वी वलिन की हम्वाल्ट म्यूजियम मे सुरक्षित ह उसकी लम्वाइ 22 7 मी (74 6), ऊचाइ 11 8 मी (39) ह कम्प्यूटर की गणना क अनसार अपन जीवनकाल म उसका भार 77 टन रहा होगा

सन 1972 की गमिया म पश्चिमी कोलोरेडो (स रा अ) क अकम्पग्र पठार (Uncompahgre plateau) की एक सूखी खदान (dry mesa quarry) म स विशालकाय ब्राकियामॉरिड क अवशष प्राप्त हए उसकी अनुमानित लम्बाइ लगभग 27 4 मी (90) तथा ऊचाइ 15 2 मी (50) ह उसका अनमानित भार लगभग 138 टन रहा होगा

सन 1934 म कटन आक्लाहामा (स रा अ) क पास एक विशालकाय एण्डाडमस अथात एलामॉरस का ककान खदाइ म प्राप्त हुआ था इस मासभक्षी डाइनासार का दापाया कद 4 87 मी (10) आर कल लम्बाइ 12 8 मी (42) थी

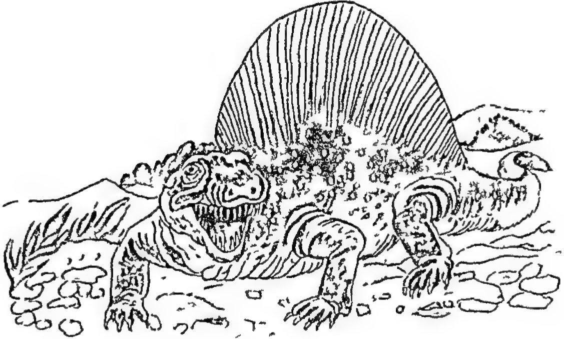
अव तक ज्ञात डाइनोसार की सभी जातिया म हिप्सलासॉरस प्रिस्कस जाति क जीवा के अण्ड सबसे वडे हाते थे 8 करोड वष पूर्व पाया जाने वाला यह सॉरापॉड 9 14 मी (30) लम्बा होता था अक्तूबर 1961 म दक्षिणी फ्रास म ऐक्स-एन-प्रावेन्स क निकट दूरा (Durance) घाटी म पाए गए कुछ नमूनो क अवशष स यह ज्ञात होता ह कि इनक अण्ड 300 मिमी (12) लम्बे रहे हाग आर इनका व्यास 255 मिमी (10) रहा हागा

भारत म डाइनासार क अस्थि-जीवाश्म जवलपुर, काटा आर प्रान्हीता गोदावरी क्षेत्रा स प्राप्त हुए थ अभी हाल मे गुजरात राज्य खेडा जिला की वालासिनार तहसील के एक गाव रयाली क एक किमी पश्चिम म डाइनासार के विभिन्न अस्थि-जीवाश्म जस दात फीमर ह्यमरस टिविया, पल्विक गडल कशरुकाए तथा सीग इत्यादि प्राप्त हुए ह इसी क्षत्र क ए सी सी कवारी रयाली तथा खमपुर इत्यादि स्थाना म डाइनासार के फुटवाल जसे अडा क जीवाश्म भी वडी सख्या म प्राप्त हुए ह इन अडा क जीवाश्मा का व्यास 12–20 समी तथा अडकवच की माटाइ 2 मिमी ह इसस पूव डाइनासार क अड फ्रास म तथा दीघ वत्ताकार अण्ड मगालिया म पाप्त हुए थ



टाइरनासॉरस

डाइमेट्रोडोन (Dımetroden)



लगभग 180 000 000 वष पूव पथ्वी पर रहने वाले जानवरो मे अधिकाश सरीसप थ उनम मे कुछ म स्तनपायिया क भी लक्षण पाय जात थे इनमे मे एक सवस प्रसिद्ध जन्त डाइमेटाडान था जो अमरिका की पर्रामयन कालीन शिलाआ म प्राप्त हुआ

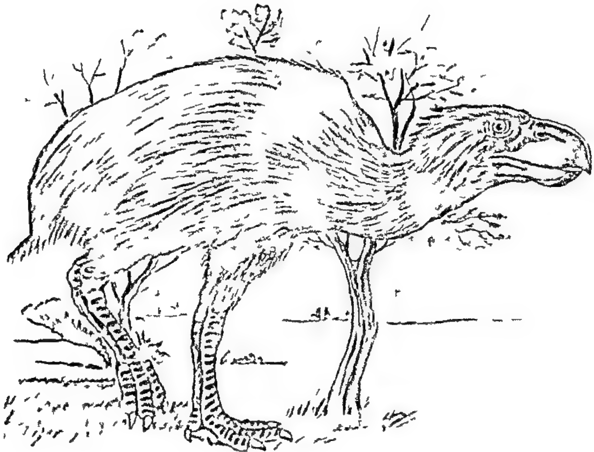
डाइमटोडान लगभग 3 मीटर लम्बा होता था स्तनपायिया की तरह इसक दात होत थ परतु सरीसपा की भांति इसकी शल्कदार त्वचा हाती थी इसकी पीठ की रीढ म परी लम्बाइ तक खडे लम्ब बादबाना जस हात थ,जिन पर त्वचीय झिल्ली मढी हाती थी प्रागतिहासिक जानवरो म इसका रूप विचित्र माना जाता ह

बादबान या पाल जसी यह विचित्र झिल्ली उसके शरीर के तापमान को नियंत्रित करन धूप या हवा से रक्षा करन क लिए आवश्यक दिशा मे झुक जाती थी

डाइमटाडोन एक हिंसक मासाहारी था उसम भीषण प्रदर्शित दतावली हाती थी

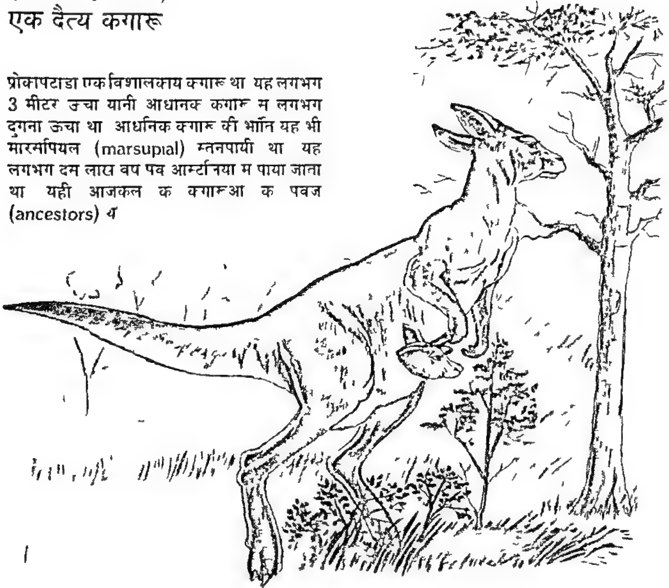
दैत्य चिड़िया
(Monster bird)

एक विशालकाय चिड़िया जो डायट्रिमा (Diatryma) कहलाती है 5 करोड़ वर्ष पूर्व पाई जाती थी यह प्रारंभिक स्तनपायियों का ही युग था डायट्रिमा लगभग 3 मीटर ऊंची होती थी यानी अफ्रीका के हाथी से कुछ ऊंची इसका भोजन मांस और छोटे-छोटे स्तनपायी थे डायट्रिमा उड़ नहीं सकती थी यह लगभग साढ़े चार करोड़ वर्ष पूर्व विलुप्त हो गई



प्रोकोपटोडा
(Procoptoda)
एक दैत्य कगारू

प्रोकापटाडा एक विशालकाय कगारू था यह लगभग 3 मीटर उचा यानी आधानक कगारू म लगभग दुगना ऊचा था आधनिक कगारू की भाँति यह भी मारर्सपियल (marsupial) स्तनपायी था यह लगभग दस लाख वष पव आस्ट्रेलिया म पाया जाता था यही आजकल क कगारूआ क पवज (ancestors) थ



असिदन्त बिल्लिया
(Sabre toothed cats)



असिदन्त बिल्लियां दो करोड़ 60 लाख वर्ष पूर्व पाई जाती थीं। इनके दांत कटार की भांति लम्बे और तेज होते थे जिनसे ये हाथियों की मोटी त्वचा को फाड़ देती थीं।

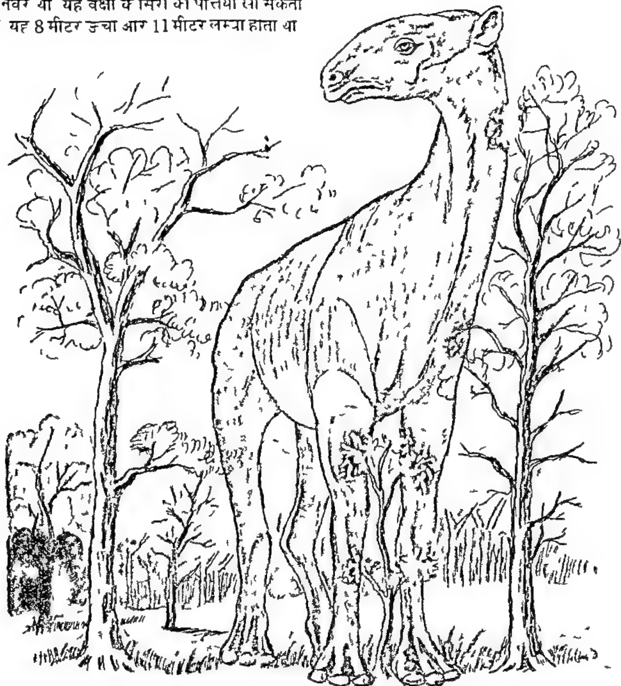
असिदन्त (sabre toothed) बिल्लियां कई किस्म की होती थीं। यहां जो चित्र में दिखाई गई है, मकराइडस (machairodus) कहलाती है। यह 2½ मीटर लम्बी होती थी। यह जंगलों में जानवरों पर धोखे से हमला करके उनको अपना शिकार बनाती थी। इसके तेज पंजों से विशालकाय जन्तु भी घबराते थे।



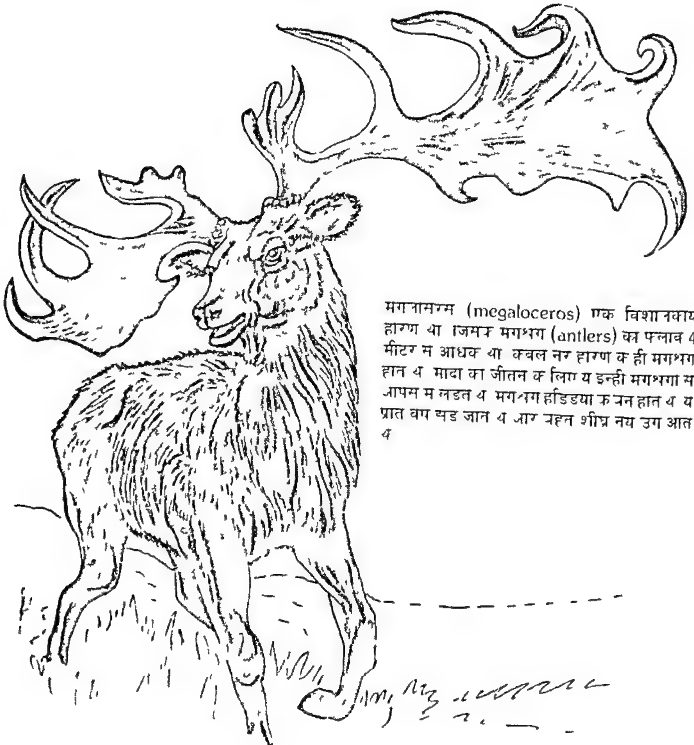
असिदन्त बिल्लियां अपने पंजों को पेड़ के तने में रगड़ कर तेज करती थीं

विशालकाय स्तनपायी
(Giant mammal)

यह प्रागैतिहासिक राइनोसरस (prehistoric rhinoceros) बलूचीथीरियम (baluchitherium) कहलाता है। लगभग ढाई करोड़ वर्ष पूर्व यह पृथ्वी पर पाया जाने वाला सबसे ऊंचा स्तनपायी जानवर था। यह वृक्षों के सिरे की पत्तियां खा सकता था। यह 8 मीटर ऊंचा और 11 मीटर लम्बा होता था।



प्रागैतिहासिक भीमकाय हरिण
(The Prehistoric Giant Deer)

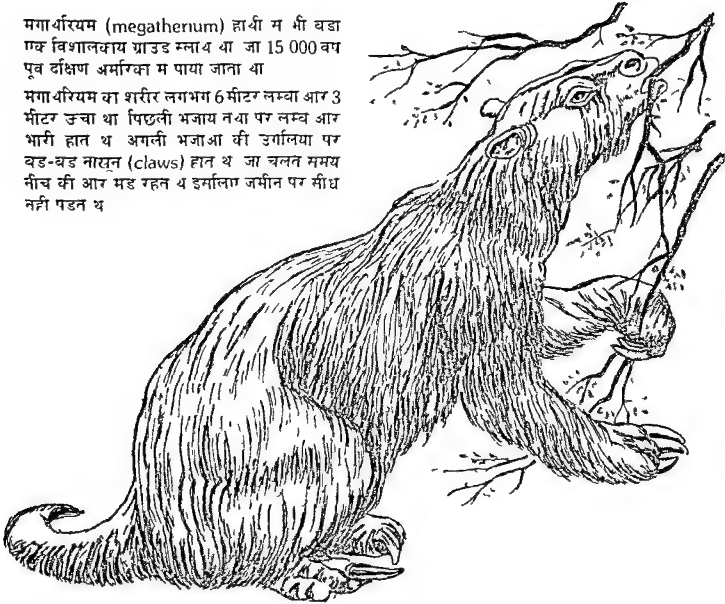


मगनामग्म (megaloceros) गक विशानकाय हाग्ण था जिमक मगभग (antlers) का फलाव 4 मीटर म आधक था कवल नर हाग्ण क ही मगभग हान थ मादा का जीतन क लिग य इन्ही मगभगा म आपम म लडत थ मगभग हडिडया क बन हात थ य प्रात वग यड जान थ आग नहन शीघ्र नय उग आत थ

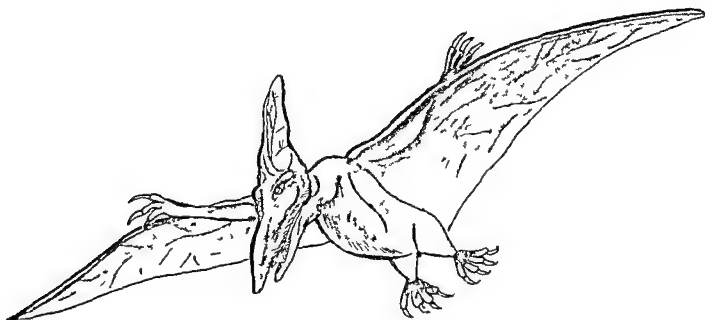
विशालकाय ग्राउड स्लॉथ
(Giant ground sloth)

मगार्थरियम (megatherium) हाथी म भी बडा एक विशालकाय ग्राउड स्लाथ था जा 15 000 वष पूव दक्षिण अमरिका म पाया जाता था

मगाथरियम का शरीर लगभग 6 मीटर लम्बा आर 3 मीटर उचा था पिछली भजाय तथा पर लम्ब आर भारी हात थ अगली भजाआ की उगलिया पर बड-बड नाखून (claws) हात थ जा चलत समय नीच की आर मड रहत थ इसलिए जमीन पर सीध नही पडत थ



आकाश पर शासन करने वाले सरीसृप



पृथ्वी क प्राचीन इतिहास स पता चलता हे कि माध्यमिक काल म सरीसृपा ने 15 करोड वष तक सपूण पथ्वी पर राज्य किया उस समय पथ्वी पर मानव जाति आर आज पाए जाने वाल जतुआ का कही नाम तक न था इन दिना आकाश म भी वड-वड विचित्र जीव मडराया करत थ परतु उन्ह पक्षी नही कहा जा सकता हुआ यह था कि कइ प्रकार क सरीसपा न ही अपन को आकाश म उडन याग्य बना लिया था उनक शरीर की खाल दाना आर अगली और पिछली भुजाआ क बीच फल जाती थी उन भुजाआ की एक-एक उगली शरीर स ज्यादा लबी थी जा इस खाल का छाता की भांति फला देती थी इसी फली हड खाल क द्वारा व आकाश म उड सकत थ उनकी हड्डिया खाखली हाती थी आर उनक सीन की हड्डिया पक्षियो जेसी ही थी इन सरीसृपा मे चमगादड की तरह झिल्लीदार बाजू होते थे

वेज्ञानिक इन उडने वाले सरीसृपो का 'टेरोडेक्टाइल' कहत हैं उनमे से कुछ तो हाथी क बराबर डीलडाल वाले प्राणी थे। अब तक ज्ञात दुनिया के विलुप्त, जीवा म टरासार (pterosaur) ऐसा सबसे बडा जीव था, जा उड सकता था आज से लगभग 6 5 करोड वष पूर्व इसके स रा अमेरिका के टेक्सास राज्य क एक स्थान पर उडन क प्रमाण मिले हें सन् 1971 म इस जीव के कुछ अवशेष खाजे गए थे उनके आधार पर कहा जा सकता है कि इस जीव क पखा का फैलाव 11-12 मीटर (36-39) और वजन 86 किग्रा रहा होगा

सबसे पहला पक्षी आरकियोप्टैरिक्स
(Archaeopteryx)

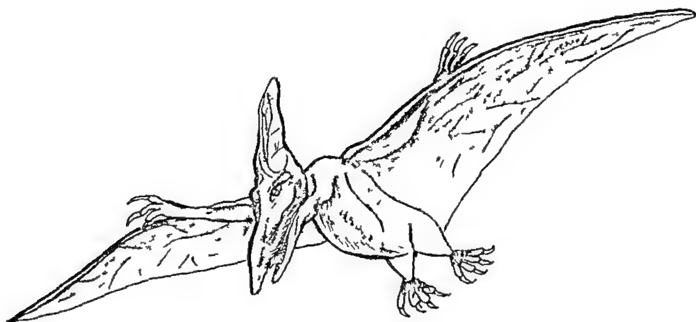


जब पथ्वी पर अतिम हिमयुग छान लगा, तब बडे-बड डाइनासार टरोडेक्टाइल ओर प्लायोसौरस आदि, जो धरती, वायु आर जल पर लाखा वर्ष स शासन कर रह थे, अचानक पथ्वी से लुप्त हा गए किसी प्रकार छोट डीलडाल वाले वे सरीसृप ही, जो दूसरे मार्ग पर चल चुके थे बचे रह गए उनमे से कुछ ऐसे थे, जिनके चिडिया जेस पर उगने लगे थे, जिनसे वे अपन आपको सर्दी स बचा सकत थ यही जीव आगे चलकर वर्तमान पक्षियो के पूर्वज बने

सबसे पहला पक्षी, जिसे हम जानते हैं 'आरक्रियाप्टरिक्स' ह, जिसका विकास सरीसृप से हुआ इसका आकार कबूतर के बराबर था पंद्रह करोड साल पहल पाया जान वाला यह पक्षी वर्तमान पक्षियो से काफी भिन्न था यद्यपि इसके पख पक्षिया जेस ही थे, परन्तु इसक मुह म दात भी थे आर पखो पर पजे भी इसकी पूछ मे कवल पर ही नही, बल्कि हड्डिया भी थी

यह वर्तमान पक्षिया की भाँति तेजी से उड नही सकता था इसका कारण यह था कि यह 'टेराडेक्टाइल' की तरह अपने पखा का प्रयोग हवा म ग्लाइड करने क लिए ही करता था

आकाश पर शासन करने वाले सरीसृप



पथ्वी क प्राचीन इतिहास से पता चलता ह कि माध्यमिक काल म सरीसपा न 15 करोड वष तक सपूण पथ्वी पर राज्य किया उस समय पृथ्वी पर मानव जाति आर आज पाए जाने वाल जतुओ का कही नाम तक न था इन दिनो आकाश मे भी बडे-बडे विचित्र जीव मडराया करते थे परतु उन्ह पक्षी नही कहा जा सकता हुआ यह था कि कइ प्रकार क सरीसपो ने ही अपन का आकाश मे उडने याग्य बना लिया था उनक शरीर की खाल दोना आर अगली आर पिछली भुजाआ के बीच फल जाती थी उन भुजाआ की एक-एक उगली शरीर स ज्यादा लबी थी, जो इस खाल को छाते की भाँति फला देती थी इसी फली हुइ खाल क द्वारा व आकाश मे उड सकत थे उनकी हड्डिया खाखली होती थी आर उनक सीने की हड्डिया पक्षियो जसी ही थी इन सरीसपा म चमगादड की तरह झिल्लीदार बाजू होते थे

वेज्ञानिक इन उडन वाले सरीसृपा का 'टेरोडेक्टाइल' कहते हैं उनमे से कुछ तो हाथी के बराबर डीलडाल वाले प्राणी थे। अब तक ज्ञात दुनिया के विलुप्त, जीवा मे टेरोसोर (pterosaur) ऐसा सबसे बडा जीव था, जा उड सकता था आज से लगभग 6 5 करोड वष पूर्व इसके स रा अमरिका के टेक्सास राज्य के एक स्थान पर उडने के प्रमाण मिले हैं सन् 1971 म इस जीव के कुछ अवशेष खोजे गए थे उनके आधार पर कहा जा सकता ह कि इस जीव के पखो का फेलाव 11-12 मीटर (36-39) और वजन 86 किग्रा रहा हागा

सबसे पहला पक्षी   आरकियोप्टैरिक्स (Archaeopteryx)



जव पथ्वी पर अतिम हिमयुग छान लगा, तव वडे-वड डाइनामार टरोडक्टाइल ओर प्लायासौरस आदि, जा धरती, वायु ओर जल पर लाखा वर्प स शासन कर रह थ, अचानक पथ्वी से लुप्त हा गए किसी प्रकार छाट डीलडाल वाल व सरीमप ही, जो दूसरे मार्ग पर चल चुके थ, वच रह गए उनम स कुछ ऐसे थ, जिनक चिडिया जस पर उगन लग थे, जिनस व अपन आपका सर्दी म वचा सकत थ यही जीव आग चलकर वर्तमान पक्षिया क पूवज वन

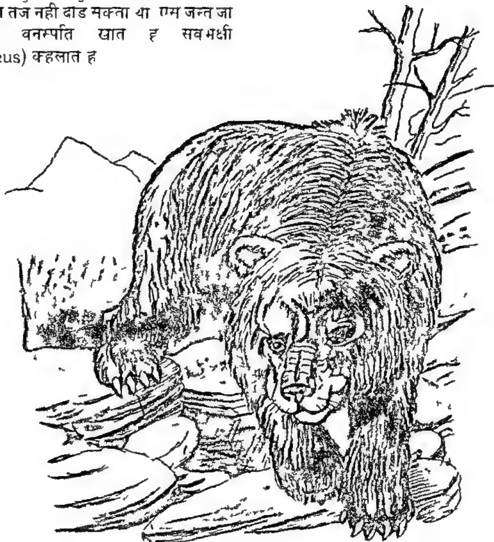
सवस पहला पक्षी , जिस हम जानत हें 'आरक्रियाप्टरिक्स' ह, जिमका विकास सरीसप स हुआ इसका आकार कबूतर क वरावर था पद्रह करोड साल पहल पाया जान वाला यह पक्षी वतमान पक्षिया स काफी भिन्न था यद्यपि इसक पख पक्षिया जम ही थे, परतु इमक मुह म दात भी थ आर पखा पर पज भी इसकी पूछ म क्वल पर ही नही, वल्कि हड्डिया भी थी

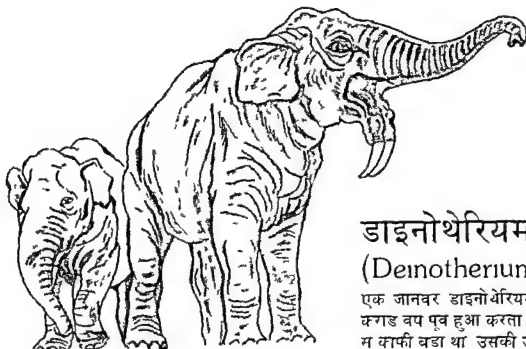
यह वर्तमान पक्षिया की भांति तेजी स उड नही मक्ता था इसका कारण यह था कि यह 'टराडक्टाइल की तरह अपन पखा का प्रयाग हवा म ग्लाइड करन क लिए ही करता था

गुहा रीछ (Cave Bear)

गहा रीछ पाषाण-युग क मानव के समय ही आज मे 70 000 वष पूर्व पाया जाता था यह आधुनिक ब्राउन रीछ (brown bear) से बडा था नाक स पूछ तक इसकी लम्बाइ 3 मीटर थी

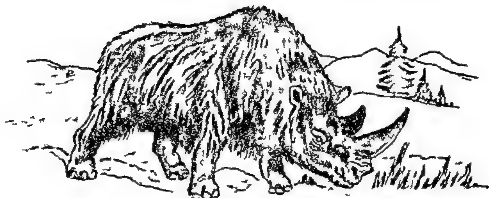
गहा रीछ मास आर वनस्पति खाता था यह शक्तिशाली जन्तु था परतु अपन शिकार को पकडन के लिए ज्यादा तज नही दौड सकता था एम जन्त जा मास आर वनस्पति खात ह सवभक्षी (omnivoreus) कहलात ह





डाइनोथेरियम
(Deinotherium)

एक जानवर डाइनोथेरियम आज से लगभग डेढ करोड वर्ष पूर्व हुआ करता था, जो आधुनिक हाथियों से काफी बडा था उसकी ऊचाई लगभग 5 मीटर थी यह कोई नहीं जानता कि उसके विचित्र गजदन्त (tusks) उसकी छाती की ओर क्यो घूमे हुए थे



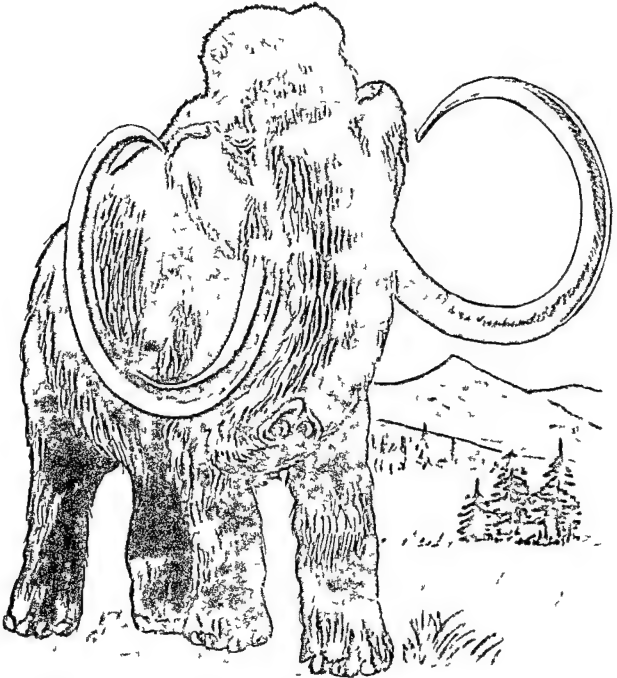
ऊनी गैंडे (Woolly rhinos)

ऊनी गैंडे लगभग 20 000 वर्ष पूर्व पाये जाते थे वे वनस्पति खाते थे उनके दो लम्बे सीग (horns) होते थे, जो भेडिये और अन्य मासाहारी जन्तुओ (carnivores) से उनकी रक्षा करते थे

उनके घने ऊनी बाल होते थे, जो उन्हें सर्दी से बचाते थे उनके पैर हलवा थे, इसलिए वे नम बर्फीली जमीन पर सरलतापूर्वक चल सकते थे

आदि मानव मास और खाल के लिए इनका शिकार किया करता था

ऊनी-मैमथ
(Wooly Mammoths)



आज से बहुत पहले लगभग दस और बीस लाख वर्ष के दौरान एक ऐसा परिवर्तन आया था, जब पृथ्वी पर महाहिमयुग शुरू हुआ था हिमयुग का आरम्भ इस प्रकार हुआ कि उत्तर में भयानक ठंड पड़ने लगी जाड़े में इतना हिमपात होता था कि गर्मी में सारा हिम पिघल नहीं पाता था धीरे धीरे हिम की तह मोटी होती गई यह स्थिति हजारों वर्ष रही ये महाहिमयुग हिमनदीय (glacials) तथा इनके बीच का काल अन्तर्हिमानी (interglacials) कहलाता है हिमनदीय के दौरान जो जानवर ठंड सहन नहीं कर पाए दक्षिण में कुछ गर्म स्थानों की ओर भाग आए अन्य जानवर जैसे ममथ और लम्बे बालों वाले गैंडे ऐसे जीव थे जो कड़ी ठंडक सहन कर सकते थे उन्होंने स्वयं को उस वातावरण में रहने योग्य बना लिया था

वैज्ञानिक ऐसे अनेक जन्तुओं को जानते हैं जो हिमयुगों (Ice ages) में पाये जाते थे उनमें ऊनी ममथ विशेषतया उल्लेखनीय हैं ऊनी ममथ लगभग हाथी के आकार के थे परंतु उन पर गहरे ब्राउन रंग के लम्बे ऊनी बाल थे उनके कान छोटे-छोटे थे ऊनी ममथ हाथी ही की किस्म का एक जानवर था उसकी ऊंचाई लगभग 4½ मीटर थी त्वचा के नीचे मोटी वसा (fat) की तह होती थी जो उसे गर्म रखती थी इसके उद्दन्त (tusks) लम्बे और मुड़े हुए थे जिनकी लम्बाई 3 मीटर से भी अधिक थी इनसे यह शायद बर्फ में टक पड़े पा... और रास्ता साफ करते थे

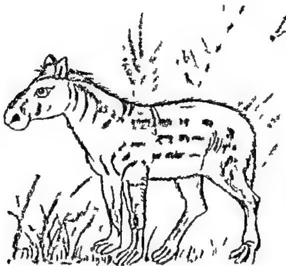
आदिम मनुष्य मांस खाने के लिए इनका शिकार करते थे हजारों वर्ष तक बर्फ में पड़े रहकर जमे हुए ममथ प्राप्त हुए हैं लगभग 25 बर्फ में जमे हुए ममथ साइबेरिया में पाये गये हैं जहां अब भी बहुत सर्दी होती है कुछ ममथों का मांस स्लेजगाड़ी खींचने वाले कुत्तों को खिलाने की कोशिश की गई परन्तु जमे ही जमे हुए मांस को खोदकर बाहर निकाला गया तुरन्त गल गया इन जमे हुए ममथों से इनकी आन्तरिक रचना, मांस, खाल, बाल और उद्दन्तों का ज्ञान होता है इनके आमाशय में चीड़ के पौधे और घास पाई गई है मरने से पूर्व ममथ क्या खा रहा था वह भी उसके दन्तों के बीच में वैसा का वैसा ही पाया गया

ममथों के विलुप्त होने का रहस्य कोई नहीं जानता हो सकता है कि इनके आहार आधारित पौधे जिनको ये खाते थे भीषण ऋतु-परिवर्तन के कारण बिल्कुल नष्ट हो गए होंगे कुछ लोगों का विचार है कि उस समय भूखंडों और समुद्रों में बहुत से परिवर्तन हो रहे थे उससे सम्भव है कि ये भारी जन्तु भागते समय अचानक बन गई दलदलों में गिरकर मर गये हों क्योंकि कुछ ममथ उसी प्रकार गड़े हुए मिले हैं जैसे कि वे गिर जाने से ही मरे हों

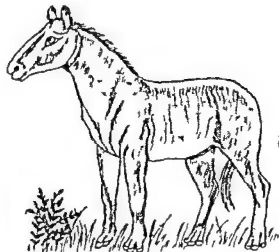
घोड़े का क्रमिक विकास

जीवाश्म (fossils) द्वारा ज्ञात हुआ है कि घोड़े के पूर्वज 5 करोड़ वर्ष पूर्व जंगलों में रहते थे, जो हाइराकोथीरियम (hyracotherium) कहलाते थे। इनका आकार लोमड़ी की भांति 30 सेमी था। इनकी अगली टांगों में चार-चार तथा पिछली टांगों में तीन-तीन उंगलियां थीं। हाइराकोथीरियम के जीवाश्म इओसीन (eocene) काल की चट्टानों में मिले हैं।

3 करोड़ 50 लाख वर्ष पूर्व जो घोड़े पाए जाते थे, वे हाइराकोथीरियम की अपेक्षा बड़े थे। इनका कद भेड़ के बराबर था। ये मिजोहिप्पस (mesohippus) कहलाते हैं। इनकी अगली तथा पिछली टांगों में




हाइराकोथीरियम



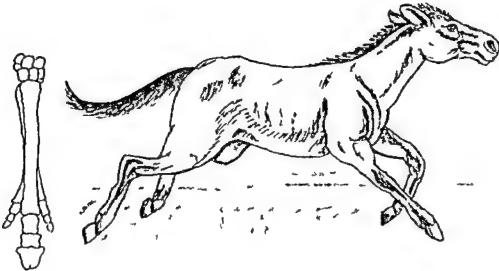

मिजोहिप्पस

तीन-तीन उगलिया थी परतु बीच की उगली अन्य उगलिया स मोटी आर कुछ बडी थी इनक जीवाश्म आलाइगोसीन (oligocene) काल की चटटाना म प्राप्त हए

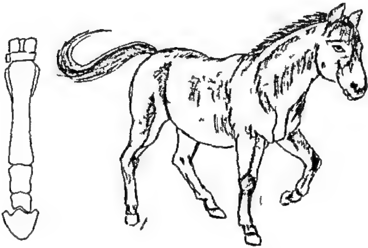
लगभग एक कराड वग पव घाडा की ऊचाइ लगभग एक मीटर थी यानी आजकल क गध क समान य मेरीक्पिस (merychippus) कहलात हैं इनकी अगली आर पिछली टागा म तीन-तीन उगलिया ही थी परत बीच की उगली मिजाहिप्पस म माटी तथा अगल-बगल की उगलिया काफी छाटी थी इनक जीवाश्म मिआसीन (miocene) काल की चट्टाना म प्राप्त हा हैं

आजकल क समान घाड लगभग 30 लाख वष पव पाए जात थ इनका वज्ञानिक नाम इक्वस (equus) ह यह आकार म सबस बडा था टाग आर उक लम्बी उगलिया अधिक मजबत माटी एव चाड आकार म परिवर्तित हा गइ थी इक्वस अपन सख्त समा (hard hoofs) क द्वारा तज दाड सकता था इसका विकास प्लिस्टासीन (pleistocene) काल म हआ

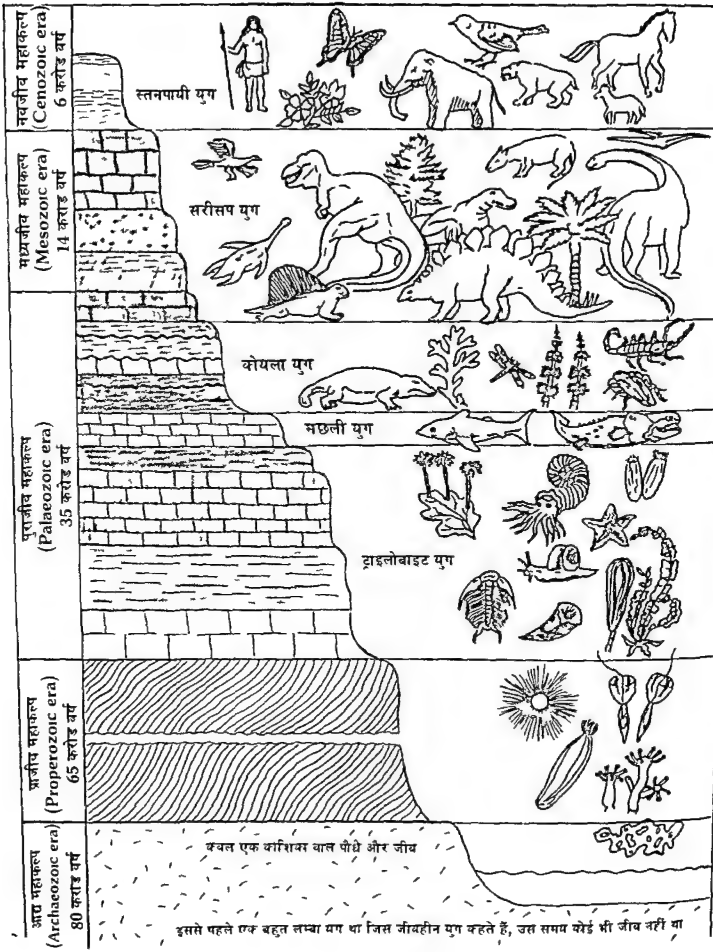
इस प्रकार धीर-धीर क्रमिक गति म अनकल परिवतन क परिणाम स्वरूप लम्ब समय क पश्चात आधनिक घाड का विकास हआ



मेरीक्पिस



इक्वस



नवजीव महाकल्प (Cenozoic era) 6 करोड़ वर्ष
स्तनपायी युग
मध्यजीव महाकल्प (Mesozoic era) 14 करोड़ वर्ष
सरीसृप युग
कोयला युग
मछली युग
पुराजीव महाकल्प (Palaeozoic era) 35 करोड़ वर्ष
ट्राइलोबाइट युग
प्राजीव महाकल्प (Properozoic era) 65 करोड़ वर्ष
आद्य महाकल्प (Archaeozoic era) 80 करोड़ वर्ष
केवल एक कोशिका वाले पौधे और जीव
इससे पहले एक बहुत लम्बा युग था जिसे जीवहीन युग कहते हैं, उस समय कोई भी जीव नहीं था

पुस्तकें कैसे मंगायें

पस्तक वी पी पी पैकेट द्वारा या पुस्तका की पूरी कीमत (डाकखर्च सहित) पेशगी भेजकर रजिस्ट्री पैकेट द्वारा मगाई जा सकती हैं।

1 3 83 से नई डाकदरा के लाग हो जाने से डाकखर्च पस्तकों की कीमत का लगभग 25% से 40% तक हो गया है।

17/ रु से 25/- रु तक की कीमत की पुस्तकों पर यह डाकखर्च असहनीय है जाकि 7/50 रु कम से कम आता है।

1 मार्च 1983 से बढ़े हुए डाकखर्च का असर

	औसत वजन	रजिस्ट्री चार्ज	वी पी चार्ज	वजन 2/ किलो	कम
डाकखर्च मिलाकर 10 तक की कीमत के पैकेट पर	(100 ग्राम)	0-65	1-00	0 60	2 25
डाकखर्च मिलाकर 20 तक की कीमत के पैकेट पर	(600 ग्राम)	0-65	2-00	1 20	3-85
डाकखर्च मिलाकर 20/ से ऊपर कीमत के पैकेट पर	(750 ग्राम)	2 75	3-00	1 50	7 25

नोट इसके अतिरिक्त दस नये पैसे का वी पी मनीआर्डर फार्म तथा पैकिंग व अन्य खर्च जोकि लगभग 1/50 प्रति पैकेट आता है प्रकाशक वहन करता है।

उपर्युक्त डाकदरों के अनुसार पस्तकों को वी पी द्वारा मगाने पर निम्न डाकव्यय होगा

7/75 तक की पुस्तक पर डाकखर्च 2/25—25% To 30%
7/75 से 16/15 तक की पुस्तकों पर 3/85—25% To 55%
16/25 से ऊपर की पुस्तकों पर 7/25—25% To 40%

(पुस्तक व्यवसाय में 20/ से ऊपर का औसतन वी पी पैकेट की रकम 20/ से 30/ के बीच रहती है)

अब चूंकि पूरा डाकखर्च न तो पाठक ही वहन कर सकता है और न ही प्रकाशक—इसलिए हमने डाकखर्च की जो रकम इस सूचीपत्र में दी है वह औसतन आधी है—अर्थात् आधा डाकखर्च हम वहन कर रहे हैं।

आर्डर देकर वी पी पी न छुड़ाने पर सारा डाकव्यय का भार प्रकाशक पर आ पड़ता है जो कि लिखे डाकखर्च से औसतन दुगना होता है।

उपयुक्त बातों को ध्यान में रखते हुए अब अधिकतर हमने एडवांस रकम मांगनी शुरू कर दी है। वी पी पी द्वारा केवल वही आर्डर भेजे जाते हैं, जो हम समझते हैं छूट जायेंगे—और अन्य दूसरे आर्डरों को भेजने से पहले एडवांस मंगाने के लिए उन्हें पत्र लिख दिया जाता है।

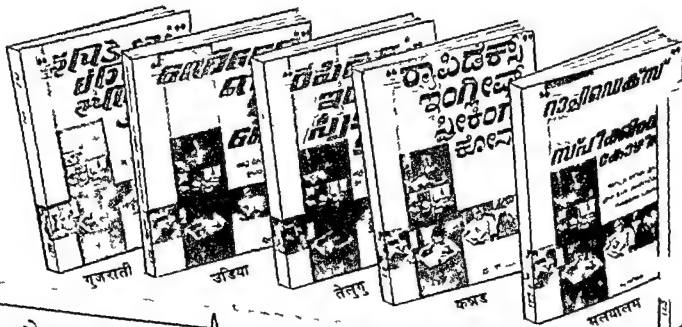
आपके आर्डर के प्रत्युत्तर में यदि आपसे एडवांस मांगा गया है तो उसे फौरन साथ भेजे गये मनीआर्डर फार्म में भरकर भेज देवें जिससे पुस्तकें जल्द से जल्द भेजी जा सकें।

पुस्तक जल्द मंगाने के लिए मनीआर्डर द्वारा एडवांस रकम भेजकर रजिस्ट्री पैकेट से मंगाइये

वी पी पी द्वारा पुस्तकें मंगाने के लिए 25% रकम एडवांस भेजें।

हमारी प्रकाशित पुस्तकें लगभग सभी प्रतिष्ठित पुस्तक विक्रेताओं एवं ए एच व्हीलर के रेलवे बुक स्टालों पर उपलब्ध हैं—डाक व्यय बचाने के लिए आप अपने निकट के बुकस्टाल से मांग करें अन्यथा वहां मिलेगी यह उनसे पूछकर वहां से खरीद लें।

80,00,000 अस्सी लाख से ... और



श्रेष्ठता का सबूत

रैपिडैक्स कोर्स' भारत भर के प्रसिद्ध समाचार पत्रों की राय में

इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें चुने हुए दैनिक उपयोग में आने वाले शब्दों की उपयोगी सूची अर्थ सहित दी गई है।

प्रत्येक पाठ के अन्त में भाषा व व्याकरण सम्बन्धी कुछ आधारभूत बातें अलग से समझाने का प्रयास भी निस्सन्देह प्रशंसनीय है। —युगान्तर, कलकत्ता

अंग्रेजी भाषा को ...
लिखना जरूरी है उतने ही ...
सही उच्चारण तथा सही बोल...
पुस्तक के क्रमवार अभ्यासों ...

रैपिडैक्स कोर्स ही एकमात्र ऐसा विस्तृत कोर्स है जो हर किसी को 60 दिन में अंग्रेजी बोलना व लिखना बिना किसी शिक्षक या स्कूल में गये सिखाने में सक्षम है। —नागपुर टाइम्स, नागपुर

इसमें अंग्रेजी सिखाने की अभ्यास सामग्री इतने बढ़िया ढंग से दी गई है कि कान्वेंट स्कूलों में भी यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो सकती है। —दिनामनी, मद्रास

बहुत ...
पढ़ते पढ़ते ही अंग्रेजी ...
और इस कसौटी पर ...
उतरी।

वास्तव में यह एक बहुत ही उपयोगी कोर्स है। इसमें तमिल जानने वाले बगैर किसी परेशानी के ग्रेजुएट जैसी अंग्रेजी बोल सकते हैं। —सण्डे स्टैण्डर्ड, मद्रास

1980 के चुने हुए टॉप हेयर स्टायल्स

घर बैठे चित्रो द्वारा केश-सज्जा सिखाने वाली पहली पुस्तक



मॉडर्न हेयर स्टायल्स

लेखिका आशारानी व्होरा

- बाल सैट करवाने के लिए किसी ब्यूटी क्लिनिक या सैलन मे जाने की आवश्यकता नही—अब इस पुस्तक की मदद से घर मे बनाइये।
- अपने बालो को मनचाहा मोड दीजिए और नये २ फैशन के हेयर स्टायल बनाइए।
- चेहरे और व्यक्तित्व के अनुरूप स्टायल चुनिए।
- बॉय कट, बॉब कट राउण्ड कट स्टेट कट, फीजर कट, स्टैप्स पोनी टेल, रिंग लेट्स, शोल्डर कट, शैग स्टायल या स्विच सज्जा—सभी के कई-कई स्टायल।



- नन्ही गुडिया, छोटी लडकी किशोरी नवयुवती, कॉलिजिएट, कामकाजी युवती, गृहिणी या शादी ब्याह व त्यौहार आदि अवसरो पर—आप सभी के लिए कई-कई नमूने।
- दसियो प्रकार के जूडे, चोटिया एव रोल स्टायल।
- बाला की सुरक्षा उनके झडने, टूटने या असमय सफेद होने से रोकने के उपाय आदि।
- आभूषणो व फूलो का केश सज्जा मे चित्रण।

बडे साइज के 84 पष्ठ मूल्य 15/- ● डाकखर्च 3/
सैकडो रेखा व छाया चित्र

सौदर्य का रहस्य है पतली कमर ·

मोटापा आपकी 'फिगर' को बिगाड देता है
आप मे हीन भावना भर देता है
यौवन व स्वास्थ्य के लिए घातक है
वैवाहिक सम्बन्ध मे अडचन है
अपने आप मे भयकर महारोग है
बुढ़ापे का बुलावा है

वैज्ञानिक अनुसंधान से यह निष्कर्ष निकला है —
—यदि आपकी कमर का माप वक्ष के माप से 15% अधिक है तो समझिये—आपका जीवन 25% कम हो जाता है।



डिमाई साइज के 116 पृष्ठ
सैकड़ों रेखा व छाया चित्र
मूल्य 15/- ● डाकखर्च 3/-

केवल 15 मिनट रोज का कोर्स

केवल 15 मिनट रोज का कोर्स—इस पुस्तक की मदद से आप अपनी कमर और पेट पर चढ़ी फालतू चरबी शीघ्र ही घटा सकती है और अपनी कमर का माप पाच दिन मे सात आठ सेंटीमीटर तक कम कर सकती हैं। इसके लिए हम न कोई 'बेल्ट (पेटी) बताते हैं न कोई दवा। प्रसव काल क बाद चढ़ा हुआ पेट भी पिचक सक्ता है। सैकड़ों रुपयों के स्लीमिंग कोर्स व यन्त्र भी जो काम नही कर सकते वह इगलैंड, अमरीका जापान में आजमाये सफल कोर्स के रूप में पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। भारत में पहली बार प्रकाशित आश्चर्य जनक अनुसधान—छ सप्ताह का विशेष कोर्स—जो आपकी उन आदतों को बदलेगा जिनसे मोटापा बढ़ता है। अपने आपको सौन्दर्य शिक्षिका मानकर अपने लिए स्वयं नियम निर्धारित करें।

गारंटी

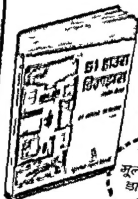
यदि एक सप्ताह में फर्क नज़र न आए तो पुस्तक वापसी की गारंटी —

कम खर्च में घर बनाए व घर सजाए

यदि आप नया मकान बनवाने जा रहे है या पुराने का ही नया निखार देना चाहते है तो इन पुस्तकों पर २०/- खर्च करके हजारों रुपये की बचत कर सकते है

लेखक **अशोक गोयल** (B Arch)

विभिन्न पत्र पत्रिकाओं के जाने माने लेखक एव मान्यता प्राप्त आर्किटेक्ट



51 हाउस डिज़ाइन्स

सम्पूर्ण दोनो भाग 10/-

प्रत्येक का मूल्य 30 डाकखर्च 4 00

नया मकान बनाने वालो के लिये शुभ सूचना

70 से 225 वर्ग मीटर तक के छोटे बड़े विभिन्न साइजों के प्लाटों के लिये आकर्षक एव अनूठे नक्शे

प्रथम भाग	70 से 135 वग मीटर
द्वितीय भाग	150 से 225 वग मीटर

हर नक्शे के साथ डिजाइन सम्बधी पूर्ण विवरण

प्रत्येक नक्शा निम्न बातो को ध्यान में रखकर बनाया गया है

- जगह का अधिक से अधिक सदुपयोग हो
- सभी कमरे हवादार हों और उनमें अधिकतम कुदरती रोशनी प्राप्त हो
- ड्राइग डाइनिंग बेड व बाथरूम एवं रसोईघर का उपयोगिता की दृष्टि से सही तालमेल हो
- खिड़की दरवाज़ों व अलमारियों की सही स्थिति क्या हो ताकि कमरों में स्थान नष्ट न हो
- नक्शा बिल्डिंग व बाई-लॉज(Bye Laws) के अनुसार हो लेकिन बनने के बाद कुछ रद्दो बदल करके उसे अधिक उपयोगी बनाया जा सके
- ओपन एरिया मे Projection आदि देकर वहा २ पर अलमारिया दी जा सकती हैं या कवर्ड एरिया बढ़ाया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त

गृह सज्जा मरम्मत योजनाएं, जमीन जायदाद की खरीद-फरोख्त, बिल्डिंग बाई-लाज दिये गये नक्शों में क्या २ फेर बदल करके अन्यान्य सैकड़ों नक्शे सोचे जा सकते हैं



होम डेकोरेशन गाइड

मूल्य 20/-

डाकखर्च 4/-

डबल क्राउन साइज पृष्ठ संख्या 152



> इस किताब की मदद से छोटी छोटी जगहों का भी अच्छी तरह सजा कर दर्शनीय बनाया जा सकता है। —नवभारत टाइम्स

> इस पुस्तक मे गृह सज्जा सबधी प्राय सभी विषयो को विस्तारपूर्वक और चित्रो सहित समझाया गया है। —धर्मयुग

> विभिन्न विषयो को विस्तार से सचित्र समझाने का प्रयास किया है। —सूर्या इण्डिया

> A praise worthy effort by Ashok Goyal —Patriot

> The book should be very useful to layman to under tand the impor tance of interiors in the house —Architect's Trade Journal

> इसमे घर के सभी हिस्सो के बारे मे जानकारी दी गई है और बहुत हद तक व्यावहारिक है। —गृह शोभा

> लेखक चूंकि स्वय वास्तुकार है अत उन्होने अपने विषय को तकनीकी दक्षता से प्रस्तुत किया है। —राष्ट्रदूत

> आर्किटेक्ट व इंटीरियर डिजाइनर अशोक गोयल की पुस्तक सही मार्गदर्शन करती है। —नई दुनिया

> पुस्तक न केवल उपयोगी व जानकारीपूर्ण है बल्कि लेखक की प्रस्तुतीकरण की शैली काफी प्रभावशाली है। —निक

> हम समझते हैं नया मकान बनवाने वालो या बनवाने की इच्छा रखने वालो को एक बार यह पुस्तक अवश्य पढ लेनी चाहिए। —दैनिक हिन्दुस्तान

> पुस्तक महल दिल्ली से प्रकाशित श्री अशोक गोयल द्वारा लिखित पुस्तक 'होम डेकोरेशन गाइड (गृहसज्जा) पर' एक उपयोगी पुस्तक है। —मनोरमा

> भारतीय घरो को ध्यान मे रखते हुए पुस्तक के रूप में सारी बातो को बड़े तरतीब से बताने का यह पहला प्रयास है। —लिटरेज

> A very welcome and timely book —The Indian Architect



पुस्तक महल खारी बावली दिल्ली 110006